कलंदर शऊर

ख्वाजा शम्सुद्दीन अजीमी

कलंदर शऊर

ख्वाजा शम्सुद्दीन अजीमी

www.ksars.org

कलंदर शऊर

अच्छी है बुरी है, दुनिया (dahr) से शिकायत मत कर।
जो कुछ गुज़र गया, उसे याद मत कर।
तुझे दो-चार सांसों (nafas) की उम्र मिली है,
इन दो-चार सांसों (nafas) की उम्र को व्यर्थ मत कर।

(क़लंदर बाबा औलिया)

www.ksars.org

सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम 9
ज्ञान की मशाल 10
कुलंदर का स्थान 10
शरीर और आत्मा 10
रचनात्मक संरचनाएँ 13
यौन आकर्षण का नियम 14
प्रकट और आंतरिक 15
प्रजातिगत समानता 17
भूमिगत जीव 17
शक्तिशाली इंद्रियाँ 17
खोजी कुत्ते: 18
अंडों का वितरण: 18
बिजली की खोज से पहले 18
वर्षा की ध्वनि: 19
द्वेषी लोमड़ी 19
केले के बगीचे 19
एक तकनीकी विधि 19

www.ksars.org

शेर की श्रद्धा :..... 21

अना की लहरें (Waves of self Ego): 22

मौन संवाद: 22

एक अवचेतन: 22

आदर्श समाज 23

शहद का निर्माण: 24

समझ और बुद्धिमत्ता 24

फरमान 25

शहद से भरी चींटियाँ: 26

बागबान चींटियाँ: 26

मजदूर चींटियाँ: 28

इंजीनियर चींटियाँ: 28

दरज़ी चींटियाँ: 28

विज्ञानज्ञ चींटियाँ: 28

समय-स्थान से स्वतंत्र चींटियाँ: 28

दूत पक्षी 29

लहरों पर यात्रा: 30

आविष्कार का नियम 33

www.ksars.org

परमेश्वर की परंपरा: 33

अकालिकता Timelessness: 34

जैविक और प्राकृतिक माँगें 34

अस्तग़ना..... 36

ब्रह्मांडीय चलचित्र 36

क्षमता और भाग्य..... 37

सात चोर:..... 38

टोकरी में हलवा:..... 38

पाठ की प्रलेख:..... 39

राष्ट्रीय और व्यक्तिगत जीवन:..... 40

नबियों की विचारधारा:..... 41

कार्य और इरादा: 43

ज़मीन के अंदर बीज की वृद्धि: 44

परमेश्वर की उप-रचनाएँ: 44

सही परिभाषा: 45

ब्रह्मांड की सदस्यता: 45

स्वर्ग और नर्क: 46

विश्वास और भरोसा: 46

www.ksars.org

क़लंदर चेतना विद्यालय : 48
सोना खाओ : 48
ऑटोमेटिक मशीन : 48
मनुष्य, समय और खिलौना: 49
आकाश से नोट गिरा: 52
साठ रुपये: 52
गाँव में मुर्ग़ पलाऊ: 53
मछली मिल जाएगी? 53
पक्षियों का आहार 54
पेड़ और घास 54
मज़दूर समुदाय 55
आदम और हव्वा की सृजन 57
लहरों का प्रणाली: 57
रंगों की दुनिया: 58
दिव्य रोशनी के छह दीपक 60
दुनिया का त्याग: 60
समय और स्थान: 61
स्वप्न और ध्यान (मुराक्बा) 62

www.ksars.org

मुराक्बा की श्रेणियाँ: 62

जीवन एक सूचना है:..... 63

मुराक़बा की चार श्रेणियाँ: 65

पैदा होने से पहले की जीवन अवस्था: 65

गुप्तित खजाना: 66

लोह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका)..... 67

परमेश्वर का दिव्य प्रकट(तजली):..... 67

ब्रह्मांड पर शासन 68

प्रकाश की चार नदियाँ:..... 68

नियाबाद(प्रतिनिधित्व) और ख़िलाफ़त (खिलाफत) 70

आदम और स्वर्गदूत..... 71

दूरबीन दृष्टि:..... 71

रूहानी बगदादी शासन 75

आत्मा और कंप्यूटर 76

विज्ञान और चमत्कारिक घटनाएँ 78

कानून(नियम):..... 79

समाज और विश्वास 80

मस्तिष्क कोशिकाओं का टूटना-फूटना:..... 81

धर्म: 82

www.ksars.org

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: 83

रचनात्मक सूत्र 86

रंगों की संख्या ग्यारह हजार है:..... 87

मानव के भीतर विद्युत प्रवाह:..... 87

समय का अभाव:..... 88

ऑक्सीजन और शारीरिक तंत्र: 90

दो सौ वर्षों की निद्रा 91

ऊर्जा और आत्मा :..... 93

जीवन में श्वास का प्रभाव 95

विकास से तैयार किए हुए खाने..... 96

विकास के गोदाम 96

रंगीन किरणों..... 96

किरणों में वलय: 97

इलेक्ट्रिक करंट कैमरा:..... 98

तंत्रिका तंत्र 98

मुराक्बा: 99

मुराक्बा: 99

www.ksars.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

परमेश्वर ने अपने ज़ेहन में स्थित ब्रह्मांडीय प्रोग्राम को रूप और आकार के साथ अस्तित्व में लाने की इच्छा की, तो उसने "कुन हो जा" (हो जा) कहा। इस प्रकार, परमेश्वर के ज़ेहन में ब्रह्मांडीय प्रोग्राम एक विशेष व्यवस्था और संरचना के साथ अस्तित्व में आया...

• एक स्पष्ट किताब (किताबुल मबीन)

• एक स्पष्ट किताब (किताबुल मबीन) में तीस करोड़ सुरक्षित पट्टिका (लौह महफूज़)

• एक सुरक्षित पट्टिका (लौह महफूज़) में अस्सी हज़ार आकाशगंगाएँ

• प्रत्येक आकाशगंगा में एक खरब से अधिक स्थायी व्यवस्था और बारह खरब अस्थायी व्यवस्था

• एक व्यवस्था सौर्यमंडल का विस्तार होता है। प्रत्येक सौर्यमंडल के चारों ओर नौ (9), बारह (12), या तेरह (13) ग्रह परिक्रमा करते हैं।

यह केवल अनुमान है कि मानव जाति की आबादी केवल पृथ्वी (हमारे सौरमंडल) में मौजूद है। वास्तव में, मनुष्य और जिन्नात की बस्तियाँ प्रत्येक आकाशगंगा में विद्यमान हैं। प्रत्येक बस्ती में जीवन के सभी रूप वही हैं जो पृथ्वी पर पाए जाते हैं—भूख, प्यास, स्वप्न, जागरण, प्रेम, क्रोध, शारीरिक सम्बन्ध, प्रजनन, इत्यादि। जीवन के सभी आवेग, प्रत्येक ग्रह पर व्याप्त हैं।

एक आकाशगंगा पर एक खरब से अधिक स्थायी व्यवस्था स्थित हैं। एक स्थायी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अस्थायी व्यवस्थाओं को गोदाम के रूप में रखा जाता है। अस्थायी व्यवस्था का तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण व्यवस्था लगातार बनते और टूटते रहते हैं, और इस टूट-फूट से स्थायी व्यवस्था पोषित (FEED) होते रहते हैं। प्रत्येक व्यवस्था में अलग-अलग आकाश, पृथ्वी, पर्वत, प्राणी, खनिज, वनस्पति आदि उसी तरह मौजूद होते हैं जैसे हम अपनी व्यवस्था में देखते हैं।

परमेश्वर ने जब मनुष्य और जिन्नात को अपनी प्रेमभावना से उत्पन्न किया, तो उनके रहने के लिए स्वीकार्य स्थान के रूप में स्वर्ग को अपनी प्रिय जगह घोषित किया। और कहा, "ऐ आदम, तुम अपनी पत्नी के साथ स्वर्ग में रहो और जहाँ चाहो, वहां से स्वर्ग की कृपापात्र से अपनी भूख शांत करो, अपनी प्यास बुझाओ, और इस वृक्ष के पास न जाना, अन्यथा तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे।

सत्यमार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देने और नरक से बचने के उद्देश्य से, अब तक एक लाख चौबीस हजार रसूल इस पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं। और उनके उपदेशों को फैलाने के लिए उनके शिष्य और वारिस समय-समय पर आते रहे हैं और आगे भी आते रहेंगे। ये सभी महान हस्तियाँ, अवतार और परमेश्वर के मित्र, अपने-अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में, अपनी भाषाओं के अनुरूप एकेश्वरवाद का प्रचार करते रहे हैं कि परमेश्वर एक है, यथार्थ में निराकार है, न वह किसी का पिता है और न ही उसका कोई पुत्र

www.ksars.org

है, और न उसका कोई परिवार है। इसी एकता और परमेश्वर की यथार्थता पर प्रत्येक धर्म ने अपने विचारों की घोषणा की है। पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसने परमेश्वर के अस्तित्व को नकारा हो। परमेश्वर के मित्रों ने अद्वितीयता, सम्पूर्णता, सत्यता और एकता को समझाने के लिए विविध मार्ग और उपाय प्रस्तुत किए हैं।

ज्ञान की मशाल

प्रकृति अपने संदेश को पहुँचाने के लिए दिया से दिया जलाती रहती है। ज्ञान की मशाल एक हाथ से दूसरे हाथ में स्थानांतरित होती रहती है। सूफ़ी, वाली, गौस, क़ुतुब, मजीज़ूब, अवतार, क़लंदर, और अब्दाल, ये प्रकृति के वे हाथ हैं जिनमें ज्ञान की मशाल जल रही है। ये शुद्ध आत्माएँ इस ज्ञान से अपनी स्वयं की आत्मा को भी प्रकाशित करती हैं और दूसरों को भी ज्ञान का आभास कराती हैं। केवल इतिहास के पन्नों पर ही नहीं, लोगों के हृदयों पर भी इन महान हस्तियों की कहानियाँ और आँखों देखी घटनाएँ जीवित और संरक्षित हैं। उनके आशीर्वाद से मृतकों को जीवन, रोगियों को चिकित्सा, भूखों को भोजन, निर्धनों को संपत्ति, अभावग्रस्त लोगों को अधिकार, असहाय और असमर्थ लोगों को संतान और संपत्ति के उपहार मिलते रहते हैं।

कुलंदर का स्थान

जो भक्त कुलंदर होते हैं, वे समय और स्थान की सीमा से मुक्त हो जाते हैं और समस्त जीव-जंतु उनके अधीन हो जाते हैं। ब्रह्मांड का हर कण उनके नियंत्रण में होता है। लेकिन परमेश्वर के ये पवित्र भक्त स्वार्थ, लालच, और इच्छाओं से परे होते हैं। जब प्राणी उनकी सेवा में कोई निवेदन प्रस्तुत करते हैं, तो वे उसे सुनते भी हैं और उसका समाधान भी करते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें यही कार्य सौंपा है। यही वे पवित्र भक्त हैं, जिनके बारे में परमेश्वर कहता है:

"मैं अपने भक्तों से मित्रता करता हूँ और उनके कान, आंख और जीभ बन जाता हूँ। फिर वे मेरी ओर से बोलते हैं, मेरी ओर से सुनते हैं और मेरी ओर से चीज़ों को पकड़ते हैं।"

इन अनादि संत भक्तों की शिक्षाएँ यह हैं कि प्रत्येक भक्त का परमेश्वर के साथ एक मित्रवत संबंध होता है, एक ऐसा संबंध जिसमें वह अपने परमेश्वर से गुप्त संवाद करता है।

शरीर और आत्मा

जब हम जीवन का विश्लेषण करते हैं, तो एक ही सत्य सामने आता है: आदम के हर पुत्र और हव्वा की हर पुत्री सुखी रहकर जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। लेकिन जीवन का भौतिक दृष्टिकोण हर कदम पर उन्हें निराश करता है, क्योंकि हमारा हर पल नश्वर और परिवर्तनशील है। भौतिक दृष्टि से हमें यह भी ज्ञात नहीं है कि सच्चा सुख क्या होता है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए। सच्चे सुख से परिचित होने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी मूल आधार (आधारभूत सत्य) को खोजें।

www.ksars.org

जब हम कुछ नहीं थे, तब भी कुछ न कुछ अवश्य थे, क्योंकि 'कुछ न होना' हमारे अस्तित्व को नकारता है। हमारी भौतिक जीवन मां के गर्भ से आरंभ होती है, और यह पदार्थ एक विशेष प्रक्रिया से गुजरकर अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचता है, जिससे एक जीवंत तस्वीर शून्य से अस्तित्व में आती है। इस तस्वीर को परिवेश से ऐसी शिक्षा मिलती है कि वह यह समझ ही नहीं पाती कि सच्चा सुख पाने का तरीका क्या है और इसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है।

सच्चे सुख से आत्मसात होने के लिए मनुष्य को सबसे पहले यह समझना चाहिए कि जीवन का आधार केवल शरीर नहीं है, बल्कि वह सत्य है जिसने स्वयं के लिए शरीर को आवरण बना लिया है। जन्म के बाद जीवन का अगला चरण हमारे सामने यह दिखाता है कि हमारा हर पल मरता रहता है और हर पल की मृत्यु, अगले पल के जन्म का कारण बनती है। यही पल कभी बचपन होता है, कभी किशोरावस्था, कभी जवानी, और अंततः बुढ़ापे में परिवर्तित हो जाता है।

जीवित चित्र

जीवंत तस्वीर को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसे मात्र एक भौतिक शरीर के रूप में न देखा जाए, बल्कि इसे चेतना के रूप में समझा जाए। हालांकि, इसे केवल चेतना कहना भी अपर्याप्त है, क्योंकि चेतना स्वयं हमारी पहचान और अनुभव का वह आधारभूत माध्यम है, जिस पर समस्त अस्तित्व आधारित है। यह सत्य है कि भौतिक शरीर के नष्ट होने के साथ उसका घनत्व और प्रदूषण समाप्त हो जाता है, किंतु यह भी स्पष्ट है कि चेतना, शरीर के विनाश के बाद भी, समाप्त नहीं होती। यह किसी अन्य आयाम में स्थानांतरित हो जाती है।

सभी आकाशीय ग्रंथ एक केंद्रीय विचार प्रस्तुत करते हैं: मनुष्य केवल भौतिक शरीर नहीं है, बल्कि वह मूल रूप से चेतना है। जन्म से मृत्यु तक की यात्रा के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गर्भ में जिस चेतना की नींव रखी गई थी, वह समय के साथ दो दिशाओं में कार्य करती है: एक ओर वह घटती है, जिससे मनुष्य अतीत में जाता है, और दूसरी ओर वह बढ़ती है, जो भविष्य की ओर अग्रसर होती है। चेतना का यह घटना और बढ़ना, मानव जीवन की अवधि और उसकी अवस्थाओं का निर्धारण करता है।

चेतना के इन अवस्थाओं को कालखंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम अवस्था को "शैशव" कहा जाता है, द्वितीय को "यौवन," और तृतीय को "वार्धक्य।" अंततः, वह चेतना, जो इस भौतिक अस्तित्व का आधार है और जिसके माध्यम से शरीर अपनी क्रमिक विकास प्रक्रियाओं को पूर्ण करता है, शाश्वत रहती है। चेतना के इस निरंतर प्रवाह और स्थायित्व में ही जीवन की वास्तविकता और इसका रहस्य निहित है।

आत्मा का अध्ययन

जब हम अपने अस्तित्व का अध्ययन करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि हमारे पास एक सीमित और नश्वर शरीर है, जो हमारी पहचान का आधार माना जाता है। यह भौतिक शरीर, जिसका हम निरीक्षण करते हैं, वास्तव में घनत्व, अशुद्धता और सड़ांध से बना है। इस सड़ांध का कारण

www.ksars.org

यह विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को मात्र भौतिक पदार्थ मानता है और इस भौतिक संसार की ही उत्पत्ति मानता है। यह सीमित दृष्टिकोण हर व्यक्ति को एक संकीर्ण दायरे में बांध देता है और इस प्रकार हर व्यक्ति अपने आप को सीमाओं और बंधनों में जकड़ लेता है। धरती पर रहने वाला हर व्यक्ति जब अपनी पहचान का उल्लेख करता है, तो कहता है कि "मैं मुसलमान हूं," "मैं हिंदू हूं," "मैं पारसी हूं," या "मैं ईसाई हूं," जबकि आत्मा (रूह) का कोई धर्म नहीं होता। प्रकाश हर जगह समान होता है, चाहे वह अरब में हो, अजब में हो, यूरोप में हो, या एशिया के किसी हिस्से में।

परमेश्वर का नियम ऐसा है कि संसार में जो भी ईश्वरीय संदेश आया, वह अपने शाश्वत स्वरूप में विद्यमान है। ईसाई बाइबिल के शब्दों को धर्म मानते हैं, मुसलमान कुरान को धर्म का आधार मानते हैं, और हिंदू भगवद गीता के शब्दों की पूजा करते हैं। ये सभी ग्रंथ, वास्तव में, परमेश्वर के चयनित दूतों के वह संदेश हैं, जो प्रकाश बनकर समस्त ब्रह्मांड में फैल गए।

जब हम ब्रह्मांड की रचना पर विचार करते हैं, तो यह ज्ञात होता है कि हमारा ब्रह्मांड परमेश्वर की वाणी है। परमेश्वर ने जब "कुन" कहा, तो समस्त सृष्टि अस्तित्व में आ गई। परमेश्वर अपने परिचय में कहते हैं कि "मैं अपनी सृष्टि का मित्र हूं।" जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र को नहीं भूलता, उसी प्रकार परमेश्वर भी अपनी सृष्टि को कभी नहीं भूलते। वह हमारा पालनकर्ता और जीवन के विभिन्न चरणों में हमारा मार्गदर्शन करने वाला सच्चा मित्र है।

पवित्र ग्रंथों का अध्ययन यह प्रकट करता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि का कभी परित्याग नहीं करता, चाहे हमारे भौतिक स्वरूप कितने ही भिन्न क्यों न हों। जब हम सृष्टि के क्रम पर चिंतन करते हैं, तो पाते हैं कि हर रचना एक पूर्व निर्धारित क्रम के अनुसार विकसित होती है। उदाहरणस्वरूप, जब "धरती मां" के गर्भ में बीज डाला जाता है, तो वह बीज विकसित होकर एक वृक्ष बनता है। बीज, धरती से जल को अवशोषित करता है और अपने छोटे छिद्र (माइक्रोपाइल) के माध्यम से उस जल को अंदर ले जाता है, जिससे निष्क्रिय बीज (डॉर्मेंट सीड) की वृद्धि होती है। बीज की दालों (कॉटिलीडन) में कोशिकीय विभाजन होता है, और यह छोटे पत्तों और डंठल में परिवर्तित हो जाता है। यह डंठल जड़ का रूप ले लेता है, जो न केवल पौधे को पोषण प्रदान करती है, बल्कि उसे स्थिरता भी देती है। पौधे की बढ़ती अवस्था में, उसकी दालें उस समय तक पोषण प्रदान करती हैं, जब तक वह स्वयं सूर्य के प्रकाश में प्रकाश-संश्लेषण (फोटोसिंथेसिस) द्वारा अपनी आहार बनाने योग्य नहीं हो जाता। इसके बाद दालें सूख जाती हैं और एक पौधा एक विशाल वृक्ष का रूप ले लेता है। उसी प्रकार, जब एक पिता अपने खेत में बीज डालता है या अपनी पत्नी के साथ मिलकर नए जीवन की शुरुआत करता है, तो वह बीज भी एक वृक्ष की तरह विकास करता है। प्रारंभिक अवस्था में एक कोमल डंठल (नोटोकॉर्ड) विकसित होता है, जो क्रमिक विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए पूर्णता को प्राप्त करता है। जिस प्रकार धरती अपने गर्भ से वृक्ष को जन्म देती है, उसी प्रकार मां के गर्भ से एक शिशु जन्म लेता है।

www.ksars.org

रचनात्मक संरचनाएँ

सृजनात्मक संरचना के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उत्पत्ति की प्रक्रिया में मानव, कुत्ता और बिल्ली समान जैविक संरचनाओं के आधार पर निर्मित होते हैं। जब एक तरल जीवद्रव्य (स्पर्म) दूसरे तरल जीवद्रव्य के साथ मिलकर सृजनात्मक संरचना में समाहित होता है, तो एक विशिष्ट जैविक प्रक्रिया के तहत उसका विकास प्रारंभ हो जाता है। पहले दिन यह द्रव्य मटर के दाने के समान होता है, और धीरे-धीरे यह एक जीवंत, देख सकने, सुन सकने, महसूस कर सकने और प्रतिक्रिया देने योग्य संरचना में परिवर्तित हो जाता है। इस संरचना में दस महत्वपूर्ण छिद्र होते हैं, जो पूरे जीवन के अस्तित्व और क्रियाशीलता का निर्धारण करते हैं। इन छिद्रों में बोलने, सुनने, सूंघने, शरीर से विषाक्त पदार्थों और अपशिष्टों को बाहर निकालने, शारीरिक स्वच्छता बनाए रखने और भौतिक जीवन की सुरक्षा के कार्य होते हैं। यदि इनमें से कोई एक छिद्र भी अपनी भूमिका में विफल हो जाता है या अनुपस्थित हो जाता है, तो इसका परिणाम यह होता है कि मानव जीवन में शून्य उत्पन्न होता है और व्यक्ति निष्क्रिय, कम सक्षम या अक्षम हो जाता है।

कानों के दो छिद्र मानव के अंदर श्रवण क्षमता का कारण हैं। आंखों के दो छिद्र दृष्टि प्रदान करते हैं, जो बाहरी चित्रों को मस्तिष्क की स्क्रीन पर स्थानांतरित करके किसी वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान प्रदान करते हैं, और यह ज्ञान विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरकर एक संज्ञान में परिवर्तित हो जाता है। नाक के दो छिद्र हमें गंध की भावना प्रदान करते हैं, जबकि मुंह और गले के छिद्र हमारे आहार संबंधी कार्यों को नियंत्रित करते हैं। एक ओर, हमारी समस्त आहार संबंधी आवश्यकताएं इन छिद्रों पर निर्भर करती हैं, दूसरी ओर ये छिद्र हमारी वाणी की क्षमता प्रदान करते हैं। नौवां छिद्र, जो घातक पदार्थों को बाहर निकालने का कार्य करता है, प्रजनन का भी स्रोत है। आहार से ऊर्जा (एनर्जी) प्राप्त करने के बाद जो अवशिष्ट पदार्थ शेष रहते हैं, दसवां छिद्र उनका निष्कासन करता है। यह एक प्रणाली है जो निरंतर क्रियाशील है और युगों तक बनी रहेगी।

हमें बीज के अंकुरण के समय तीन तत्वों का बोध होता है: एक तना और दो पत्तियाँ। इस सृजनात्मक प्रक्रिया से यह सिद्ध होता है कि प्रत्येक चीज और अस्तित्व दो पहलुओं पर आधारित है, और फिर ये दो पहलु विभाजित होकर कई पहलुओं में रूपांतरित हो जाते हैं। मानव भी दो पहलुओं से मिलकर एक छवि है। मनुष्य के अंदर दो मस्तिष्क होते हैं, एक दाहिनी और दूसरा बाईं ओर; दो आंखें होती हैं, नथुने होते हैं, गला भले ही एक दिखाई दे, लेकिन उसके अंदर मांस का एक टुकड़ा या अस्तित्व लटका रहता है, जिससे गला दो भागों में बंटा होता है। दो हाथ, दो पैर, दो गुर्दे, दो जिगर होते हैं। अगर दिल का विभाजन किया जाए, तो वह एक परदे (सेप्टम) द्वारा मूल रूप से दो हिस्सों में बंटा होता है। फेफड़े भी दो होते हैं। इसी प्रकार, जब भौतिक शरीर का विश्लेषण किया जाता है, तो हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि मनुष्य की सृजन प्रक्रिया दो पहलुओं पर आधारित है। अधिक विचार और विश्लेषण करने पर, हम यह देखते हैं कि मानवता और सभी जीवों का अस्तित्व भी दो पहलुओं पर आधारित है—एक पुरुष और एक महिला, एक पिता और एक माता।

www.ksars.org

यौन आकर्षण का नियम

सृजन का नियम यह स्पष्ट करता है कि पुरुष का अस्तित्व दो आयामों पर आधारित है, और स्त्री का अस्तित्व भी दो आयामों पर ही टिका हुआ है। स्त्री के भीतर पुरुष छिपा होता है, और पुरुष के भीतर स्त्री। यदि आदम के भीतर हव्वा का अस्तित्व न होता, तो हव्वा की उत्पत्ति संभव नहीं होती। इसी प्रकार, हव्वा के भीतर से आदम की उत्पत्ति हुई, जिसे आकाशीय ग्रंथों में "ईसा" के रूप में वर्णित किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति दो परतों से निर्मित है—एक बाहरी परत और एक आंतरिक परत। बाहरी परत प्रकट और प्रभावी होती है, जबकि आंतरिक परत अप्रकट और दबे हुए स्वरूप में रहती है। स्त्री और पुरुष दोनों ही इन दो आयामों का समुच्चय हैं। स्त्री के बाहरी आयाम उसके शारीरिक रूप-रेखाओं में प्रकट होते हैं, जबकि आंतरिक आयाम दृष्टिगत नहीं होते। इसी प्रकार, पुरुष का बाहरी आयाम उसके शारीरिक रूपों में झलकता है, और आंतरिक आयाम अप्रकट रहता है।

यह विचार प्रस्तुत करता है कि पुरुष के रूप में जो व्यक्ति दृष्टिगोचर होता है, वह उसके अस्तित्व का केवल बाहरी पहलू है, और महिला के रूप में जो व्यक्तित्व सामने आता है, वह भी उसके अस्तित्व का बाहरी पक्ष मात्र है। पुरुष के बाहरी स्वरूप का विपरीत आंतरिक पक्ष "स्त्री" उसके साथ अन्तःस्थ रूप से जुड़ा हुआ है, और महिला के बाहरी स्वरूप का विपरीत आंतरिक पक्ष "पुरुष" उसमें अन्तर्निहित है। प्रजनन और यौन आकर्षण का नैसर्गिक विधान इन्हीं द्वैत स्वरूपों की परस्पर क्रियाशीलता पर आधारित है। महिला के भीतर आंतरिक स्तर पर निहित "पुरुष" का पक्ष अपने अधूरेपन के कारण दबा हुआ है और बाहरी रूप में अपनी अभिव्यक्ति प्राप्त करने में असमर्थ है। इस कारण वह अपनी पूर्णता हेतु बाहरी और प्रबल पक्ष से एकात्म होने की आकांक्षा करती है। इसी प्रकार, पुरुष के भीतर छुपा हुआ "स्त्री" का आंतरिक पक्ष, जो असंपूर्ण और कमजोर है, महिला के बाहरी स्वरूप के साथ एकाकार होकर अपनी परिपूर्णता प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस परिप्रेक्ष्य में यह निष्कर्ष प्रस्तुत होता है कि यौन आकर्षण उस पुरुष या महिला में निहित नहीं है जो बाहरी दृष्टि से हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं, बल्कि यह आकर्षण आंतरिक पक्षों की परिपूर्णता की आकांक्षा में निहित है। महिला के भीतर छुपा हुआ "पुरुष" का आंतरिक पक्ष, बाहरी रूप में दृष्टिगोचर "पुरुष" से एकात्म होकर अपनी संपूर्णता चाहता है, और यही भाव पुरुष के भीतर छुपे "स्त्री" पक्ष पर भी लागू होता है। इसे सामान्य भाषा में "यौन प्रवृत्ति" कहा जाता है।

यौन परिवर्तन की घटनाओं को इसी सिद्धांत के प्रकाश में समझा जा सकता है। इन घटनाओं में आंतरिक पक्ष की क्रियाशीलता इतनी प्रबल हो जाती है कि बाहरी पक्ष की क्रियाशीलता निरस्त हो जाती है। परिणामस्वरूप, पुरुष के भीतर स्थित "स्त्री" पक्ष प्रमुखता प्राप्त कर लेता है, और बाहरी "पुरुष" स्वरूप विलुप्त हो जाता है, जिससे वह व्यक्ति महिला के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसी प्रकार, महिला के भीतर छुपा "पुरुष" पक्ष जब प्रमुख हो जाता है, तो वह महिला पुरुष के स्वरूप में परिवर्तित हो जाती है।

लैंगिक परिवर्तन की घटनाएँ प्रायः हमारे अवलोकन में आती रहती हैं। इसका मूल कारण यह है कि आंतरिक प्रवृत्तियों की गति और प्रभावशीलता इतनी तीव्र होती है कि बाह्य प्रवृत्तियाँ प्रायः निष्क्रिय या विलुप्त प्रतीत होने लगती हैं। यह परिवर्तन इस प्रकार घटित होता है कि किसी पुरुष के भीतर स्त्री का आंतरिक पक्ष प्रबल हो जाता है, जिससे उसकी बाह्य पुरुषीय प्रवृत्तियाँ दुर्बल

www.ksars.org

हो जाती हैं और अंततः वह स्त्री के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसी प्रकार, जब किसी स्त्री के भीतर बाह्य प्रवृत्तियाँ दुर्बल हो जाती हैं और पुरुष का आंतरिक पक्ष प्रभावी हो जाता है, तो वह पुरुष में रूपांतरित हो जाती है।

प्रकट और आंतरिक

यह एक रचनात्मक, अनंत और निरंतर प्रक्रिया है, जो हमें चिंतन की एक नई दिशा में प्रवृत्त करती है। इसमें एक तत्व है जो हमारा **प्रकट** (बाह्य रूप) है और दूसरा तत्व है जो हमारा **आंतरिक** (गूढ़ अस्तित्व) है। प्रकट को हम 'माध्य' (पदार्थ) के रूप में व्यक्त करते हैं, जबकि आंतरिक को 'आत्मा' के रूप में अभिहित किया जाता है। आत्मा स्वयं दो परिप्रेक्ष्यों में व्याप्त है: एक वह रूप है, जिसमें आत्मा के प्रकट रूप का अवलोकन होता है, जो वस्त्र के रूप में प्रकट होती है, और दूसरा वह रूप है, जो स्वयं आत्मा के अस्तित्व के रूप में अदृश्य रूप से विद्यमान रहता है। **मान्य महोब्बत क़लंदर बाबा औलिया** ने अपनी पुस्तक 'लोह व क़लम' में इस विषय की व्याख्या करते हुए इसे क़मीज़ और शरीर के उदाहरण से स्पष्ट किया है। वे कहते हैं:

हमारे समक्ष एक मूर्त रूप है, जो मांस और त्वचा से निर्मित है। चिकित्सकीय दृष्टिकोण से यह हड्डियों के ढांचे पर मांसपेशियों और नसों की संरचना के माध्यम से एक शरीर का रूप ग्रहण करता है। इसे हम 'शरीर' कहते हैं और इसे असल मानते हैं। इसकी सुरक्षा के लिए एक अन्य वस्तु का आविष्कार किया गया है, जिसे हम 'वस्त्र' कहते हैं। यह वस्त्र सूती, ऊनी या किसी अन्य पदार्थ से निर्मित होता है, और इसका मुख्य उद्देश्य केवल मांस और त्वचा के शरीर की रक्षा करना है। वास्तव में, इस वस्त्र में कोई स्वतंत्र जीवन या गतिशीलता नहीं होती। जब यह वस्त्र शरीर पर होता है, तो यह शरीर की गति के साथ गतिशील हो जाता है, अर्थात् इसकी गति शरीर से स्थानांतरित होकर उसे प्राप्त होती है। किंतु वस्तुतः यह शरीर के अंगों की ही गति होती है। जब हम हाथ उठाते हैं, तो आस्तीन भी मांस और त्वचा के हाथ के साथ गतिमान हो जाती है। यह आस्तीन उस वस्त्र का हिस्सा है, जो शरीर की रक्षा के लिए उपयोग में लाया जाता है। वस्त्र की परिभाषा दी जाए तो इसे इस प्रकार व्याख्यायित किया जा सकता है कि जब यह वस्त्र शरीर पर स्थित होता है, तो शरीर की गति वस्त्र में स्थानांतरित हो जाती है, लेकिन यदि इस वस्त्र को उतारकर कहीं रखा जाए या हुक पर लटका दिया जाए, तो उसमें कोई भी गति समाप्त हो जाती है। अब हम वस्त्र और शरीर के बीच तुलना करते हैं। इस संबंध में कई उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं, किंतु एक उदाहरण से इसका सही अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। वह उदाहरण है कि जब एक व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त करता है। मृत्यु के पश्चात, यदि हम उसके शरीर को काट डालें, टुकड़ों में विभाजित करें, अथवा कोई भी कार्य करें, तो शरीर की ओर से कोई भी प्रतिक्रिया, या गति उत्पन्न नहीं होगी। इस मृत शरीर को एक स्थान पर रख दिया जाए, तो इसमें जीवन का कोई भी संकेत कभी उत्पन्न होने की संभावना नहीं होगी। वह शरीर जिस रूप में पड़ा रहता है, उसी रूप में पड़ा रहेगा। इसका अर्थ यह है कि मृत्यु के बाद शरीर का अस्तित्व वस्त्र के समान हो जाता है। वास्तविक मानव उसमें उपस्थित नहीं रहता। वह इस वस्त्र को छोड़कर कहीं चला जाता है। यदि यह शरीर वास्तविक मानव होता, तो किसी न किसी रूप में इसके अंदर जीवन का कोई संकेत अवश्य पाया जाता। किंतु मानवता के पूरे इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण

www.ksars.org

नहीं मिलता, जिसमें किसी मृत शरीर ने कभी कोई गति की हो। इस स्थिति में हमें उस व्यक्ति के अस्तित्व को जानने की जिज्ञासा होती है, जो इस शरीर के वस्त्र को छोड़कर कहीं रुखसत हो जाता है। यही व्यक्ति है, जिसे पैगंबरों की भाषा में "आत्मा" कहा जाता है, और वही वास्तविक मानव का शरीर है। यही शरीर उन सभी क्षमताओं का मालिक है, जिनके सम्मिलन को हम जीवन के रूप में परिभाषित करते हैं।

शरीर और वस्त्र की इस सुंदर उपमा और उदाहरण से यह पूरी तरह सिद्ध हो जाता है कि वास्तविक मानव या असली जीवन वस्त्र नहीं है। जब तक शरीर के ऊपर वस्त्र है, वस्त्र की स्थिति बनी रहती है, और जब हम वस्त्र को हटा देते हैं या वस्त्र से अपनी रुचि समाप्त कर देते हैं, तो वस्त्र की कोई स्थिति नहीं रहती। वस्त्र बिखर जाता है, वस्त्र नष्ट हो जाता है।

www.ksars.org

हमारी प्रकृति और प्रवृत्ति दो अलग-अलग और विशिष्ट अवधारणाएँ हैं। प्रवृत्ति में हमारा मानसिक संबंध अन्य प्रजातियों, जैसे भेड़, बकरी, गाय, भैंस, कुत्ते, बिल्लियाँ, साँप, कबूतर, फाख्ता आदि, से ता है। जबकि हमारी प्रकृति में, हम एक विशिष्ट और उच्च स्थान पर स्थित हैं, जो हमें एक ऐसी सत्ता से प्राप्त हुआ है, जो समस्त प्रजातियों से परे है और सभी सृष्टि के प्राणियों से श्रेष्ठ है। यह उपहार हमें एक प्रगल्भ बौद्धिक विवेक और चिंतन के रूप में प्राप्त हुआ है। कोई भी जागरूक व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि जानवरों में बौद्धिकता और चेतना का अभाव है, क्योंकि कई मामलों में जानवर मनुष्य से अधिक संवेदनशील और समझदार होते हैं।

पृथ्वी पर कुछ ऐसे प्राणी भी हैं, जिनमें भविष्य को जानने की अद्वितीय क्षमता विद्यमान होती है। बिल्लियाँ, कुत्ते और अन्य कई जानवरों को आने वाली आपदाओं और भूकंपों का पूर्वाभास हो जाता है।

1906 में सैन फ्रांसिस्को के ऐतिहासिक भूकंप से पूर्व, कुत्तों ने निरंतर भौंकने और चिल्लाने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी, जिससे लोगों की रात की नींद और दिन का शांति टूट गई थी। बतखें ऊँचे वृक्षों की ओर उड़ने लगीं, और सूअर आपस में लड़ने लगे। गायें अपनी रस्सियाँ तोड़कर भागने लगीं।

भूमिगत जीव

इस प्रकार, प्राचीन यूनानी शहर हिल्स में भूमिगत रहने वाले ऊसलों (Weasels) और अन्य कई जानवर पांच दिन पहले ही भूकंप से पहले शहर से भाग गए। चिली के शहर कोनसीपकों की आकाश में घूमते हुए, अनजान भय से भयभीत पक्षियों की चीखों से हवा गूंज उठी। इसके बाद, यह शहर भूकंप के कारण नष्ट हो गया।

शक्तिशाली इंद्रियाँ

प्रायः भूकंप अचानक उत्पन्न नहीं होते। पृथ्वी के गर्भ में स्थित चट्टानों के आपसी टकराव की प्रक्रिया प्रारंभिक चरण के अंतर्गत एक चरम बिंदु तक पहुँचती है। निरंतर बढ़ता भूगर्भीय दबाव पृथ्वी की सतह के झुकाव और उभार में असाधारण परिवर्तन उत्पन्न करता है। भूकंपीय तरंगें पृथ्वी की गहरी चट्टानों में उत्पन्न होने लगती हैं, और साथ ही पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। मानव की संवेदी क्षमताएँ इन प्रारंभिक घटनाओं को पहचानने में असमर्थ होती हैं, जबकि जानवरों की संवेदनशीलता इतनी प्रबल होती है कि वे भूकंप के पूर्व, भूमिगत चट्टानों में होने वाली मामूली दरारों या कंपन को भांप लेते हैं।

मानव की श्रवण क्षमता (HEARING POWER) तुलनात्मक रूप से सीमित होती है। मानव एक सेकंड में केवल 1000 चक्कर वाली ध्वनि तरंगों को सुनने में सक्षम होता है, जबकि 20000 चक्कर प्रति सेकंड या उससे अधिक गति वाली ध्वनि तरंगों को मानव कान महसूस नहीं कर सकते। इसके विपरीत, कुत्ते, बिल्लियाँ, और लोमड़ियाँ 60000 (साठ हज़ार) चक्कर प्रति सेकंड की ध्वनियाँ सुनने में सक्षम होते हैं।

www.ksars.org

चूहे, चमगादड़, व्हेल, और डॉल्फिन 100000 (एक लाख) चक्कर प्रति सेकंड की ध्वनियों को सुन सकते हैं।

मछलियाँ समुद्र में अत्यधिक सूक्ष्म कंपन को भी महसूस कर सकती हैं।

मनुष्य की दृष्टि सीमा (RANGE) अत्यंत सीमित होती है, जबकि मधुमक्खी पराबैंगनी किरणें (ULTRAVIOLET RAYS) देखने में सक्षम होती है। मनुष्य की तुलना में, बाज़ की आँख किसी भी वस्तु को आठ गुना बड़ा और स्पष्ट देख सकती है।

खोजी कुत्ते:

पूरी दुनिया में पुलिस लंबे समय से अपराधियों की तलाश और पहचान के लिए कुत्तों का उपयोग करती आ रही है। जहाँ मानव नाक में लगभग पाँच मिलियन संवेदी कोशिकाएँ (Sensory Cells) होती हैं, वहीं कुछ कुत्तों की नस्लों में इन कोशिकाओं की संख्या दो सौ मिलियन से भी अधिक होती है। इस प्रकार, कुत्तों की सूंघने की क्षमता मनुष्यों की तुलना में कई मिलियन गुना अधिक होती है।

अंडों का वितरण:

शुतुरमुर्ग में बुद्धिमत्ता और समझ की पहचान इस प्रक्रिया से की जा सकती है, जिसमें वह अपने अंडों को तीन श्रेणियों में विभाजित करता है: कुछ अंडों को वह रेत में दबा देता है, कुछ को धूप में छोड़ देता है, और शेष अंडों को अपने शरीर के नीचे सेंकता है। जब अंडों से शिशु बाहर आते हैं, तो वह धूप में रखे गए अंडों से एक तरल पदार्थ निकालता है और शिशुओं को पिलाता है। इस पोषक तत्व के सेवन से शिशुओं के विकास की गति में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। जब शिशु कुछ बड़े हो जाते हैं, तो वह रेत में दबाए गए अंडों को तोड़कर थोड़ी देर के लिए छोड़ देता है। रेत में दबाए जाने और टूटने के बाद इन अंडों पर सीधे धूप के संपर्क से कीड़े-मकोड़े उत्पन्न हो जाते हैं, जो शिशुओं के आहार का प्रमुख स्रोत बन जाते हैं। जैसे-जैसे शिशुओं का विकास होता है, वे घास और पौधों को अपनी आहार सामग्री बना लेते हैं, और इस प्रकार वे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। शुतुरमुर्ग का अंडों का इस प्रकार से प्रबंधन करना किसी भी दृष्टि से बुद्धिमत्ता और विवेक का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बिजली की खोज से पहले

हमारे सामने "बया" नामक एक पक्षी है, जो आकार में चिड़िया से भी छोटा है। बया का घोंसला एक संपूर्ण विज्ञान, एक सुव्यवस्थित नक्शा, और गहन योजना का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस गुम्बदाकार लटकते हुए घोंसले में विभिन्न कक्ष (कमरे), सोने के लिए बिस्तर, और बच्चों के झूलने के लिए झूला शामिल होता है। यह छोटा पक्षी इतनी बुद्धिमत्ता और समझ रखता है कि अपने घोंसले को प्रकाशमान रखने के लिए जुगनू (Glowworm) को पकड़ लेता है। जुगनू की प्राकृतिक चमक से घोंसले के अंदर प्रकाश व्यवस्था

www.ksars.org

होती है। इस प्रकार, यह सूक्ष्म पक्षी बिजली (Electricity) के आविष्कार से पहले ही इसके विज्ञान से परिचित था और पीढ़ी दर पीढ़ी जुगनुओं का उपयोग प्रकाश स्रोत (Bulbs) के रूप में करता आ रहा है।

वर्षा की ध्वनि:

ऑस्ट्रेलिया का पक्षी कीवी अपने आहार की प्राप्ति के लिए जो विधि अपनाता है, वह अत्यंत विशिष्ट है।

जब पर्याप्त प्रयासों के पश्चात भी शिकार उपलब्ध नहीं होता, तो यह ऐसी ध्वनि उत्पन्न करता है जो वर्षा की ध्वनि के समान प्रतीत होती है। पृथ्वी के भीतर स्थित कीट-पतंगे यह मानकर कि वर्षा हो रही है, सतह पर आ जाते हैं और कीवी के आहार में परिवर्तित हो जाते हैं।

द्वेषी लोमड़ी

लोमड़ी अपनी चतुराई और कपट के कारण प्रसिद्ध है। जब उसे सहजता से शिकार नहीं मिलता, तो वह अपनी चालाकी का प्रदर्शन करने के लिए एक विशेष रणनीति अपनाती है। वह अपने शरीर को ढीला छोड़कर भूमि पर लेट जाती है और गहरी सांस लेकर पेट को फुला लेती है। इस अवस्था में, पक्षी उसे मृत समझकर अपनी आहार बनाने के लिए उसके पास आते हैं। परंतु, इससे पूर्व कि पक्षी उसे अपना शिकार बना सकें, वह स्वयं उन पक्षियों को अपनी आहार बना लेती है।

केले के बगीचे

जी एच विलियम ने अपनी काव्यात्मक कृति *The Elephant* में दो किशोर हाथियों का उल्लेख किया है, जो प्रायः खुले क्षेत्र में विचरण करते थे, लेकिन उनके गलों में उच्च ध्वनि वाली घंटियाँ लटकी होती थीं ताकि यह पता चलता रहे कि वे कहाँ स्थित हैं। एक दिन, वे पास के तालाब के किनारे गए और वहां से गीली मिट्टी उठाकर अपनी-अपनी घंटियों में भर ली। इससे घंटियाँ बजना बंद हो गईं। फिर दोनों ने केले के बाग़ों की ओर रुख किया और अपनी तृप्ति तक केले खाए।

एक तकनीकी विधि

दो डॉल्फिनें एक सांप जैसी मछली *ईल (EEL)* के साथ खेल रही थीं और उसे पकड़ने के लिए उसका पीछा कर रही थीं। चतुर *ईल* ने डॉल्फिनों से बचने के लिए अचानक गोताखोरी की और एक सुरंग में घुसकर छिप गया। अब डॉल्फिनों की सूझबूझ पर ध्यान दें, उनमें से एक ने एक ऐसी मछली पकड़ ली, जिसका मुँह विषैले डंक से सुसज्जित था, और उसने उस मछली की पूँछ पकड़कर उसका सिर उस सुरंग में घुसा दिया, जहाँ *ईल* छिपा हुआ था। *ईल* ने उस विषैले मछली को देखा और भय के कारण सुरंग से बाहर निकलकर भाग गया, जिससे खेल पुनः प्रारंभ हो गया।

www.ksars.org

हज़रत बाबा ताजुद्दीन नागपुरी (र.अ.) के पोते और क़लंदरशऊर के संस्थापक क़लंदर बाबा ओलिया (र.अ.) अपनी पुस्तक "तज़किरा ताजुद्दीन बाबा" में शेर के श्रद्धा से संबंधित एक घटना और उस घटना की व्यावहारिक व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि:

www.ksars.org

शेर की श्रद्धा :

एक दिनवाकी शरीफ के जंगल (भारत) में कुछ लोगों के साथ पहाड़ पर चढ़ते हुए नाना ताजुद्दीन नागपुरी (र.अ.) गए। नाना (र.अ.) मुस्कराते हुए कहने लगे, 'जो शेर से भयभीत हो, वह जा सकता है। मैं यहाँ थोड़ी देर विश्राम करूंगा, मुझे विश्वास है कि शेर अवश्य आएगा। जितनी देर रुकना हो, वह उनकी इच्छा है। आप लोग जाइए, भोजन करें, पियें और आनंद लें।' कुछ लोग इधर-उधर छिप गए और कुछ दूर चले गए।

गर्मी का मौसम था, वृक्षों की छांव और ठंडी हवा खुमार उत्पन्न कर रही थी। नाना (र.अ.) अब मोटी घास पर लेटे हुए थे, उनकी आँखें बंद थीं, और वातावरण में पूर्ण शांति व्याप्त थी।

कुछ क्षणों में जंगल का वातावरण भयावह प्रतीत होने लगा। इसके पश्चात कुछ समय ऐसा गुज़रा, जैसे गहरी प्रतीक्षा की स्थिति हो। यह प्रतीक्षा न किसी साधु, योगी, अवतार, वली, या मानव की थी, बल्कि किसी शारीरिक दृष्टि से क्रूर प्राणी की थी, जो मेरे मानसिक स्तर पर कदम दर कदम गति कर रहा था। अचानक नाना ताजुद्दीन नागपुरी (र.अ.) की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। उनके पैरों की दिशा में एक विशाल शेर धीरे-धीरे ढलान से चढ़ते हुए आ रहा था, अत्यंत शालीनता और शिष्टता के साथ। शेर नाना ताजुद्दीन नागपुरी (र.अ.) की ओर अपनी आंशिक रूप से खुली आँखों से देख रहा था। कुछ ही समय में वह उनके पैरों के बिल्कुल निकट पहुँच गया। नाना (र.अ.) गहरी निद्रा में, पूरी तरह से अनभिज्ञ थे। शेर अपनी जीभ से उनके तलों को चाटने लगा। कुछ मिनटों बाद उसकी आँखें अत्यधिक स्नेहभाव से बंद हो गईं और उसने अपना सिर भूमि पर रख दिया।

नाना ताजुद्दीन नागपुरी (र.अ.) अभी भी नींद में थे। शेर ने कुछ साहस दिखाकर तलों को चाटना जारी रखा। इस क्रिया से नाना (र.अ.) की आँखें खुली और वह उठकर बैठ गए। शेर के सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, 'तू आ गया। अब तेरा स्वास्थ्य पूर्णतः ठीक है, मुझे तुझे स्वस्थ देख अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। अब तू जा सकता है।' शेर ने गहरी आभारभावना के साथ अपनी पूंछ हिलाई और वहां से चला गया।

मैंने इन घटनाओं पर गहन विचार किया। यह बात किसी को ज्ञात नहीं कि शेर पहले कभी उनके पास आया था। यह अनिवार्य रूप से स्वीकार करना पड़ता है कि नाना (र.अ.) और शेर पहले से मानसिक रूप से परिचित थे। परिचय का एक ही तरीका हो सकता है। वह अना की लहरें (अना) नाना (र.अ.) और शेर के बीच बदलाव का कारण बनती थीं, जो उनकी मुलाकात का कारण बनती थीं। मनीषियों में हृदय की दृष्टि का खुलना (कशफ) की प्रक्रिया सामान्यत: इसी प्रकार होती है, लेकिन इस घटना से यह ज्ञात हुआ कि जानवरों में भी हृदय की दृष्टि का खुलना (कशफ) इसी तरह होता है। हृदय की दृष्टि का खुलना (कशफ) के मामले में इंसान और अन्य प्राणी समान हैं।

www.ksars.org

अना की लहरें (Waves of self Ego):

यह सिद्धांत गहरे चिंतन और विश्लेषण से मानसिकता में स्थापित किया जाना चाहिए कि जिस प्रकार विचार हमारे मस्तिष्क में गतिमान होते हैं, उनमें अधिकांश हमारे व्यक्तिगत जीवन से अप्रासंगिक होते हैं। उनका संबंध ऐसी प्राणियों से होता है, जो क़ायनात (ब्रह्मांड) में कहीं न कहीं विद्यमान होती हैं, चाहे वह निकट हो या दूर। इन प्राणियों के आस्थाएँ और चित्र हमारे पास लहरों के माध्यम से पहुंचते हैं। जब हम इन चित्रों को अपनी जीवन-व्यवस्था और अनुभवों से जोड़ने का प्रयास करते हैं, तो हजार कोशिश के बावजूद हम उन प्रयासों में सफल नहीं हो पाते। अना की जिन लहरों (Waves of Self-ego) का यहां उल्लेख किया गया है, उन पर कुछ महत्वपूर्ण बातें विचारणीय हैं। वैज्ञानिक प्रकाश को उच्चतम गति से परिभाषित करते हैं, किंतु यह इतनी तीव्र गति नहीं रखता कि वह समय और स्थान के अंतराल को समाप्त कर सके। हालांकि, अना की लहरें अनंतता (Infinitude) में एक साथ सर्वत्र विद्यमान होती हैं, और समय तथा स्थान की सीमाएँ इनके प्रभाव से परे होती हैं। दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि इन लहरों के लिए समय और स्थान की कोई सीमा नहीं होती। जबकि प्रकाश की लहरें जिन अंतरालों को संकुचित करती हैं, अना की लहरें उन्हीं अंतरालों को न केवल संकुचित करती हैं, बल्कि उन्हें अस्तित्वहीन मानती हैं।

मौन संवाद:

मनुष्यों के बीच सृष्टि की शुरुआत से संवाद करने का तरीका प्रचलित है। ध्वनि की तरंगें, जिनके अर्थ निश्चित किए जाते हैं, श्रोताओं को सूचित करती हैं। यह तरीका उसी आदान-प्रदान की परछाई है जो 'आत्मा के अहंकार की तरंगों' (waves of Self-ego) के बीच होता है। यह देखा गया है कि मूक व्यक्ति अपने होंठों की हल्की हलचल से सब कुछ कह देता है, और समझने योग्य सभी लोग उसे समझ जाते हैं। यह तरीका भी पहले तरीके का प्रतिबिंब है। जानवर बिना आवाज के एक-दूसरे से सूचित होते हैं। यहाँ भी 'आत्मा के अहंकार की तरंगों' (waves of Self-ego) काम करती हैं। पेड़ एक-दूसरे से संवाद करते हैं। यह संवाद केवल आमने-सामने के पेड़ों में नहीं होता, बल्कि दूर-दराज के पेड़ों में भी होता है, जो हजारों मील की दूरी पर स्थित होते हैं। यही नियम अणुओं और अन्य ठोस पदार्थों में भी लागू होता है। कंकड़ों, पत्थरों, मिट्टी के कणों में भी विचारों का आदान-प्रदान इसी प्रकार होता है।

एक अवचेतन:

नबियों और आध्यात्मिक शक्तियों वाले मनुष्यों के असंख्य अनुभव इस बात के प्रमाण हैं कि पूरे ब्रह्मांड (ब्रह्मांड) में एक ही अवचेतन सक्रिय है। इसके माध्यम से गुप्त और प्रकट (ग़ैब व शहूद) की प्रत्येक तरंग दूसरी तरंग के अर्थों को समझती है। चाहे ये दोनों तरंगें ब्रह्मांड (ब्रह्मांड) के दो छोरों पर स्थित हों। ग़ैब व शहूद की दूरदृष्टि और अर्थवत्ता ब्रह्मांड (ब्रह्मांड) की जीवन-शिरा है। हम इस जीवन-शिरा में, जो स्वयं हमारी अपनी जीवन-शिरा भी है, चिंतन और ध्यान देकर अपने ग्रह और दूसरे ग्रहों के चिह्नों और परिस्थितियों का अनावरण कर सकते हैं। मनुष्यों और पशुओं की कल्पनाएँ,

www.ksars.org

जिन्नों और फ़रिश्तों (फ़रिश्तों) की गतिशीलता और स्थिरता, वनस्पतियों और निर्जीव पदार्थों की आंतरिक गतिविधियों को जान सकते हैं।

लगातार ध्यान देने से ज़ेहन ब्रह्मांडीय अवचेतन में विलीन हो जाता है और हमारे अस्तित्व की कृत्रिम परत, *अना* की पकड़ से मुक्त होकर, आवश्यकता के अनुसार हर चीज़ को देखता, समझता और ज़ेहन में सुरक्षित कर देता है।

आदर्श समाज

पशुओं में जीवन जीने के मूल्य मानव की सामाजिक जीवनशैली से काफी हद तक समानता रखते हैं। यह समानता हमें पशुओं की बौद्धिक जागरूकता का प्रमाण प्रदान करती है। इसकी कुछ उदाहरण प्रस्तुत की जा रही हैं।

इसकी एक उदाहरण पृथ्वी के कीटों के परिवार से "शहद की मक्खी" है। शहद की मक्खियाँ (HONEY BEES) अपनी पूरी परिवार या एक कॉलोनी में मोम के हजारों छोटे-छोटे आठ कोने वाले कमरों वाले एक छत्ते में रहती हैं। इनमें से एक रानी होती है। प्रजा में लगभग दो हजार मक्खियाँ होती हैं। इनके अलावा मादा मक्खियाँ होती हैं, जिनकी संख्या एक छत्ते में करीब बीस हजार के आसपास होती है। कामकाजी मक्खियाँ मादा होने के बावजूद अंडे देने की क्षमता नहीं रखतीं।

रानी मक्खी अन्य सभी मक्खियों से अधिक आकर्षक और विशिष्ट होती है। वह निरंतर छत्ते के भीतर रहती है, जहाँ वह प्रत्येक दिन लगभग एक से दो हजार अंडे देती है। इन अंडों का वर्गीकरण दो श्रेणियों में किया जाता है: पूर्ण अंडे (FERTILIZED EGGS) और अपूर्ण अंडे (UNFERTILIZED EGGS)। पूर्ण अंडों से रानी और कार्यकर्ता मक्खियाँ उत्पन्न होती हैं, जबकि अपूर्ण अंडों से नर मक्खियाँ विकसित होती हैं। रानी की सेवा में कुछ विशेष मक्खियाँ सदैव तत्पर रहती हैं, जो उसकी देखभाल में पूरी तरह समर्पित होती हैं। रानी की औसत आयु तीन वर्ष होती है। जब तक रानी अपने कर्तव्यों को संपादित करती रहती है, छत्ते की संरक्षा और प्रबंधन में दक्षता बनाए रखने हेतु रक्षक मक्खियाँ उसकी सेवा करती रहती हैं। हालांकि, जैसे ही रानी अपने कार्यों में लापरवाह हो जाती है या उसकी आयु में वृद्धि होती है, तो ये रक्षक मक्खियाँ एकत्रित होकर रानी पर आक्रमण करती हैं। वे उसे डंक मारकर उसकी मृत्यु का कारण बनती हैं। रानी की मृत्यु की सूचना पूरे कॉलोनी को प्रसारित करने के लिए कुछ मक्खियाँ एक विशिष्ट ध्वनि उत्पन्न करती हैं और इस ध्वनि के साथ छत्ते के चारों ओर कई चक्कर लगाती हैं। रानी का जीवनकाल प्राकृतिक रूप से तीन वर्षों तक सीमित होता है।

नई रानी की नियुक्ति के लिए, कार्यकर्ता मक्खियाँ तीन दिन पुराने पूर्ण अंडों को खोजकर लाती हैं। कुछ दिनों बाद, इन अंडों से कीड़े निकल आते हैं, जिन्हें कार्यकर्ता मक्खियाँ फूलों से एकत्रित किया हुआ शहद और फूलों का रस खिलाती हैं। कुछ समय बाद, इन कीड़ों या लार्वा पर एक आवरण चढ़ जाता है, जिसे प्यूपा कहा जाता है। मक्खियाँ प्यूपा के कक्षों को मोम से बंद कर देती हैं। पंद्रह दिनों बाद, प्यूपा पूर्ण विकसित मक्खी का रूप धारण कर लेता है और मोम हटाकर कक्ष से बाहर निकल आता है। इनमें से एक

www.ksars.org

को रानी के रूप में नियुक्त किया जाता है, जबकि बाकी रानी मक्खियाँ उड़ जाती हैं और अपनी अलग कॉलोनी बनाती हैं।

कार्यकर्ता मक्खियाँ रानी से थोड़ी छोटी होती हैं। कार्यकर्ता मक्खियों का औसत जीवनकाल दो महीने होता है और यह दो महीने की संक्षिप्त जीवन यात्रा पूरी मेहनत और संघर्ष के साथ बिताते हैं। अंडों से निकलने के तीसरे दिन से कार्यकर्ता मक्खियाँ अपना कार्य शुरू कर देती हैं। ये मक्खियाँ छत्ता तैयार करती हैं। कार्यकर्ता मक्खियों में मोम उत्पन्न करने वाले ग्रंथियां होती हैं, जो मोम का उत्पादन करती हैं, और यह मोम छत्ता बनाने में काम आता है। यह छत्ता कई भागों में विभाजित होता है। छत्ते का मध्य भाग, जो अन्य सभी कक्षों से बड़ा और हवादार होता है, रानी के लिए निर्धारित होता है। छत्ते में नर मक्खियों के लिए सैकड़ों कक्ष होते हैं। मादा मक्खियों के अनेकों घरों के अलावा, शहद संग्रहण के लिए कई गोदाम होते हैं और फूलों के पराग के लिए अलग गोदाम होते हैं, जो मक्खियों के भोजन का हिस्सा होते हैं।

शहद का निर्माण:

सभी मखियाँ के लिए आहार की व्यवस्था करना उनकी कार्यकर्मी मखियों की मुख्य जिम्मेदारी होती है। ये मखियाँ छत्ते से फूलों के रस की खोज में निकल पड़ती हैं, और फिर उस रस से शहद का निर्माण करती हैं। मखियाँ विभिन्न फूलों पर अवतरित होती हैं, और फूलों की आंतरिक सतह पर स्थित हल्की मिठास को अपनी जीभ से रगड़ती हैं। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, मिठास जीभ पर स्थानांतरित हो जाती है और यह मखियाँ के पेट के समान विशेष थैली (HONEY STOMACH) में संचित होती है। यह थैली फूलों के रस से भर जाती है। कार्य की समाप्ति के पश्चात, मखियाँ फूलों का रस इकट्ठा करके अपने पिछले पैरों में स्थित प्राकृतिक टोकरियों में संकलित कर लेती हैं। इसके बाद, मखियाँ छत्ते में लौट आती हैं, जहां वे मोम के विशेष खानों में प्रवेश करती हैं और उस रस को (ज़री गुल) गोदामों में स्थानांतरित कर देती हैं। इस प्रक्रिया के दौरान, फूलों का रस जो पेट में संचित रहता है, कई रासायनिक परिवर्तनों से गुजर कर शहद में परिवर्तित हो जाता है। इस शहद को गोदामों में सुरक्षित रूप से संग्रहीत किया जाता है और फिर इसे मोम से सील कर दिया जाता है, ताकि शीतकाल में मखियाँ इसका उपयोग कर सकें। फिर भी, मानवों द्वारा शहद की चोरी की जाती है, और मखियाँ बिना किसी रुकावट के पुनः उसी उत्साह और परिश्रम के साथ शहद का निर्माण करने में जुट जाती हैं।

नर मखियाँ अत्यंत आलसी होती हैं। ये रानी के पति के कर्तव्यों का पालन करती हैं। जब रानी परिपक्व हो जाती है, तो वह अपने छत्ते से उड़ जाती है। नर मखियाँ तुरंत उसका पीछा करती हैं और इनमें से एक नर मख़ी रानी को गर्भवती करने में सफल हो जाती है। सेक्स के अलावा, नर मखियाँ कोई अन्य काम नहीं करतीं। रानी के अंडे देने के बाद नर मखियाँ अपनी स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं।

समझ और बुद्धिमत्ता

गर्मी के मौसम में अत्यधिक तापमान के कारण मक्षियों के छत्ते में मोम के पिघलने का संकट उत्पन्न हो सकता है, किंतु यह लघु कीड़ा अपनी सूझबूझ के कारण अपने निवास स्थान को विध्वंस से बचा लेता है।

www.ksars.org

यह प्रक्रिया इस प्रकार होती है कि गर्मी के दिनों में समस्त श्रमिक मखियाँ छत्ते के प्रत्येक कोश के किनारों पर इस प्रकार स्थित होती हैं कि उनके पंख कोशों से बाहर रहते हैं। तत्पश्चात, पंखों की तीव्र गति से हवा का संचार किया जाता है, जिससे वायुदाब में परिवर्तन उत्पन्न होता है और ठंडी हवा अंदर भेजी जाती है, जिससे तापमान में गिरावट आती है और मखियों के निवास स्थान को अत्यधिक गर्मी से सुरक्षा प्राप्त होती है। परमेश्वर ने मखियों को यह विशिष्ट क्षमता प्रदान की है कि वे ऐसे फूलों का रस नहीं चूसती, जो रोगजनक या विषैला हो। यह सदैव ऐसे फूलों का चयन करती है, जिनसे पृथ्वी से पोषक तत्वों से भरपूर, स्वास्थ्यवर्धक रस प्राप्त होता है। यही कारण है कि शहद अनेकों रोगों का उपचार प्रदान करता है।

बुद्धिमान चींटी:

चींटी जैसी अत्यंत सूक्ष्म जीव की बौद्धिक क्षमता का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है। एक बार एक चींटी ने हज़रत सुलैमान (अ.स.) को अपने सैन्य का निमंत्रण दिया। हज़रत सुलैमान (अ.स.) एक प्रतिष्ठित पैगंबर और महान सम्राट थे, जिनके शासन में मनुष्यों के अलावा जिन्नात, पक्षी, जानवर, और दरिंदे भी शामिल थे। हज़रत सुलैमान (अ.स.) को वायुमंडल और मौसमों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त था। हज़रत सुलैमान (अ.स.) ने उस चींटी को अपनी हथेली पर उठाकर पूछा, "बताओ, तुम्हारी सल्तनत विस्तृत है या मेरी?"

चींटी ने उत्तर दिया, "किसकी सल्तनत सर्वश्रेष्ठ है, यह केवल परमेश्वर को ज्ञात है, लेकिन मैं यह जानती हूँ कि इस समय मेरा तख़्त सुलैमान के हाथों में है।

फरमान शासक चींटी:

हज़रत सुलैमान (अ.स.) हज़रत दाऊद (अ.स.) के सबसे छोटे पुत्र थे। 965 ईसा पूर्व में हज़रत दाऊद (अ.स.) के बाद हज़रत सुलैमान (अ.स.) ने गद्दी संभाली और लगभग चालीस वर्षों तक शासन किया। हज़रत सुलैमान (अ.स.) को परमेश्वर द्वारा सभी प्राणियों की भाषाओं को समझने का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त था। एक बार हज़रत सुलैमान (अ.स.) अपनी विशाल सेना के साथ यात्रा कर रहे थे। उनकी सेना में जिन्नात, मनुष्य, और पशु-पक्षी सभी शामिल थे, और सेना की अनुशासन और व्यवस्था इतनी सुदृढ़ थी कि कोई भी अपने पद या रैंक के अनुसार असंतुलन नहीं उत्पन्न कर सकता था। सभी सैनिक अपनी महान नेता की गरिमा से प्रेरित होकर पूरी व्यवस्था के साथ आगे बढ़ रहे थे, जब वे एक घाटी में पहुँचे, जहाँ असंख्य चींटियाँ निवास करती थीं। चींटियों के शासक ने इस विशाल सैन्य समूह को देखकर अपनी प्रजा से कहा, "तुम शीघ्रता से अपने बिलों में प्रवेश करो। सुलैमान और उनकी सेना को यह भली-भाँति ज्ञात नहीं कि तुम इतनी बड़ी संख्या में घाटी की भूमि पर रेंग रही हो। वे अनजाने में तुम्हें रौंद सकते हैं, क्योंकि उनके घोड़े और सवारों के कदमों के नीचे कितनी चींटियाँ आ सकती हैं, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।"

परमेश्वर ने इस घटना को इस प्रकार प्रस्तुत किया है:

"और निःसंदेह, हमने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया और दोनों ने कहा, 'सारी प्रशंसा उस परमेश्वर के लिए है, जिसने हमें अपने बहुत से ईमानदार बंदों पर श्रेष्ठता प्रदान की, और दाऊद का

www.ksars.org

उत्तराधिकारी सुलैमान हुआ।' सुलैमान ने कहा, 'हे लोग! हमें पक्षियों की भाषाएँ सिखाई गई हैं और हमारे लिए हर वस्तु सुलभ कर दी गई है। निःसंदेह, यह एक खुला हुआ अनुग्रह है।' और सुलैमान के लिए जिन, इंसान और पक्षियों का एक बड़ा लश्कर इकट्ठा हुआ, और वे एक क्रमबद्ध और सुसंगत व्यवस्था में आगे-पीछे चल रहे थे। यहाँ तक कि वे वादी-ए-नमल (चींटी की घाटी) में पहुंचे, तो एक चींटी ने कहा, 'हे चींटियों! अपने-अपने घरों में प्रवेश करो, ऐसा न हो कि सुलैमान और उनका लश्कर तुम्हें रौंद डालें।' चींटी की यह बात सुनकर हज़रत सुलैमान (अ.स.) हंसी में पड़ गए और कहा, 'हे पालनहार! मुझे यह क्षमता दे कि मैं तेरा आभार व्यक्त करूँ, जैसा तूने मुझे और मेरे माता-पिता को इनाम दिया, और यह कि मैं अच्छे कार्य करूँ, जो तेरे दृष्टि में स्वीकार्य हों, और मुझे अपनी कृपा से अपने नेक बंदों में सम्मिलित कर।'"

चींटी जैसी सूक्ष्म जीव का अपना एक सुव्यवस्थित सामाजिक तंत्र होता है। इस छोटे से जीव-जंतु में वही सभी जीवन के व्यवस्थाएँ मौजूद हैं, जो इंसान की ज़िन्दगी में पाई जाती हैं। चींटियों का परिवार हजारों सदस्यों से बना होता है, और इसमें विभिन्न आकार, रूप और रंग की चींटियाँ होती हैं। पूरे परिवार में एक रानी (क्वीन) होती है, जिसकी सरकार पूरी बस्ती में चलती है और हर सदस्य उसके आदेश का पालन करता है। इस समाज में कलाकार चींटियाँ, अभियंता और बागबान भी होते हैं, और उनकी अपनी सेना भी होती है। इनमें बलिदान और समर्पण का भावना अत्यधिक प्रबल होता है। सभी सदस्य अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाते हैं। चींटियों में नर (male) और मादा (female) दोनों होते हैं, लेकिन रानी के अलावा कोई और चींटी प्रजनन का कार्य नहीं कर सकती। यदि रानी मर जाती है, तो न तो किसी नई रानी की नियुक्ति होती है जैसे शहद की मक्खी में होती है, बल्कि वे दूसरे कॉलोनी में मिल जाती हैं। चींटियों का कॉलोनी एक उच्चतम स्तर के कार्य विभाजन का उदाहरण प्रस्तुत करती है। विभिन्न आकार और रूप वाली चींटियाँ अलग-अलग कार्यों को सम्पन्न करती हैं, और सभी कर्तव्यों को पूरी ईमानदारी से निभाती हैं। श्रमिक चींटियाँ भोजन संग्रहण और नई पीढ़ी की देखभाल करती हैं, जबकि श्रमिक मजदूरों का कार्य मालवाहन करना होता है। नर चींटियाँ प्रजनन का कार्य करती हैं और उनका अस्तित्व तब तक बना रहता है, जब तक रानी गर्भवती न हो जाए। इसके बाद ये धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं।

शहद से भरी चींटियाँ:

चींटियों की एक विशिष्ट जाति "शहद की चींटी" (Honey Ant) होती है, जो फूलों का रस अपने पेट में संचित करती है और बाद में अपनी वासस्थली में उलटी लटक जाती है। अन्य चींटियाँ, विशेष रूप से रानी और उसके संतान, इस रस को चाटकर पोषित होती हैं, और यह असाधारण प्राणी बलिदान और आत्मीयता की अभिव्यक्ति के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखती है, जब तक कि शहद समाप्त न हो जाए।

बागबान चींटियाँ:

एक अन्य विशेष प्रकार की चींटी "बागबान चींटी" होती है, जो बागवानी में विशेषज्ञता रखती है और कवक (फफूंदी) के बग़ीचे लगाती है। ये अत्यधिक दक्षता और कौशल से बग़ीचों की उन्नति और देखभाल करती हैं। इन बग़ीचों को मकानों की बालकनियों तथा अन्य स्थानों पर व्यवस्थित किया जाता है। इन बग़ीचों में

www.ksars.org

फल की प्रजातियाँ उगाई जाती हैं, जो चींटियों के लिए पोषण का स्रोत होती हैं और पूरी कॉलोनी के सभी सदस्य इस संसाधन का उपयोग करते हैं।

www.ksars.org

मजदूर चींटियाँ:

मजदूर चींटियाँ अनाज इकट्ठा करती हैं और इन्हें अपनी कालोनियों के भंडारण कक्षों में संचित करती हैं, जिनका उपयोग आवश्यकता पड़ने पर किया जाता है। ये चींटियाँ अत्यधिक परिश्रमशील होती हैं, और अपनी शारीरिक क्षमता से कई गुना अधिक वजन को ले जाकर लाती हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि इनका कार्य में प्रतिबद्धता और बलिदान की भावना अत्यधिक प्रबल होती है।

इंजीनियर चींटियाँ:

इंजीनियर चींटियाँ अपनी कला और कौशल का उच्चतम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। ये एक बड़ा कक्ष बनाती हैं, जिसे शाही महल के रूप में उपयोग किया जाता है। यह कक्ष अत्यंत स्वच्छ रखा जाता है, और यहाँ रानी रहती है। श्रमिक और कर्मचारी रानी की सेवा में लगे रहते हैं। शाही महल गैलरीयों के माध्यम से सभी दिशाओं से जुड़ा होता है, जिनमें या तो खाद्य सामग्री का भंडारण होता है या श्रमिकों के रहने की व्यवस्था होती है। इनका किला इतना मजबूत होता है कि न तो पानी का कोई प्रभाव होता है और न ही तीव्र गर्मी से यह प्रभावित होते हैं।

दरज़ी चींटियाँ:

चींटियों की एक किस्म होती है, जो अधिकतर जंगलों में रहती हैं और वृक्षों पर निवास करती हैं। इनके श्रमिक अत्यधिक कौशल से पत्तों का कोकून बनाकर उसमें अंडों से निकलने वाले लार्वा को सुरक्षित रखते हैं, ताकि ये पक्षियों के हमलों से बच सकें। ये चींटियाँ सिलाई करने में इतनी निपुण होती हैं कि इनकी जोड़ियाँ किसी विशेषज्ञ दरज़ी के काम की तरह दिखती हैं।

विज्ञानज्ञ चींटियाँ:

एक प्रकार की चींटियाँ सैनिकों जैसी होती हैं, जो अधिकतर घुमंतू रहती हैं और इनके तरीके सैनिकों की जीवनशैली से मिलते-जुलते होते हैं। ये चींटियाँ एक काफ़िले के रूप में यात्रा करती हैं, जिसमें रानी अपने सहचरों के मध्य होती है। यह काफ़िला दिनभर गतिमान रहता है, और जो कीड़ा इनके मार्ग में रुकावट डालता है, उसे रक्षात्मक चींटियाँ नष्ट कर देती हैं। रात के समय ये एक पेड़ पर खंभे के रूप में इकट्ठी हो जाती हैं, जहाँ रानी और उसके सहचरी मध्य में होते हैं। इनकी इकट्ठा होने की प्रक्रिया इतनी दिलचस्प होती है कि वे मध्य में रास्ता छोड़ देती हैं, ताकि हवा का संचरण हो सके, जो उनके श्वसन (respiration) के वैज्ञानिक सिद्धांतों से अवगत होने का संकेत है।

समय-स्थान से स्वतंत्र चींटियाँ:

www.ksars.org

चींटियों की एक किस्म में यह असाधारण क्षमता होती है कि वे हवा में घुलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच सकती हैं। वैज्ञानिकों के कई प्रयोगों से यह पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुका है कि ये चींटियाँ हवा में घुलने की क्षमता रखती हैं।

जब अंडे देने का समय आता है, तो रानी का शरीर बड़ा हो जाता है। इसके बाद, सहचरी और श्रमिक रानी की अधिक सेवा करने लगते हैं। रानी के अंडे देने के बाद, एक नई आबादी का निर्माण होता है। रानी छह से सात दिनों में 20 से 30 तक अंडे देती है, जिन्हें श्रमिक बड़ी तत्परता से रानी के शरीर से अलग करते हैं और फिर इन अंडों को एक स्थान पर सुरक्षित रख दिया जाता है। कुछ दिनों में इन अंडों से छोटे कीड़े निकलते हैं, जो धीरे-धीरे वयस्क चींटियों का रूप धारण कर लेते हैं। जहां तक रानी का संबंध है, लगभग आधे दर्जन अंडे ऐसे होते हैं, जिनकी देखभाल श्रमिक विशेष रूप से करते हैं। इनमें से पांच-छह नई रानियाँ निकलती हैं, जिसके परिणामस्वरूप पुरानी आबादी के सदस्य छह या सात हिस्सों में बंटकर रानी के चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं। प्रत्येक रानी के श्रमिक उसकी आज्ञाकारिता और सेवा में सर्वोत्तम प्रयास करते हैं।

यह छोटा सा कीट (insect) इतनी व्यवस्थित और सहयोगपूर्ण तरीके से कैसे कार्य करता है, यह एक अद्भुत उदाहरण है। इसे अनुशासन और आपसी सहयोग का तरीका प्रकृति (inspired) प्रेरित करती है। इस अनुशासन को किसी भी तरह से बुद्धि और चेतना के दायरे से बाहर नहीं कहा जा सकता।

दूत पक्षी

आकाशीय पुस्तकों में हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) और मलिका-ए-सबा (सबा की रानी) का एक प्रसंग वर्णित है, जिसमें एक पक्षी की बुद्धिमत्ता का उल्लेख है।

हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल और अद्वितीय दरबार में, केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि जिन्नात और पशु भी दरबारी सेवाओं के लिए उपस्थित रहते थे और अपनी जिम्मेदारियों को बेमोल निष्ठा से निभाते थे।

सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का दरबार अत्यधिक वैभव और प्रतिष्ठा से भरा हुआ था।

एक दिन हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने हुदहुद (एक पक्षी) को अनुपस्थित पाया और आदेश दिया, "मैं हुदहुद को उपस्थित नहीं पाता। क्या वह वास्तव में अनुपस्थित है? यदि उसकी अनुपस्थिति का कोई ठोस कारण नहीं है, तो मैं उसे कठोर दंड दूँगा, या उसे मार डालूँगा, या वह अपनी अनुपस्थिति का कोई उचित कारण बताए।"

थोड़ी ही देर में हुदहुद पक्षी उपस्थित हो गया। हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने उसकी जांच की और हुदहुद ने उत्तर दिया, "मैं एक ऐसी सूचना लाया हूँ, जिसे आप नहीं जानते। वह यह है कि यमन के क्षेत्र में सबा की मलिका रहती है और परमेश्वर ने उसे पूरी सम्पत्ति दी है। उसका तख़्त (सत्ता का सिंहासन) अपनी विशेषताओं के अनुसार महान और प्रसिद्ध है। मलिका और उसकी क़ौम सूर्य की पूजा करती है, और शैतान

www.ksars.org

ने उन्हें गुमराह कर दिया है, वे परमेश्वर की एकता का इन्कार करते हैं।" हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कहा, "अब तेरे सच और झूठ का परीक्षण किया जाएगा। यदि तू सच बोल रहा है, तो मेरा यह पत्र ले जा और इसे सबा तक पहुँचाकर देख, वे इस पर क्या विचार करते हैं।" हुदहुद यह पत्र लेकर सबा की ओर बढ़ा और रास्ते में ही यह पत्र मलिका के समक्ष गिरा दिया। मलिका ने पत्र को उठाया और पढ़ा। उसने अपने दरबारीयों से कहा, "अभी मेरे पास एक पत्र आया है, जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की ओर से है, और यह परमेश्वर के नाम से शुरू होता है, जो अत्यन्त दयालु और करुणाशील है। तुमसे हमारी खिलाफत या गर्व नहीं होना चाहिए, और तुम मेरे पास परमेश्वर के आदेशों के अनुसार आओ।"

मलिका ने पत्र पढ़कर कहा, "हे मेरे दरबारीयों! तुम जानते हो कि मैं महत्वपूर्ण मामलों में तुम्हारे बिना सलाह के कोई निर्णय नहीं लेती, इसलिए मैं तुमसे परामर्श चाहती हूँ, मुझे क्या करना चाहिए?" दरबारीयों ने उत्तर दिया, "जहाँ तक डर का सवाल है, उसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम अपनी शक्तिशाली सेना और युद्धकला में पूरी तरह सक्षम हैं। और जहाँ तक परामर्श की बात है, आप जो भी निर्णय लें, हम आपके आदेश के पालन में पूरी तरह से तैयार हैं।

रानी ने कहा, "जिस असाधारण तरीके से सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का संदेश हम तक पहुँचा है, वह हमें यह सीख देता है कि सुलैमान के मामले में सावधानीपूर्वक कोई कदम उठाया जाए। मेरा इरादा यह है कि मैं कुछ दूत भेजूँ, और वे सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए उत्कृष्ट और बहुमूल्य उपहार लेकर जाएँ।"

जब रानी-ए-सबा के दूत उपहार लेकर हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में पहुँचे, तो उन्होंने कहा, "तुम अपने उपहार वापस ले जाओ और अपनी रानी से कहो कि यदि उसने मेरा संदेश स्वीकार नहीं किया, तो मैं एक विशाल सेना के साथ सबा के निवासियों तक पहुँचूँगा, और तुम इसकी रक्षा और प्रतिरोध करने में असमर्थ रहोगे।"

दूत ने लौटकर रानी-ए-सबा के समक्ष पूरी स्थिति रखी और हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की महानता और वैभव का जो दृश्य उसने देखा था, उसे एक-एक शब्द में बयान किया। उसने बताया कि उनकी सत्ता केवल मनुष्यों पर ही नहीं है, बल्कि जिन्नात और पशु भी उनके आज्ञाकारी और वश में हैं।

रानी ने जब ये सभी विवरण सुने, तो उसने यह निर्णय लिया कि हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के निमंत्रण को स्वीकार करना ही उचित है। अतः वह उनकी सेवा में प्रस्थान कर गई। हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को यह ज्ञात हो गया कि रानी-ए-सबा उनकी सेवा में आ रही हैं। उन्होंने अपने दरबारियों को संबोधित कर कहा, "मैं चाहता हूँ कि रानी-ए-सबा के यहाँ पहुँचने से पहले उनका राजसिंहासन इस दरबार में उपस्थित हो।"

लहरों पर यात्रा:

www.ksars.org

एक विशालकाय जिन्न ने निवेदन किया, "मैं आपके दरबार विसर्जित होने से पूर्व ही वह सिंहासन प्रस्तुत कर सकता हूँ।" इस पर, एक मनुष्य, जो आकाशीय ग्रंथ का ज्ञान रखता था, ने कहा, "इससे भी शीघ्र, आपकी पलक झपकने से पहले, मैं वह सिंहासन आपके समक्ष उपस्थित कर सकता हूँ।"

हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने दृष्टि फेरकर देखा तो दरबार में रानी सबा का सिंहासन विद्यमान था। सिंहासन के आने के उपरांत, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने आदेश दिया कि उसकी बनावट में कुछ परिवर्तन कर दिया जाए। उन्होंने कहा, "मैं यह परीक्षण करना चाहता हूँ कि रानी इसे पहचान पाती हैं और सत्य की ओर उन्मुख होती हैं अथवा नहीं।"

कुछ समय पश्चात्, रानी सबा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित हुईं। जब दरबार में प्रवेश किया, तो उनसे पूछा गया, "क्या यह तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है?" प्रज्ञावान रानी ने उत्तर दिया, "ऐसा प्रतीत होता है मानो यह वही हो।" इसके साथ ही रानी ने कहा, "मुझे आपकी अप्रतिम और अद्वितीय सामर्थ्य का पूर्व में ही बोध हो चुका था, इसी कारण मैं आज्ञाकारी होकर आपकी सेवा में उपस्थित हुई हूँ। अब इस सिंहासन का यह अद्भुत और चमत्कारिक प्रकरण आपकी अतुलनीय शक्ति का नवीनतम प्रमाण है, और हमारी अधीनता के लिए एक और सुदृढ़ प्रेरणा। इसीलिए हम आपकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं।"

हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने जिन्नों और मानव अभियंताओं को निर्देश दिया कि वे एक भव्य महल का निर्माण करें। यह महल अपनी काँच जैसी पारदर्शिता, स्थापत्य की ऊँचाई, और विशिष्ट शिल्प-कला के कारण अद्वितीय था। महल में प्रवेश हेतु जो विशाल प्रांगण निर्मित किया गया, उसमें एक विशाल सरोवर खोदा गया, जिसे जल से परिपूर्ण किया गया। तत्पश्चात्, स्वच्छ काँच और क्रिस्टल के टुकड़ों से ऐसा दैदीप्यमान फर्श निर्मित किया गया कि दर्शक भ्रमित हो उठता और उसे प्रतीत होता मानो उस प्रांगण में स्वच्छ जल प्रवाहित हो रहा है।

रानी सबा से निवेदन किया गया कि वे इस शाही महल में निवास करें। जब रानी महल के समीप पहुँचीं, तो उन्हें प्रांगण में जल प्रवाह का भ्रम हुआ। इसे देखकर उन्होंने जल में प्रवेश हेतु अपने वस्त्रों को पिंडलियों तक उठा लिया। इस पर सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कहा, "यह आवश्यक नहीं है। यह जल नहीं है, अपितु महल का समस्त प्रांगण और उसका फर्श पारदर्शी काँच से निर्मित है।"

शर्म से रानी की आँखें झुक गईं। यह उसकी समझ और बुद्धिमत्ता पर एक प्रबल आघात था। उसके अवचेतन में छिपी हुई घमंड और बड़ाई ने ग्लानि के कारण सिर झुका लिया। रानी ने एक लज्जित और ग्लानि से भरे व्यक्ति की तरह सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के समक्ष और परमेश्वर की बारगाह में स्वीकार किया:

"हे पालनहार! आज तक मैं परमेश्वर के सिवा की पूजा करके अपने आत्मा पर बड़ा अन्याय करती रही। परंतु अब, मैं सुलैमान के साथ होकर केवल एक परमेश्वर पर विश्वास करती हूँ, जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड का पालनहार है।"

www.ksars.org

हजारों उदाहरणों में से प्रस्तुत कुछ उदाहरण यह पूर्ण रूप से प्रमाणित करते हैं कि मनुष्य की भाँति अन्य समस्त सृष्टि, जैसे पक्षी, पशु, जंगली जीव, जिन्नात और रेंगने वाले जीव भी बुद्धि और चेतना रखते हैं।

www.ksars.org

आविष्कार का नियम

परमेश्वर ने फरमाया: **"हमने दाऊद और सुलैमान को एक ऐसा ज्ञान प्रदान किया जो परमेश्वर की ओर से प्रेरित (inspired) हुआ है।"**

प्रेरणा (inspiration) चाहे सुनकर हो या किसी दृश्य को देखकर, हर प्रकार से वह परमेश्वर की ओर से ही होती है। चूंकि परमेश्वर के पैगंबरों पर ज्ञान वह्य (revelation) के माध्यम से उतरता है, इसलिए जब परमेश्वर की ओर से कोई विचार मन में आता है, तो वह परमेश्वर का ही ज्ञान होता है।

विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कार, जैसे हवाई जहाज, कंप्यूटर, टेलीविज़न, टेलीफोन आदि का आविष्कार भी तब संभव हुआ जब लोगों को परमेश्वर की ओर से इन नई-नई खोजों और आविष्कारों का ज्ञान प्रेरित किया गया। क्योंकि ज्ञान के बिना किसी भी वस्तु का अस्तित्व विचारणीय नहीं होता।

मनुष्य को वही चीज़ प्राप्त होती है जिसकी उसे तलाश होती है। परमेश्वर के यहां यह विशेषता नहीं कि वह परमेश्वर को मानता है या नहीं।

परमेश्वर की परंपरा:

नियम यह है कि मनुष्य अपनी **क्षमता** के साथ **तन**, **मन**, **धन** से किसी वस्तु की **खोज** में लग जाए और उसे अपने जीवन का **उद्देश्य** बना ले, तो वह वस्तु उसे अवश्य प्राप्त होती है। यह परमेश्वर की **परंपरा (सुनत)** है। यह पहले भी जारी थी, अब भी जारी है, और भविष्य में भी जारी रहेगी। इसी को हमारे **विद्वानों (बुज़ुर्गों)** ने दो शब्दों में व्यक्त किया है: **"जो खोजेगा, वही पाएगा।"**

बहुत से लोगों ने धरती के भीतर मौजूद **धातु यूरेनियम (Uranium)** की **खोज** शुरू की। अन्य लोगों ने उनका **मज़ाक** उड़ाया, लेकिन उन्होंने अपनी **लगन** से इस काम को जारी रखा। अंततः उन्होंने **यूरेनियम** को खोज निकाला। यही वह धातु है जो **परमाणु बम** बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क़ुरआन और अन्य **आसमानी किताबों** में परमेश्वर ने **हज़रत सुलैमान (अ.स.)** के वाकये में केवल एक **कहानी** प्रस्तुत नहीं की है ताकि **कहानियां** सुनाकर हमें **प्रभावित** करे। परमेश्वर हमें क्या **प्रभावित** करेगा? हमारी **हैसियत** और **वास्तविकता** ही क्या है? परमेश्वर का ज्ञान **अनंत** है। परमेश्वर का **उद्देश्य** यह है कि हम दूसरों को **प्रगति** करते देख स्वयं भी **आगे बढ़ें**। इस कहानी का **उद्देश्य** यह है कि हम भी **सही मार्गदर्शन** को अपनाएं। परमेश्वर ने इसमें **जिन्नात** का भी उल्लेख किया है और यह बताया है कि **जिन्नात** मनुष्यों के **अधीन** आ सकते हैं। यदि लोग **आसमानी किताबों** में उस **ज्ञान** को खोजें, जिसे **इल्म अल-किताब (ज्ञान की पुस्तक)** कहा गया है, तो निश्चय ही उन्हें वह ज्ञान प्राप्त होगा, जो मनुष्य को न केवल **जिन्नात** बल्कि पूरे **ब्रह्मांड** पर **श्रेष्ठता** प्रदान करता है।

www.ksars.org

अकालिकता Timelessness:

कथाफोड़वा का देर से आना और सुलैमान (अ.स.) को मलिका-ए-सबा के बारे में सूचना देना, और यह बताना कि वह और उसकी क़ौम सूर्य पूजा करती है और कथाफोड़वा का संदेश लेकर जाना, ये सभी बातें कुछ विशेष अर्थ से भरी हुई हैं। इन बातों में परमेश्वर का ज्ञान (हिकमत) छिपा हुआ है।

पहली हिकमत (ज्ञान) यह है कि सुलैमान (अ.स.), जो इंसान थे, इंसानों, जिन्नों, पक्षियों, जानवरों और दरिंदों पर शासन करते थे।

दूसरी हिकमत (ज्ञान) यह है कि इनमें से कोई भी बग़ावत करने की हिम्मत नहीं करता था, और अगर बग़ावत करता तो उसे सज़ा दी जाती, जैसा कि सुलैमान (अ.स.) ने कथाफोड़वा के लिए कहा था।

तीसरी हिकमत (ज्ञान) यह है कि इतने बड़े विशाल सेना के बावजूद, जिसमें जिन्न, इंसान, पक्षी आदि शामिल थे, परमेश्वर उन्हें सारी सेना के भोजन के लिए रज़क (रज़क) प्रदान करता था। इस क़िस्से में यह भी बताया गया है कि सुलैमान (अ.स.) की सेना में एक ऐसा जिन्न भी था जो एक या दो घंटे में मलिका-ए-सबा का सिंहासन यमन से बैतुल मुक़द्दस ला सकता था। यमन और बैतुल मुक़द्दस के बीच की दूरी लगभग डेढ़ हजार मील है।

इस क़िस्से से हमें यह भी पता चलता है कि मनुष्यों की पहुँच जिनात से भी अधिक है क्योंकि वह किताब के ज्ञान से संपन्न होते हैं, यहाँ तक कि एक ऐसा बंदा ज्ञान के बल पर मलिका का तख़्त एक ही क्षण में ले आया। परमेश्वर ने इस बात पर ज़ोर दिया कि आकाशी किताबों में वह ज्ञान मौजूद है जिससे मनुष्य हर प्रकार से लाभ उठा सकता है। इसमें नबी होने की कोई शर्त नहीं है, बल्कि बंदे के भीतर यह क्षमता मौजूद है। किताब का ज्ञान सीखकर बंदा ऐसी मसनद पर बैठ जाता है जहाँ उसे ब्रह्माण्ड में हस्तक्षेप करने की क्षमता दे दी जाती है।

इस क्षमता को यदि कोई बंदा ठुकरा दे या समझे कि मेरी क्या वास्तविकता है कि मैं इस ज्ञान को समझ सकूं, तो यह गलत है क्योंकि परमेश्वर ने सुलैमान (अ.स.) के क़िस्से में बंदे का ज़िक्र करके यह क्षमता सामान्य कर दी, बशर्ते वह चिंतन से काम ले और उसे ढूंढे।

यह क़ानून बयान करके पैगंबरों की श्रेष्ठता को कम करना हमारा उद्देश्य नहीं है; पैगंबर परमेश्वर के चुने हुए और मानवता के गहने होते हैं। और मानवता के सभी विज्ञानों का स्रोत और खज़ाना भी परमेश्वर के भेजे हुए पैगंबर हैं। बताना यह है कि मानवता का हर व्यक्ति पैगंबरों के ज्ञान से लाभ उठाकर पारलौकिक दुनिया में हस्तक्षेप कर सकता है।

जैविक और प्राकृतिक माँगें

मनुष्य दो प्रकार की माँगों से युक्त और प्रेरित है। एक माँग जैविक (जबलत) और दूसरी प्राकृतिक (फितरत) है। जैविक माँग पर हमारे पास पूर्ण अधिकार है, जबकि प्राकृतिक माँग पर कुछ हद तक तो अधिकार है, लेकिन हम इस इच्छा को पूरी तरह से नकारने के लिए अधिकार नहीं रखते।

www.ksars.org

यह एक ऐसा प्रणाली है जो जैविक और प्राकृतिक पर आधारित है। जैविक में प्रत्येक जाति और प्रत्येक जाति का हर فرد एक-दूसरे से संवेदनात्मक संबंध रखता है। कौन नहीं जानता कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे से प्यार करती है और उसे शिक्षा देकर उसे बड़ा करती है, उसी प्रकार एक बिल्ली भी अपने बच्चे से प्रेम करती है, उसे शिक्षा देती है और गर्मी-ठंड से उसकी रक्षा करती है। मुर्गी जो एक ज़मीन पर चलने वाला पक्षी है, वह एक साथ अपने कई बच्चों को अपने साथ रखती है और हर तरह से उनकी रक्षा और पालन-पोषण करती है। माँ चाहे वह मुर्गी हो, कबूतर हो, शेरनी हो, बकरी हो, मातृत्व का भाव सभी जातियों में समान है। जैविक में कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा और अधिकार से बदलाव कर सकता है, लेकिन प्राकृतिक में किसी भी जाति का कोई भी व्यक्ति बदलाव नहीं कर सकता। पैदा होना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। जन्म के बाद भूख और प्यास की माँग भी एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसी प्रकार, कोई भी व्यक्ति चाहे वह पृथ्वी के किसी भी क्षेत्र में हो, इस बात पर अधिकार नहीं रखता कि वह अपनी पूरी जिंदगी कुछ न खाए। पूरी जिंदगी सोता रहे या जागता रहे। हर व्यक्ति या हर जाति का प्रत्येक सदस्य जिस प्रकार खाने-पीने पर मजबूर है, उसी प्रकार सोने और जागने पर भी मजबूर है। इस व्याख्या के माध्यम से यह बात स्पष्ट होती है कि ब्रह्मांड में हर व्यक्ति जैविक और प्राकृतिक के दृष्टिकोण से आपस में मानसिक रूप से जुड़ा हुआ है और एक सामान्य संबंध में जुड़ा हुआ है। जब हम प्राकृतिक और जैविक का गहरे अध्ययन करते हैं, तो हमें एक नया जागरूकता प्राप्त होता है। यह जागरूकता मनुष्य और जिनात के अलावा किसी अन्य जाति को प्राप्त नहीं होती। जब मनुष्य के भीतर सोच और विचार का यह जागरूकता सक्रिय हो जाता है, तो उसकी दृष्टि, उसकी समझ, उसकी अनुभूति और उसकी अंतरदृष्टि उसे अनिवार्य रूप से इस दिशा में आकर्षित करती है कि इच्छाशक्ति के साथ मनुष्य भी कभी-कभी विवश हो जाता है। और यह विवश होना इस बात का प्रमाण है कि हमारे सम्पूर्ण जीवन का नियंत्रण किसी ऐसी सत्ता के हाथों में है जिसका अधिकार ब्रह्मांड पर व्याप्त है। धर्म इस सत्ता के विभिन्न नाम रखते हैं।

इस्लाम इस सत्ता को परमेश्वर के नाम से परिचित कराता है, ईसाई धर्म इस महान और प्रभावशाली सत्ता को गॉड (GOD) का नाम देता है, हिन्दू धर्म इस सर्वोत्तम और श्रेष्ठ सत्ता को भगवान कहता है। कोई यज़दान और कोई इलियाह कहकर पुकारता है। संक्षेप में, प्रत्येक धर्म इस महान सत्ता से परिचित कराने का कोई न कोई तरीका जरूर रखता है।

www.ksars.org

गौर और विचार करें तो सोचने और समझने के दो पक्ष निर्धारित होते हैं। विस्तार में जाने के बजाय हम इन दो पक्षों का उल्लेख करेंगे। वे लोग जो बौद्धिक दृष्टि से स्थिर ज़ेहन रखते हैं, अर्थात् ऐसा ज़ेहन जिसमें संदेह और शंका की कोई गुंजाइश नहीं, वे कहते हैं कि हमारा यक़ीन है कि हर चीज़, चाहे इस दुनिया में उसकी कोई भी हैसियत हो, छोटी हो या बड़ी, सुख हो या दुःख, सब परमेश्वर की तरफ़ से है। इन लोगों के अनुभव में यह बात आती है कि ब्रह्मांड में जो कुछ भी मौजूद है, जो हो रहा है, जो हो चुका है या भविष्य में होने वाला है, उसका सीधा संबंध परमेश्वर की ज़ात (परमेश्वर का अस्तित्व) से है। अर्थात जिस तरह परमेश्वर के ज़ेहन में किसी चीज़ का अस्तित्व है, उसी तरह उसका प्रकट होना होता है। दार्शनिक तरज़-ए-फ़िक्र (तरज़-ए-फ़िक्र, विचार की पद्धति) को नज़रअंदाज़ करते हुए हम इस बात को कुछ उदाहरणों में प्रस्तुत करेंगे।

जीवन का प्रत्येक क्रियाकलाप अपनी विशिष्ट स्थिति रखता है। इस स्थिति को अर्थ प्रदान करना वस्तुतः *तरज़-ए-फ़िक्र* (विचार-पद्धति) में परिवर्तन है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक वस्तु, जिसका अस्तित्व इस संसार में वर्तमान है या भविष्य में होगा, वह किसी न किसी रूप में पूर्व से विद्यमान है। अर्थात, संसार में कोई भी वस्तु तब तक अस्तित्व में नहीं आ सकती जब तक उसका पूर्व में कोई स्वरूप विद्यमान न हो। मनुष्य का जन्म इसलिए संभव है क्योंकि वह जन्म लेने से पहले किसी रूप में विद्यमान था। मनुष्य के जीवन की परिस्थितियाँ, दिन, महीने और वर्षों के क्रमबद्ध अंतराल पूर्व से ही एक चलचित्र के रूप में अंकित हैं। इस चलचित्र को हम *ब्रह्मांडीय चलचित्र* या "सुरक्षित पट्टिका" (लोḥ महफ़ूज़) कहते हैं।

ब्रह्मांडीय चलचित्र

जब कोई मनुष्य समझदार, प्रौढ़ और जागरूक होता है, तो उसे जीवन व्यतीत करने के लिए साधनों की आवश्यकता होती है, और उन साधनों को प्राप्त करने के लिए धन एक माध्यम के रूप में कार्य करता है। यह प्रक्रिया कुछ इस प्रकार है कि मनुष्य के लिए सृजनकर्ता ने एक लाख रुपये निर्धारित कर दिए, ठीक वैसे ही जैसे एक लाख रुपये किसी बैंक में जमा कर दिए जाते हैं। साधनों का उपयोग करने के लिए मनुष्य प्रयास और संघर्ष करता है। जैसे-जैसे प्रयास और संघर्ष सफलता के चरणों को पार करते हैं, उसे धन प्राप्त होता रहता है, और उसकी आवश्यकताएँ पूरी होती रहती हैं। लेकिन यह बात निर्विवाद सत्य है कि यदि *ब्रह्मांडीय चलचित्र* (सुरक्षित पट्टिका) में साधनों और मुद्रा का अभिलेख निर्धारित न हो, तो प्रदर्शित (डिस्प्ले) होने वाला चलचित्र अधूरा रह जाता है। एक मनुष्य के नाम से बैंक में करोड़ों रुपये की मुद्रा उपलब्ध हो, लेकिन यदि वह न तो उसे उपयोग करता है और न ही उसकी ओर ध्यान देता है, तो यह मुद्रा उसके किसी काम की नहीं होती।

www.ksars.org

एक तर्ज़-ए-फ़िक्र एक तर्ज़-ए-फ़िक्र यह है कि एक व्यक्ति, भले ही उसका ज़मीर (आत्मा) उसे मलामत (आलोचना) करता है, अपनी रोज़ी अवैध तरीके से प्राप्त करता है। वह रीज़्क-ए-हलाल (वैध रोज़ी) से भी दो रोटियाँ खाता है और रीज़्क-ए-हराम (अवैध रोज़ी) से भी अपनी तृप्ति करता है। हालाँकि यह स्थापित सत्य है कि इस संसार में जो कुछ भी उसे प्राप्त हो रहा है, वह पहले से एक 'फिल्म' के रूप में उपस्थित है।

एक व्यक्ति मेहनत और श्रम करके, अपने अंतरात्मा के आंसुओं में रुपया प्राप्त करता है। दूसरा व्यक्ति अंतरात्मा की निंदा न करते हुए धन प्राप्त करता है। दोनों स्थितियों में उसे वही धन प्राप्त हो रहा है जो *सुरक्षित पट्टिका* पर उसके लिए संचित किया गया है। यह एक अत्यंत विचित्र और उच्चतम स्तर की अज्ञानता है कि एक व्यक्ति अपनी स्वयं की हलाल वस्तु को हराम बना लेता है।

क्षमता और भाग्य

एक बार हज़रत अली अपने घोड़े पर कहीं जा रहे थे जब नमाज़ का समय हुआ। आप घोड़े से अवतरण करके, समीप से एक बद्दू (जो सभ्यता और संस्कार से अपरिचित था) विहार कर रहा था। आपने उसे पुकारते हुए कहा, "कृपया, थोड़ी देर के लिए घोड़े की लगाम पकड़ें। मैं इस कालखंड में नमाज़ अदा कर लूँगा।

बद्दू ने स्वीकृति प्रदान कर दी, और हज़रत अलीؓने नमाज़ की नीयत बाँध ली। हज़रत अलीؓजब नमाज़ अदा करते थे, तो संसार और उसमें स्थित समस्त वस्तुओं से पूर्णतः अपरिचित हो जाते थे। बद्दू ने विचार किया कि यह अवसर अनुकूल है। घोड़े को अपनाना तो कठिन है, किंतु लगाम लेकर प्रस्थान करना सरल होगा। जब आप नमाज़ समाप्त करके उठे, तो देखा कि घोड़ा यथास्थान उपस्थित है, परंतु लगाम और बद्दू दोनों अनुपस्थित हैं। इतने में आपके सेवक क़म्बर वहाँ से गुज़रे। आपने उन्हें दो दिरहम प्रदान करते हुए कहा, "बाज़ार से एक नवीन लगाम क्रय कर लाओ।"

क़नबर बाज़ार पहुँचे तो देखा कि एक बद्दू लगाम लिए किसी ख़रीदार का प्रतीक्षा कर रहा है। क़नबर ने लगाम को पहचान लिया और बद्दू को पकड़कर हज़रत अलीؓकी सेवा में ले आए। आपने प्रश्न किया, "इसे क्यों पकड़ लाए हो?"

क़नबर ने उत्तर दिया, "हज़ूर! यह आपके घोड़े की लगाम है।"

हज़रत अलीؓने पूछा, "यह इसके क्या मूल्य माँग रहा है?"

क़नबर ने उत्तर दिया, "दो दिरहम।"

आपؓने आदेश दिया, "इसे दो दिरहम दे दो।" और फ़रमाया, "मैंने इसे यह सोचकर लगाम पकड़ी थी कि नमाज़ से उन्मुक्त होने के बाद इसे सेवा के बदले दो दिरहम दूँगा। यह इसका पात्र है कि उसने अपना भाग्य दूसरे ढंग से स्वीकार किया।"

www.ksars.org

सात चोर:

शेख़ (को हिंदी में) को बैठे-बैठे यह विचार आया कि यह एक अजीब बात है कि परमेश्वर हमेशा अपना एहसान जताता रहता है। कभी वह कहता है, "मैं खिलाता हूँ, मैं पिलाता हूँ," और कभी वह कहता है, "मैं रोज़ी प्रदान करता हूँ।" यदि हम भोजन न करें, तो कोई शक्ति हमें भोजन करने पर बाध्य नहीं कर सकती। इस विचार को लेकर उन्होंने भोजन करना छोड़ दिया। जब पत्नी और बच्चों ने अधिक परेशान किया, तो उन्होंने अपना घर छोड़कर एक पुरानी क़ब्रिस्तान में निवास करना शुरू कर दिया। शाम हो गई तो एक व्यक्ति अपनी मन्नत पूरी करने के लिए कब्रस्तान में स्थित एक मजार पर पहुंचे। फ़ातिहा पढ़ने के बाद उन्होंने शेख़ को भी तबर्रुक दिया। शेख़ के इंकार और उस व्यक्ति के ज़ोर देने ने एक अजीब स्थिति उत्पन्न कर दी। वह व्यक्ति यह समझकर कि शेख़ कोई दीवाना हैं, एक पोटली में कुछ लड्डू लपेटकर एक झाड़ी के नीचे रख दिए कि जब इस व्यक्ति की सोच सामान्य हो, तो वह उन्हें खा लेगा। आधी रात से ज्यादा समय बीत चुका था, तो कब्रस्तान में चोर दाखिल हुए। उन्होंने चुराए हुए माल का बंटवारा शुरू किया, तो शेख़ उठ बैठे। चोरों के कान खड़े हो गए और आपस में यह तय किया कि यह व्यक्ति कोई ख़बरदार है। उन्होंने जल्दी-जल्दी अपना माल समेटकर पोटली में बांध लिया और शेख़ पर सवालों की बौछार कर दी। शेख़ कोई उचित उत्तर नहीं दे सके। इस तकरार में चोरों में से एक चोर की नज़र झाड़ी के नीचे रखी हुई पोटली पर पड़ी। पोटली खोलकर देखा तो उसमें सात लड्डू थे, और चोर भी संयोग से सात थे। चोरों के सरदार ने कहा, "यह व्यक्ति भी कोई चोर है और बहुत चतुर चोर है। इसने लड्डुओं में ज़हर मिला दिया है, ताकि हम सभी खाकर मर जाएं और यह हमारे माल पर क़ब्ज़ा कर ले।" सरदार ने कहा, "ये सारे लड्डू उसे खिला दिए जाएं ताकि उसकी साज़िश खुद उसे नष्ट कर दे। दो व्यक्तियों ने शेख के दोनों पैरों को पकड़ा, दो अन्य व्यक्तियों ने उनके दोनों हाथों को थाम लिया, एक ने उनका सिर पकड़ लिया और एक ने उनकी छाती पर बैठकर दबाव बनाया, जबकि एक व्यक्ति ने उनका मुँह खोलकर उसमें लड्डू डालने का प्रयास किया। जब शेख ने इस स्थिति में भी लड्डू खाने से इंकार कर दिया, तो उस व्यक्ति ने अत्यधिक बलपूर्वक थप्पड़ मारे और अपनी अंगुली की सहायता से लड्डू को शेख के गले में डाल दिया। इस जबरदस्ती और अत्याचार के दौरान सातों लड्डू शेख के पेट में समा गए। यह कार्य समाप्त करने के पश्चात सातों चोर सिर पर पाँव रखकर भाग गए।

शेख उठे और बहुत अफ़सोस (हसरत) के साथ, उन्होंने जब आकाश (आसमान) की ओर नज़र उठाई, तो आवाज़ आई, "ए घमंडी बंदे! घर लौट जा, वरना रोज़ाना हम इसी प्रकार तुझे खिलाएँगे।"

टोकरी में हलवा:

एक व्यक्ति बस्ती छोड़कर जंगल में चला गया। एक समय, दो (२) समय वह भूखा रहा, यह सोचते हुए कि जब मैं खाना नहीं खाऊँगा तो मुझे कौन खिलाएगा। तीसरे समय भूख और प्यास

www.ksars.org

के कारण उसकी अवस्था अत्यंत खराब हो गई। दिल में विचार आया कि पानी पी लिया जाए तो कोई हानि नहीं होगी। पास में एक नहर थी। जब वह नहर के पास पहुँचा, तो पानी के प्रवाह के साथ एक टोकरी आती हुई दिखाई दी। उत्सुकता उत्पन्न हुई कि इस टोकरी में क्या है। टोकरी को खोला तो इसमें एक परात थी और उस परात में बहुत सारा हलवा रखा हुआ था। यह अभिमानी व्यक्ति अत्यंत बेचैनी का प्रदर्शन करते हुए सारा हलवा खा गया। हलवा खाने और पानी पीने के बाद उसे विचार आया कि यह हलवा कहाँ से आया। पानी के बहाव के विपरीत नहर के किनारे-किनारे वह चलता रहा। और अंततः एक गाँव में पहुँचा। वहाँ एक किसान ने बताया कि वह टोकरी सुबह बहुत सवेरे नंबरदार ने नहर में डाली थी। पता नहीं इसमें क्या था। अभिमानी व्यक्ति नंबरदार के घर पहुँचा। नंबरदार ने बताया कि गत रात्रि हमारे यहाँ एक फ़क़ीर पधारे थे। हमारे एक भ्राता गंभीर रोग से ग्रस्त थे, जिनके समस्त शरीर पर कुष्ठ विकसित हो गया था। उनके शारीरिक अंगों का प्रायः प्रत्येक भाग सड़ने लगा था, जिससे रक्त एवं मवाद प्रवाहित हो रहा था। फ़क़ीर ने उपचार के रूप में यह निर्देश दिया कि हलवा पकाकर उसे उष्ण अवस्था में समस्त शरीर पर लेपित किया जाए और प्रातः काल, अंधकार रहते हुए, उस हलवे को शरीर से अलग कर टोकरी में रखकर जलधारा में प्रवाहित कर दिया जाए।

पाठ की प्रलेख:

रसिख-फ़ी-अल-इल्म व्यक्तियों के ज़ेहन में यक़ीन का ऐसा व्यवस्थित ढांचा निर्मित हो जाता है कि वे अपने जीवन के प्रत्येक कार्य, प्रत्येक गतिविधि और प्रत्येक आवश्यकता को पूर्णतः परमेश्वर से सम्बद्ध कर देते हैं। यही पैग़ंबरों का तर्ज़-ए-फ़िक्र है। उनके ज़ेहन में यह धारणा स्थायी रूप से स्थापित हो जाती है कि परमेश्वर ने जो नेमतें हमारे लिए नियत की हैं, वे हर स्थिति में हमें उपलब्ध होंगी। यह अटल यक़ीन उनके अंदर इस्तिग़ना (अलगाव/विरक्ति) की अद्वितीय शक्ति का सृजन करता है। क़लंदर बाबा औलिया का निर्देश है कि इस्तिग़ना के अभाव में यक़ीन का जन्म संभव नहीं, और यक़ीन की पूर्णता बिना मुशाहिदे (प्रत्यक्ष दर्शन) के सम्भव नहीं। वह व्यक्ति जिसमें इस्तिग़ना की भावना नहीं होती, उसका सम्बंध परमेश्वर से न्यून और भौतिक संसार (असफल) से अत्यधिक प्रबल होता है।

रूहानियत ऐसे पाठों का प्रलेख है जिनमें यह बात स्पष्ट रूप से कह दी गई है कि शांति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति के भीतर इस्तिग़ना हो। इस्तिग़ना के लिए यह आवश्यक है कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास करे। विश्वास को स्थिर करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति के भीतर ईमान हो, और ईमान के लिए यह आवश्यक है कि वह वह दृष्टि रखता हो जो अगोचर में देखती है। अन्यथा, किसी भी व्यक्ति को कभी शांति प्राप्त नहीं हो सकती। आज की दुनिया में अजीब स्थिति है कि हर व्यक्ति संपत्ति के ढेर अपने चारों ओर इकट्ठा करना चाहता है और फिर भी यह शिकायत करता है कि शांति नहीं है। शांति कोई क्षणिक वस्तु नहीं है।शांति एक ऐसी गुणवत्ता है जो सुनिश्चित है और जिसके ऊपर कभी मृत्यु का प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसी

www.ksars.org

चीज़ों से जो अस्थायी, नाशवान हैं और जिनके ऊपर हमारी बाहरी आँखों के सामने भी मृत्यु बार-बार आती रहती है, उनसे शांति कैसे प्राप्त हो सकती है? इस्तिग़ना एक ऐसी विचारधारा है जिसमें व्यक्ति नाशवान और भौतिक चीज़ों से अपने ज़ेहन को हटा कर वास्तविक और अनन्त चीज़ों में विचार करता है। यह विचार जब कदम-कदम चलकर किसी बंदे को अगोचर में प्रवेश करवा देता है तो सबसे पहले उसके भीतर विश्वास पैदा होता है। जैसे ही विश्वास की किरण दिमाग़ में फूटती है, वह नज़र काम करने लगती है जो अगोचर का दर्शन करती है। अगोचर में दर्शन के बाद जब किसी बंदे पर यह रहस्य उद्घाटित हो जाता है कि सम्पूर्ण क़ाइनात की बागडोर एक अद्वितीय स्वरूप के हाथ में है, तो उसका सम्पूर्ण मानसिक झुकाव उस स्वरूप पर केंद्रित हो जाता है, और इस केन्द्रीयता के बाद इस्तिग़ना का वृक्ष व्यक्ति के भीतर शाखा दर शाखा फैलने लगता है।

राष्ट्रीय और व्यक्तिगत जीवन:

ब्रह्मांड की समस्त गति और सुकूनतें एक चलचित्र के रूप में रिकॉर्ड हैं। जिस प्रकार इस चलचित्र में ब्रह्मांडी आकृतियाँ विद्यमान हैं, उसी प्रकार अनगिनत आकाशगंगाओं में उनका प्रसारण हो रहा है। बात संघर्ष, प्रयास और चयन की है, और यदि प्रयास और संघर्ष नहीं किए जाते तो जीवन में शून्य उत्पन्न हो जाता है। यह क्रिया, व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों रूपों में, अनादि से अनन्त तक निरंतर जारी है।

परमेश्वर का क़ानून है कि जब कोई बंदा संघर्ष और प्रयास करता है और इस संघर्ष और प्रयास का फल किसी न किसी प्रकार परमेश्वर की सृष्टि के काम आता है, तो साधनों में वृद्धि होती रहती है। पृथ्वी पर परमेश्वर ने जितनी भी वस्तुएँ सृजित की हैं, उनके अंदर अनगिनत क्षमताएँ छिपी हुई हैं। प्रयास से जब इन वस्तुओं के अंदर क्षमताओं को सक्रिय कर दिया जाता है या इन वस्तुओं में संचित गुप्त क्षमताओं का अन्वेषण किया जाता है, तो आविष्कार के अनगिनत मार्ग खुल जाते हैं। हम यह देखते हैं कि परमेश्वर ने लोहा सृजित किया। जब हम सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से लोहा की विशेषताओं और उसमें कार्य करने वाली क्षमताओं का पता लगाते हैं, तो लोहा एक ऐसी वस्तु बनकर सामने आता है, जिसमें मनुष्य के लिए अनगिनत लाभ होते हैं। आज का विज्ञान इसका स्पष्ट प्रमाण है। वैज्ञानिक उन्नति में सम्भवत: कोई ऐसी वस्तु हो जिसमें किसी न किसी रूप में लोहा का योगदान न हो।

"स्थिति कुछ इस प्रकार बनी कि सुरक्षित पट्टिका (लोह माफफूओ) में व्यक्तिगत जीवन भी आकृतियाँ हैं और राष्ट्रीय जीवन भी आकृतियाँ हैं। व्यक्तिगत सीमाओं में जब कोई व्यक्ति प्रयास और संघर्ष करता है तो उसके ऊपर व्यक्तिगत लाभ प्रकट होते हैं। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, जब एक-दो-चार-दस लोग प्रयास करते हैं तो इस संघर्ष और प्रयास से पूरी जाति को लाभ पहुँचता है। भगवान कहते हैं, 'मैं उन जातियों की किस्मत नहीं बदलता जो जातियाँ स्वयं अपनी स्थिति बदलना नहीं चाहतीं।' सुरक्षित पट्टिका पर यह बात भी आकृतियों में है कि जो जातियाँ अपनी स्थिति बदलने का प्रयास करती हैं, उन्हें ऐसे संसाधन मिल जाते हैं जिनसे वे सम्मानित और आदरणीय बन जाती हैं। और जो जातियाँ अपनी परिवर्तन नहीं चाहतीं, वे निराश और नीच जीवन जीती हैं।"

सुरक्षित पट्टिका पर लिखी हुई आकृतियाँ यह हैं:

www.ksars.org

यदि व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दी गई शक्तियों का सही दिशा में उपयोग करता है तो अच्छे परिणाम उत्पन्न होते हैं। यदि गलत तरीकों में इसका उपयोग करता है तो नकारात्मक परिणाम उत्पन्न होते हैं। बात बस इतनी सी है कि परमेश्वर चाहता है कि व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दी गई शक्तियों का इस प्रकार उपयोग करे जिससे उसकी अपनी भलाई और परमेश्वर की सृष्टि की भलाई का साधन प्राप्त हो। व्यक्तिगत भलाई परमेश्वर के दृष्टिकोण में कोई महत्व नहीं रखती, क्योंकि परमेश्वर स्रष्टा है, पालनहार है, और पालनहारी का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के आशीर्वाद और कृपाओं से सारी सृष्टि को लाभ मिले। संक्षेप में, इस बात को इस प्रकार समझा जाए कि जो कुछ भी इस दुनिया में हो रहा है, वह सुरक्षित पट्टिका में रिकॉर्ड है। "इस फिल्म में मनुष्यों का उत्थान और पतन भी लिखा हुआ है, लेकिन साथ ही साथ यह भी लिखा है कि जातियाँ यदि सही तरीकों में व्यावहारिक जीवन व्यतीत करेंगी तो उन्हें उत्थान मिलेगा, और यदि गलत तरीकों में व्यावहारिक जीवन व्यतीत करेंगी तो उन्हें भँदी बना दिया जाएगा।

नबियों की विचारधारा:

विकास और पतन जब चर्चा का विषय होते हैं, तो मन इस ओर भी आकर्षित होता है कि आखिर विकास और पतन में कौन से कारक कार्यरत हैं। हमने पहले ही बताया है कि व्यक्तिगत या सामूहिक संघर्ष के परिणामस्वरूप विकास प्राप्त होता है, और व्यक्तिगत और सामूहिक आलस्य और भोगवाद के परिणामस्वरूप जातियों को उत्थान के बजाय पतन प्राप्त होता है। विकास के यही दो पहलू हैं। विकास या सम्मान और प्रतिष्ठा की एक स्थिति यह है कि किसी व्यक्ति या किसी जाति को सांसारिक सम्मान, दंभ और सांसारिक महिमा प्राप्त हो। विकास का दूसरा पहलू, जो वास्तव में वास्तविक पहलू है, इस बात की ओर इशारा करता है कि भौतिक स्थिति में रहते हुए, जो व्यक्ति या जाति ग़ैब की दुनिया में भी अपनी पहुँच प्राप्त करती है, वह असल विकास, सम्मान और महिमा है। इन दोनों पहलुओं पर यदि ध्यान दिया जाए, तो यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान समय में वैज्ञानिक विकास केवल बाहरी विकास पर निर्भर है। निश्चित रूप से वे जातियाँ जिन्होंने विज्ञान पर विचार किया है और संघर्ष के बाद नई-नई खोजें की हैं, वे सांसारिक दृष्टिकोण से विकसित हैं, लेकिन हम देखते हैं कि ये विकसित जातियाँ शांति और संतोष से वंचित हैं। हृदय का संतोष और आत्मिक शांति से ये जातियाँ इसलिए वंचित हैं क्योंकि वे सत्य से अनभिज्ञ हैं या वास्तविक दुनिया से उनका कोई संबंध या संपर्क नहीं हुआ है। वास्तव में, मानसिक विसंगति नहीं होती, सत्य पर कभी भय और दुःख के साये नहीं मंडराते। वास्तविक दुनिया से परिचित लोग हमेशा शांत रहते हैं। वर्तमान युग निश्चित रूप से विकास का युग है, लेकिन इस विकास के साथ-साथ जितनी कठिनाइयाँ, परेशानियाँ, अशांति और मानसिक उलझन मानवता ने अनुभव की हैं, उसकी समानता पिछले युग में नहीं मिलती। कारण केवल यही है कि इस विकास के पीछे व्यक्तिगत लाभ है, चाहे वह व्यक्तिगत हो या राष्ट्रीय। यदि यह विकास वास्तव में मानवता की भलाई के लिए होता, तो जातियों को शांति और संतोष प्राप्त होता। व्यक्तिगत या सामूहिक मानसिकता का संबंध विचारधारा से है। विचारधारा में यदि यह है कि हमारी कोशिश और आविष्कारों से मानवता और परमेश्वर की सृष्टि को लाभ पहुंचे, तो यह विचारधारा नबियों की विचारधारा है और यही विचारधारा

www.ksars.org

परमेश्वर की विचारधारा है। और इन दोनों विचारधाराओं का शब्दकोष में नाम 'कलंदर चेतना' है। कलंदर चेतना हमें बताती है कि यदि व्यक्ति के भीतर आत्मनिर्भरता है, तो वह नई-नई बीमारियों, नई-नई समस्याओं और नई-नई चिंताओं से सुरक्षित रहता है। आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का सरल तरीका यह है कि व्यक्ति की सोच और उसकी विचारधारा उस विचारधारा से जुड़ी हो जो परमेश्वर की विचारधारा है। जब हम पृथ्वी पर स्थित वस्तुओं का निरीक्षण करते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए अनगिनत संसाधन उत्पन्न किए हैं। लेकिन इन संसाधनों में से कोई भी ऐसा नहीं है जिसका संबंध सीधे परमेश्वर की किसी आवश्यकता से हो। परमेश्वर हर चीज से स्वतंत्र है। हालांकि परमेश्वर हर चीज से स्वतंत्र है और उसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है, फिर भी वह अपनी सृष्टि के लिए एक नियम के दायरे में निरंतर संसाधन प्रदान करता रहता है। यदि किसी मौसम में आम की आवश्यकता होती है तो एक प्रणाली के तहत वृक्ष पर फूल आएंगे, आम लगेंगे और इन आमों से लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होंगी। चूँकि मनुष्य संसाधनों का दरिद्र है, इसलिए वह इस प्रकार से संसाधनों से स्वतंत्र नहीं हो सकता कि वह हर दिशा से अपने संबंधों को काट दे, लेकिन वह यह विचारधारा अपना सकता है कि ये संसाधन जो मेरी संघर्ष से प्रकट होते हैं, पूरी मानवता का हिस्सा हैं। जैसे मैं इनसे लाभ उठाता हूँ, वैसे ही पूरी मानवता को लाभ उठाने का पूरा हक़ है।विचारधारा प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति उस विचारधारा से मानसिक निकटता प्राप्त करे जिसे वह प्राप्त करना चाहता है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी नेक व्यक्ति से दोस्ती करना चाहते हैं, तो आप उसी प्रकार के कार्य करने लगेंगे, यदि आप किसी जुआरी को अपना दोस्त बनाना चाहते हैं, तो उसके साथ जुआ खेलना शुरू कर देंगे, यदि आप किसी परमेश्वर वाले से दोस्ती करना चाहते हैं, तो आप वह सभी कार्य करने लगेंगे जो परमेश्वर वालों के लिए प्रिय हैं। जैसे-जैसे आप उन कार्यों या आदतों को अपनाते जाएंगे, उसी प्रकार आपकी विचारधारा बदलती जाएगी।

परमेश्वर का स्वभाव:

परमेश्वर की विचारधारा यह है कि वह अपनी सृष्टि (मखलूक) की सेवा करता है और इस सेवा का कोई प्रतिफल नहीं चाहता। जब मनुष्य स्वेच्छा से इस विचारधारा को अपनाता है कि वह हर हाल में परमेश्वर की सृष्टि (मखलूक) के काम आए, तो उसे कलंदर चेतना (शोध) प्राप्त हो जाती है। और जब यह विचारधारा स्थिर हो जाती है, तो उसका ज़ेहन (मस्तिष्क) हर समय, हर क्षण इस ओर ध्यान केंद्रित करता है कि मैं वह कार्य कर रहा हूँ जो परमेश्वर के लिए पसंदीदा है। बार-बार इस आदत या क्रिया का पुनरावृत्ति होने से पहले उसके निरीक्षणों में अनगिनत ऐसे घटनाएँ आती हैं कि उसके भीतर यह विश्वास उत्पन्न हो जाता है कि जो कुछ हो रहा है, जो कुछ हो चुका है, या जो कुछ भविष्य में होने वाला है, वह सब परमेश्वर की तरफ से है। इस संबंध को 'इस्तिग़ना' का नाम दिया जाता है। पैग़म्बरों (पीग़ंबरो) की सारी जिंदगी इस क्रिया से अभिव्यक्त होती है कि हर वस्तु परमेश्वर की तरफ से है। सभी नबियों (नबियों) और ओलिया परमेश्वर के भीतर 'इस्तिग़ना' की विचारधारा गहरी होती है। नबियों की इस विचारधारा को प्राप्त करने का प्रयास इस प्रकार होता था कि जब वे किसी वस्तु के बारे में सोचते, तो वे उस वस्तु और अपने बीच कोई

www.ksars.org

सीधा संबंध स्थापित नहीं करते थे। उनका विचार हमेशा यह होता था कि ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं का और हमारा मालिक परमेश्वर है, किसी वस्तु का सीधा संबंध हमसे नहीं है। बल्कि हमसे प्रत्येक वस्तु का संबंध परमेश्वर की ज्ञान से है। धीरे-धीरे उनकी यह विचारधारा स्थिर हो जाती है और उनका ज़ेहन (मस्तिष्क) ऐसे प्रवृत्तियाँ उत्पन्न कर लेता है कि जब वे किसी वस्तु की ओर इंगीत करते, तो उस वस्तु की ओर ध्यान जाने से पहले परमेश्वर की ओर ध्यान जाता। उन्हें किसी वस्तु की ओर ध्यान देने से पहले यह अनुभूति स्वाभाविक रूप से होती कि यह वस्तु हमसे सीधे तौर पर कोई संबंध नहीं रखती। इस वस्तु का और हमारा संबंध केवल परमेश्वर के कारण है।

इस प्रकार के आचरण में ज़ेहन की प्रत्येक गति के साथ परमेश्वर का एहसास स्थापित हो जाता है। परमेश्वर ही उनके लिए अनुभूति के रूप में उनका सम्बोधित बन जाता है। धीरे-धीरे परमेश्वर की गुण (सिफात) उनके ज़ेहन में एक स्थायी स्थान प्राप्त कर लेती हैं और उनका ज़ेहन परमेश्वर की गुण का प्रतिनिधि बन जाता है। यह स्थान प्राप्त होने के बाद बंदे के ज़ेहन की प्रत्येक गति परमेश्वर की गुण की गति होती है और परमेश्वर की गुण की कोई भी गति कुदरत और हुकूमत (शक्ति और हुकूमत) के गुण से रहित नहीं होती। ओलिया परमेश्वर (परमेश्वर के प्रिय भक्तों) में अहल-ए-निज़ामत (अहल-ए-तक़वीन) को परमेश्वर की तरफ से यही ज़ेहन प्रदान किया गया है, और रुश्द और हिदायत और प्रेरणा (INSPIRATION) पर कार्य करने वाले ओलिया-ए-कराम अपनी तपस्या और मुजाहिदों के माध्यम से इस ही ज़ेहन को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

कार्य और इरादा:

बुराई या भलाई के संबंध में, कोई भी कार्य इस संसार में बुरा या अच्छा नहीं है। वास्तव में, किसी कार्य में अर्थ देना ही अच्छाई या बुराई है। अर्थ देने से अभिप्राय इरादा (नीत) है। कार्य करने से पहले मनुष्य के इरादे में जो कुछ होता है, वही अच्छाई और बुराई है।

आग का कार्य जलाना है। एक व्यक्ति जब लोगों की भलाई के लिए आग को खाना पकाने में प्रयोग करता है तो यह कार्य भला है। वही व्यक्ति जब उस आग से लोगों के घरों को जला देता है तो यह बुराई है। जिन जातियों से हम प्रभावित हैं और जिन जातियों के हम आश्रित हैं, उनकी विचारधारा का यदि गहन अध्ययन किया जाए तो यह तथ्य सूर्य की तरह स्पष्ट है कि विज्ञान की सम्पूर्ण उन्नति का जोर इस पर है कि एक जाति सत्ता प्राप्त करे और सम्पूर्ण मानवता उसकी दासी बन जाए। या आविष्कारों से इतने भौतिक लाभ प्राप्त किए जाएं कि पृथ्वी पर एक विशिष्ट जाति या विशेष राष्ट्र संपन्न हो जाए और सम्पूर्ण मानवता दरिद्र और निर्धन हो जाए। क्योंकि इस उन्नति में परमेश्वर के दृष्टिकोण के अनुसार मानवता की भलाई निहित नहीं है, इसलिए यह सम्पूर्ण उन्नति मानवता के लिए और उन जातियों के लिए भी, जिन्होंने संघर्ष और प्रयत्नों से नयी-नयी खोजें की हैं, संकट और परेशानी बन गई है। संकट और यह परेशानी एक दिन कष्ट बनकर पृथ्वी को नरक बना देगी।

जब तक आदमी के यकीन में यह बात रहती है कि चीज़ों का अस्तित्व या चीज़ों का नष्ट होना परमेश्वर की तरफ से है, तब तक ज़ेहन की केंद्रीयता बनी रहती है, और जब यह यकीन स्थिर होकर टूट जाता है,

www.ksars.org

तो आदमी ऐसे विश्वासों और संकोचों में फंस जाता है, जिसका परिणाम मानसिक विघटन होता है, चिंता होती है, दुःख और भय होता है। हालाँकि, यदि ग़ौर किया जाए तो यह बात बिल्कुल सामने की है कि इंसान का हर कार्य, हर क्रिया, हर हरकत किसी ऐसी सत्ता के अधीन है जो बाहरी आँखों से नहीं दिखती। माँ के गर्भ में बच्चे का वास, नौ महीने तक विकास के लिए भोजन की आपूर्ति, जन्म से पहले माँ के स्तन में दूध, जन्म के बाद दूध की आपूर्ति, दूध के पोषण से बच्चे का संतुलित और समायोजित रूप से बढ़ना, छोटे से बच्चे का बढ़कर सात फीट का हो जाना, जवानी के विभिन्न मांगें और इन मांगों की पूर्ति में संसाधनों की उपलब्धि, संसाधन उपलब्ध होने से पहले उनके अस्तित्व की उपस्थिति। यदि परमेश्वर पृथ्वी को आदेश दे दे कि वह फसलें न उगाए, तो आजीविका का साधन समाप्त हो जाएगा। विवाह के बाद माता-पिता के दिल में यह आग्रह कि हमारा कोई नाम लेने वाला हो, इस हद तक अत्यधिक तीव्रता में और इसके परिणामस्वरूप माता-पिता बनना, माता-पिता के दिल में संतान के प्रति प्रेम का उत्पन्न होना।

गौर करने योग्य बात यह है कि यदि परमेश्वर माता-पिता के दिल में प्रेम न डालें, तो संतान का पालन कैसे हो सकता है। संतान की देखभाल के लिए माता-पिता के दिल में संतान के लिए प्रेम सिर्फ इंसानों के लिए विशेष नहीं है, बल्कि यह भावना परमेश्वर की प्रत्येक सृष्टि में समान रूप से पाई जाती है, और इसी प्रेम के माध्यम से माता-पिता अपनी संतान की देखभाल करते हैं, उनकी देखरेख करते हैं और उनके लिए संसाधन उपलब्ध कराते हैं।

ज़मीन के अंदर बीज की वृद्धि:

आम तौर पर यह धारणा बनाई जाती है कि मेहनत और संघर्ष के बिना संसाधनों का प्राप्त होना असंभव है, जबकि हम यह देखते हैं कि जिन संसाधनों के प्राप्ति के लिए हम संघर्ष और कोशिश करते हैं, वे पहले से ही एक नियम और कानून के तहत मौजूद होते हैं। किसान जब मेहनत करके ज़मीन में बीज डालता है और इस बीज की वृद्धि से मानवीय आवश्यकताओं के लिए विभिन्न प्रकार की ज़रूरतें पूरी होती हैं, तो यह सब तब संभव होता है जब पहले से संसाधन मौजूद हों। जैसे, बीज का मौजूद होना, ज़मीन का मौजूद होना, ज़मीन के अंदर बीज की वृद्धि की क्षमता का होना, बीज की वृद्धि के लिए पानी का मौजूद होना, चाँदनी का मौजूद होना, हवा का मौजूद होना और मौसम के हिसाब से ठंडी और गर्म हवा का मौजूद होना। यदि बीज मौजूद न हो, या ज़मीन के अंदर बीज को बढ़ाने की क्षमता न हो, पानी न हो, हवा न हो, तो इंसान का हर प्रयास व्यर्थ हो जाएगा।

परमेश्वर की उप-रचनाएँ:

परमेश्वर की यह विशेषता है कि जब वह किसी चीज़ को रचता है, तो उस रचना से अरबों अन्य रचनाएँ अस्तित्व में आती हैं। वर्तमान काल में बिजली इसका उदाहरण है। परमेश्वर की एक उप-रचना बिजली (ELECTRICITY) है। इस बिजली के माध्यम से हज़ारों आविष्कार सार्वजनिक रूप से सामने आ चुके हैं और भविष्य में भी आते रहेंगे। इस स्थिति को देखते हुए हमारे ऊपर यह रहस्य उजागर होता है कि परमेश्वर ने संसाधन इसलिए रचे हैं ताकि मानवता इन संसाधनों के भीतर छुपी शक्तियों की खोज करे और उनका

www.ksars.org

उपयोग करे। और जब कोई जाति इन छुपी शक्तियों की खोज में लग जाती है, तो परमेश्वर की तरफ से नए-नए उद्घाटन होते हैं। और जब वह उद्घाटनों की रोशनी में चिंतन करती है, तो नए-नए आविष्कार अस्तित्व में आते रहते हैं। क़लंदर (कलंदर) ज्ञान हमारी मार्गदर्शिका करता है कि ब्रह्मांड में जितनी भी चीज़ें हैं, वे सभी दो पहलुओं पर स्थापित हैं। रचना का एक पहलू प्रकट है और दूसरा गुप्त है। पानी एक तरल पदार्थ है, यह उसका प्रकट पहलू है। लेकिन जब पानी के अंदर छुपी हुई क्षमताओं की खोज की जाती है, तो उसकी अनगिनत शक्तियाँ हमारे सामने आती हैं। इसी प्रकार लोहे का उदाहरण है। लोहा बाहरी रूप से एक धातु है। जब लोहे के कणों के अंदर कोई व्यक्ति सिर्फ शक्तियों की खोज करता है, तो नए-नए आविष्कार और खोजें उसके इरादों और इच्छाओं से बनती रहती हैं।

जब हम किसी चीज़ के अंदर परमेश्वर की गुणों की तलाश करते हैं, तो हमारे ऊपर यह उद्घाटित हो जाता है कि पूरी ब्रह्मांड अस्तित्व में है। ब्रह्मांड में जो कुछ भी बनाया गया है या पृथ्वी पर जो कुछ भी है, सब मानवता के लिए रचा गया है।

सही परिभाषा:

इस्तिग़ना का मतलब यह नहीं है कि इंसान केवल धन और दौलत से बे-ज़ार हो जाए। क्योंकि धन और दौलत से कोई भी इंसान अपनी इच्छाओं से मुक्त नहीं हो सकता। जीवन की आवश्यकताएँ और संबंधित व्यक्तियों की देखभाल एक अनिवार्य कार्य है और इसका संबंध 'हुक़ूक़-उल-इबाद' (मानवाधिकार) से है। इस्तिग़ना का अर्थ यह है कि इंसान जो कुछ भी करता है, उस कार्य में परमेश्वर की रज़ा (खुशी) हो, और इस मानसिकता या कार्य से परमेश्वर की सृष्टि (श्रष्टि) को किसी भी प्रकार से नुकसान न पहुंचे। हर व्यक्ति स्वयं खुश रहे और मानवता के लिए कोई दुःख और तकलीफ का कारण न बने। यह आवश्यक है कि व्यक्ति के मन में यह बात स्थिर हो कि ब्रह्मांड में मौजूद हर चीज़ का मालिक और नियंत्रक परमेश्वर है। परमेश्वर ही है जिसने पृथ्वी बनाई, परमेश्वर ही है जिसने बीज बनाया, परमेश्वर ही है जिसने पृथ्वी और बीज को यह क्षमता दी कि बीज पेड़ में बदल जाए और पृथ्वी उसे अपनी गोदी में पाला-पोसा करे। पानी पेड़ों की नसों में खून की तरह दौड़े, हवा रोशनी बनकर पेड़ के अंदर काम करने वाले रंगों की कमी को पूरा करे। धूप पेड़ के अधपके फल को पकाने के लिए निरंतर संबंध और नियम के साथ पेड़ से जुड़ी रहे। चाँदनी फलों में मिठास पैदा करे। पृथ्वी का यह कर्तव्य है कि वह ऐसे पेड़ उगाए जो इंसान की जरूरतों को पूरा करें। पेड़ों का यह कर्तव्य है कि वे ऐसे पत्ते और फल उगाएँ जिनसे सृष्टि की आवश्यकता मौसम के अनुसार पूरी होती रहे।

ब्रह्मांड की सदस्यता:

परमेश्वर यह चाहता है कि ब्रह्मांड के अंदर मौजूद हर चीज़ लगातार गति में रहे। जो व्यक्ति परमेश्वर के इस आदेश, इच्छा और गुण को स्वीकार करके संघर्ष करते हैं, वे ब्रह्मांड के सदस्य बन जाते हैं, और यह सदस्यता ब्रह्मांड को गतिशील और सक्रिय बनाए रखती है। सवाल यह उठता है कि अगर परमेश्वर मनुष्य जाति के व्यक्तियों को जन्म के समय मानसिक रूप से पिछड़ा, पागल या मानसिक विकारग्रस्त बना दे,

www.ksars.org

तो मनुष्य क्या कर सकता है, और इस स्थिति में कौन-सी प्रगति संभव हो सकती है? क्या हम नहीं देखते कि कुछ बच्चे ऐसे भी जन्म लेते हैं, जो प्रगति और गिरावट से अनजान होते हैं? अब हमने यह बताया कि वे लोग, जिनके अंदर परमेश्वर की उपस्थिति के साथ संबंध है, वे यह समझते हैं कि जीवन के हर कार्य पर परमेश्वर का प्रभाव है। जब किसी व्यक्ति के अंदर यह विचारधारा पूरी तरह से स्थापित हो जाती है, तो आध्यात्मिक दृष्टि से उस व्यक्ति का नाम 'मुस्तग़नी' होता है। जब कोई व्यक्ति मुस्तग़नी हो जाता है, तो उसके भीतर ऐसी विचारधारा विकसित हो जाती है कि वह यह महसूस करने लगता है कि उसका संबंध एक ऐसी सत्ता से है, जो उसकी पूरी ज़िन्दगी पर व्याप्त है।बार-बार जब यह अहसास उभरता है, तो यह अहसास एक प्रदर्शनात्मक रूप धारण कर लेता है और वह यह देखने लगता है कि एक रोशनी का एक दायरा है और मैं इस दायरे में मौजूद हूँ। यह दायरा एक रोशनी है और इस रोशनी में इंसान सहित सारी ब्रह्मांड बंद है। यह बात सभी आकाशीय किताबों ने बहुत स्पष्टता के साथ बताई है। आकाशीय किताबें बताती हैं कि आकाश और पृथ्वी जिस तख़्त पर क़ायम हैं, वह एक रोशनी है, जो हर क्षण, हर समय, ब्रह्मांड की हर चीज़ को परमेश्वर के साथ जुड़ा हुआ रखता है। जब मुस्तग़नी व्यक्ति की नज़र इस दायरे या रोशनी के इस आभामंडल पर रुकती है, तो उसकी नज़रों के सामने वे सूत्र आ जाते हैं जिन सूत्रों से सृजन होता है।

स्वर्ग और नर्क:

स्वर्ग में वे लोग रहेंगे जिन्होंने आकाशीय किताबों की शिक्षाओं को इस प्रकार समझा जैसा कि पैगम्बरों ने समझा। स्वर्ग के निवासी वे लोग होंगे जिनके सिर पर Allah ने अपनी कृपा का हाथ रखा है। जिन लोगों पर Allah ने अपनी कृपा का हाथ रखा है, वे के मित्र हैं। चूंकि डर, दुख, और परेशानी से मुक्त हैं, इसलिए Allah के मित्र में Allah की विशेषता का प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से दिखाई देता है और उन्हें न तो डर होता है और न ही दुख। और जो लोग के मित्र नहीं हैं, स्वर्ग का वातावरण उन्हें कभी स्वीकार नहीं करेगा। वे नर्क की ईंधन होंगे। यदि किसी में डर और दुख है, तो वह के बताए हुए कानून के अनुसार Allah का मित्र नहीं है। और जो व्यक्ति Allah का मित्र नहीं है, स्वर्ग उसे नकार देती है।

विश्वास और भरोसा:

साधारण परिस्थितियों में जब इस्तगना (स्वतंत्रता) का उल्लेख किया जाता है, तो इसका मतलब यह होता है कि Allah पर कितना विश्वास और भरोसा है। विश्वास और भरोसा लगभग हर आदमी के जीवन में शामिल होता है। लेकिन जब हम विश्वास और भरोसे की परिभाषा करते हैं, तो हमें इसके अलावा कुछ और नजर नहीं आता, जैसे हमारी अन्य इबादतों की तरह विश्वास और भरोसा भी शब्दों का एक आकर्षक जाल बनकर रह जाता है। विश्वास और भरोसा से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने सभी मामलों को Allah के हवाले कर दे! लेकिन जब हम व्यवहारिक जीवन के हालात का अवलोकन करते हैं, तो यह बात सिर्फ शब्दों और अस्थिरता की तरह लगती है। और यह एक ऐसी बात है जिसका असर हर आदमी के जीवन में होता है। हर आदमी कुछ इस तरह सोचता है कि अगर संस्था का मालिक या मालिक मुझसे नाराज हो गया, तो

www.ksars.org

मुझे नौकरी से निकाल दिया जाएगा, या मेरी तरक्की नहीं होगी, या तरक्की गिरावट में बदल जाएगी। यह बात भी हमारे सामने है कि जब किसी काम का परिणाम अच्छा होता है, तो हम कहते हैं कि यह परिणाम हमारी बुद्धि, हमारी मेहनत और हमारी समझ से हुआ है। इस तरह की अनेकों मिसालें हैं, जो यह साबित करती हैं कि व्यक्ति का Allah पर विश्वास और भरोसा सिर्फ एक कयास होता है। जिस व्यक्ति में विश्वास और भरोसा नहीं होता, उसमें इस्तगना भी नहीं होता। विश्वास और भरोसा असल में एक विशेष संबंध है जो व्यक्ति और Allah के बीच स्थापित होता है। और जिस व्यक्ति का Allah के साथ यह संबंध बन जाता है, उसके अंदर से दुनिया की लालच समाप्त हो जाती है। ऐसा बंदा दूसरे सभी बंदों की मदद और सहायता से बेनियाज़ हो जाता है। वह यह जान लेता है कि परमेश्वर की गुण ये हैं कि परमेश्वर एक है। परमेश्वर बेनियाज़ है, परमेश्वर शृष्टि से किसी प्रकार की आवश्यकता नहीं रखता। परमेश्वर न किसी का बेटा है और न किसी का पिता है। परमेश्वर का कोई परिवार भी नहीं है। इन गुणों की रोशनी में जब हम शृष्टि का विश्लेषण करते हैं तो जान लेते हैं कि शृष्टि एक नहीं है। शृष्टि हमेशा बहुता से होती है। शृष्टि जीवन के कर्मों और गतिविधियों को पूर्ण करने के लिए किसी न किसी आवश्यकता की पाबंद होती है। यह भी आवश्यक है कि शृष्टि किसी की संतान हो और यह भी आवश्यक है कि शृष्टि की कोई संतान हो और शृष्टि के लिए यह भी आवश्यक है कि उसका कोई परिवार हो। परमेश्वर द्वारा बताए गए इन पाँच एजेंसियों में जब "क़लंदर चेतना" विचार से कार्य किया जाता है तो यह रहस्य उद्घाटित होता है कि परमेश्वर के द्वारा बताई गई पाँच गुणों में से शृष्टि एक गुण में परमेश्वर की अस्तित्व से सीधा संबंध स्थापित कर सकती है। शृष्टि के लिए यह कभी भी संभव नहीं है कि वह बहुता से बेनियाज़ हो जाए। शृष्टि इस बात पर भी मजबूर है कि उसकी संतान हो या वह किसी की संतान हो। शृष्टि का परिवार होना भी आवश्यक है।

परमेश्वर की पाँच विशेषताओं में से चार विशेषताओं में सृष्टि (मखलूक) अपना अधिकार का उपयोग नहीं कर सकती। केवल एक स्थिति में सृष्टि परमेश्वर की विशेषताओं से जुड़ी हो सकती है। वह विशेषता यह है कि सभी साधनों से मस्तिष्क को हटा कर अपनी आवश्यकताओं और जरूरतों को परमेश्वर के साथ जोड़ा जाए। व्यक्ति के अंदर यदि सृष्टि के साथ जरूरत के तत्व काम कर रहे हैं तो वह तवक्कुल और भरोसे के कर्मों से दूर है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले यात्री को यह अभ्यास कराया जाता है कि जीवन की सभी मांगों और जीवन की सभी क्रियाओं और गतिविधियों को जब शिष्य गुरु के सुपुर्द कर देता है तो वह उसकी सभी जरूरतों का पालन करता है, बिल्कुल उसी तरह जैसे एक दूध पीते बच्चे के पालनकर्ता उसके माता-पिता होते हैं। जब तक बच्चा चेतना में नहीं आता, माता-पिता चौबीस घंटे उसकी चिंता में लगे रहते हैं। घर का दरवाजा न खुले कि बच्चा बाहर चला जाएगा, सर्दी है तो बच्चे ने कपड़े क्यों उतार दिए, सर्दी लग जाएगी। खाना समय पर नहीं खाया तो माता-पिता परेशान होते हैं कि बच्चे ने खाना समय पर क्यों नहीं खाया। बच्चा जरूरत से अधिक सो गया तो यह चिंता कि क्यों अधिक सो गया। नींद कम आई तो यह चिंता कि बच्चा कम क्यों सोया। हर व्यक्ति जो पैदा हुआ है और जिसकी संतान है और जिसने अपने छोटे भाई-बहनों को देखा है, वह अच्छे से जानता है कि बच्चे की सभी बुनियादी जरूरतों का पालन उसके माता-

www.ksars.org

पिता करते हैं और यह पालन इस प्रकार होता है कि इसका बच्चे के अपने मस्तिष्क से कोई संबंध नहीं होता। क्योंकि शिष्य भक्त या चेले की आध्यात्मिक संतान गुरु की होती है, इसलिए वह शिष्य की धार्मिक, सांसारिक, और आध्यात्मिक सभी प्रकार की देखभाल करता है। और जैसे-जैसे देखभाल बढ़ती है, गुरु का मस्तिष्क शिष्य की ओर स्थानांतरित होता रहता है। जब गुरु शिष्य की देखभाल करता है तो शिष्य का अचेतन यह जान लेता है कि जो व्यक्ति मेरी देखभाल कर रहा है, उसका पालनकर्ता परमेश्वर है। और धीरे-धीरे उसका मस्तिष्क स्वतंत्र हो जाता है और उसकी सभी जरूरतें और सभी आवश्यकताएँ परमेश्वर की सत्ता के साथ जुड़ जाती हैं।

क़लंदर चेतना विद्यालय :

क़लंदर चेतना विद्यालय में प्रवेश से पूर्व, मेरे भीतर दो प्रमुख दुर्गुण अत्यधिक प्रबल थे। प्रथम यह कि मेरा मानसिक दृष्टिकोण व्यापारिक था। जब भी मैं किसी से मिलता, उसकी व्यक्तित्व से कोई न कोई अपेक्षा अंकित कर लेता। क़लंदर बाबा ओलिया (रह.) की शरण में आने के पश्चात्, सबसे पहले इस मानसिकता पर आघात हुआ। जिस व्यक्ति से जिस अपेक्षा का सूत्रपात किया, वह पूरी नहीं हुई। यह प्रक्रिया इतनी बार पुनरावृत्त हुई कि मित्रों की ओर से निराशा का वातावरण व्याप्त हो गया और अंततः मेरे मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न हुआ कि कोई भी मित्र तब सहायक हो सकता है, जब परमेश्वर की मर्जी हो।

सोना खाओ :

इसके पश्चात दूसरा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। रूहानी दृष्टि से देखा कि एक अत्यंत विस्तृत कक्ष है, जिसमें अनेक अलमारियाँ रखी हुई हैं। इन अलमारियों में सोने की ईंटें रखी हुई हैं। यह अवस्था साढ़े तेरह घंटों तक बनी रही कि मैं एक कक्ष में बंद हूँ और वह कक्ष सोने की ईंटों से भरा हुआ है। इस स्थिति में मेरा मस्तिष्क रोटी खाने की ओर प्रवृत्त होता, तो मेरे श्रवणेंद्रिय में एक मायावी ध्वनि गूंजती, "सोना खाओ।" जल पान की इच्छा होती, परंतु वहाँ जल का कोई अस्तित्व नहीं था, तब वही ध्वनि पुनः सुनाई देती, "सोने चाँदी से प्यास बुझाओ।" और जब मैं इस अवस्था से बाहर आया, तो दस रुपये के नोट से भी मानसिक अशुद्धता का अनुभव होने लगा। इसके पश्चात परमेश्वर की ओर से निरंतर ऐसे असंख्य घटनाएँ घटित हुईं, जिनका अस्तित्व में आना तर्कसंगत रूप से असंभव और कठिन प्रतीत होता था। एक बार, दस बार, बीस बार, सौ बार इस प्रकार के अनुभवों के पुनरावृत्त होने से मस्तिष्क में यह पूर्ण विश्वास स्थापित हो गया कि जो परमेश्वर चाहता है, वही होता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि रूहानीता केवल शब्दों पर आधारित कोई ज्ञान नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक और प्रत्यक्ष अनुभवजन्य ज्ञान है।

ऑटोमेटिक मशीन :

जीवन की उत्पत्ति से लेकर मृत्यु तक, और मृत्यु के बाद की अवस्थाएँ जैसे आराफ़, हश्र, नशर, हिसाब व किताब, जन्नत व दोज़ख, और परमेश्वर की तजल्ली का दीदार, सभी कुछ विश्वास और यकीन के

www.ksars.org

आधार पर अवस्थित हैं। यह बात बुनियादी रूप से सत्य है कि मनुष्य को यह यकीन होता है कि वह जीवित है, उसका अस्तित्व है, उसकी बुद्धि और चेतना सक्रिय है, वह एक सीमित मात्रा में स्वायत्त है, जबकि एक बड़ी सीमा में वह बिना किसी इच्छा या इरादे के विभिन्न मानसिक और शारीरिक अवस्थाओं का सामना करता है। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई व्यक्ति अपने इरादे से श्वास लेना आरंभ करता है, तो वह कुछ ही समय में थक कर हांफने लगेगा। किसी सामान्य दिनचर्या में, जब उसे भूख लगती है, तो वह भोजन ग्रहण करता है, और प्यास लगने पर जल का सेवन करता है। ठीक इसी तरह, मनुष्य के भीतर एक निरंतर, स्वचालित मशीन सक्रिय रहती है, जो बिना किसी बाहरी आदेश के, हर पल और हर क्षण कार्य करती रहती है। इस मशीन के विभिन्न घटक जैसे मस्तिष्क, मुख्य अंग (हृदय, फेफड़े, गुर्दे, यकृत), आंतें आदि लगातार सक्रिय रहते हैं।

चार अरब की जनसंख्या में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपने इरादे और स्वतंत्र इच्छा से इस अंतर्निहित मशीन को संचालित कर सके। यह मशीन पूरी तरह से स्वायत्त रूप से कार्य कर रही है। इस मशीन में उपयोग होने वाली ऊर्जा के स्रोत पर भी मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं है, और इसका प्रमाण यह है कि जब यह मशीन रुक जाती है, तो पृथ्वी की सबसे शक्तिशाली प्रणालियाँ और अत्याधुनिक विज्ञान भी इसे पुनः चालू नहीं कर सकतीं। यह मशीन प्राकृतिक नियमों के तहत धीरे-धीरे भी बंद हो सकती है और अचानक भी रुक सकती है। जब यह धीरे-धीरे बंद होती है, तो उसे बीमारी कहा जाता है, और जब यह अचानक रुक जाती है, तो उसे हार्ट फेलियर (HEART FAILURE) कहा जाता है। मनुष्य यह मानता है कि रोगों का उपचार उसकी इच्छाशक्ति और स्वायत्तता पर निर्भर करता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि चार अरब की जनसंख्या में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो जानबूझकर बीमार होना चाहे या मृत्यु को स्वीकार करे। यदि जीवन का अस्तित्व पूरी तरह से इच्छा और स्वायत्तता पर आधारित होता, तो कोई भी व्यक्ति मृत्यु से अज्ञेय नहीं होता। इसी प्रकार, जीवन के सभी मौलिक तत्व और वह सभी क्रियाएँ जिनके द्वारा जीवन निरंतर गतिमान रहता है, ये मनुष्य की इच्छाओं और स्वायत्तता से परे हैं। यदि हम इस पर विचार करें, तो जीवन का प्रारंभ उस क्षण से होता है जब मनुष्य जन्म लेता है, और जन्म के समय व्यक्ति के पास अपनी इच्छाओं और स्वायत्तता का कोई नियंत्रण नहीं होता। लाखों वर्षों में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है जिसने अपनी इच्छाशक्ति से जन्म लिया हो। उत्पन्न होने वाली प्रत्येक वस्तु और हर व्यक्ति एक निर्धारित अवधि के लिए इस संसार में आता है, और जब वह समय समाप्त हो जाता है, तो वह एक भी क्षण के लिए यहाँ नहीं ठहर सकता, और मृत्यु का वरण करता है। यह एक ऐसी वस्तु है जिस पर चिंतन और विचार करने की आवश्यकता है। प्रत्येक क्षण, प्रत्येक मिनट, प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक सेकंड यह स्थिति घटित हो रही है। संक्षेप में, परमेश्वर अपनी इच्छा से सृजन करता है, और सृजन विभिन्न रूपों में होता है। आकार, कद और रूप में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इस संसार में कोई उदाहरण नहीं मिलता जहाँ किसी व्यक्ति का कद अपनी जन्मजात ऊँचाई से सात फुट बढ़ गया हो, या साठ फुट की ऊँचाई वाला कोई व्यक्ति अचानक ढाई फुट का हो गया हो।

मनुष्य, समय और खिलौना:

www.ksars.org

जब हम बुद्धि और चेतना की तुलना करते हैं, तो कोई व्यक्ति हमें अधिक सक्षम दिखाई देता है, कोई कम सक्षम और कोई बिल्कुल अज्ञानी होता है। विज्ञान अंतरिक्ष (SPACE) में भ्रमण का दावा कर सकता है, लेकिन ऐसी कोई उदाहरण नहीं आई है कि किसी अज्ञानी व्यक्ति को बुद्धिमान बना दिया गया हो।

परमेश्वर अपनी इच्छा से बुद्धि और चेतना प्रदान करते हैं। वे व्यक्ति के भीतर विचार और गहराई प्रदान करते हैं। दुर्भाग्य यह है कि जिन लोगों को परमेश्वर विचार और गहराई प्रदान करते हैं, वे इसे अपनी व्यक्तिगत विशेषता मानते हैं, और जब यह विचार और गहराई उनसे छिन जाती है, तो वे कुछ भी नहीं कर सकते।

जीवन के सभी घटक एक शक्ति के अधीन होते हैं, वह शक्ति जैसी चाहे उन्हें रोक देती है और जैसी चाहे उन्हें चला देती है। कलंदर चेतना के संस्थापक कलंदर बाबा ओलिया (र.अ.) फरमाते हैं कि लोग मूर्ख हैं, वे कहते हैं कि हमारी स्थिति परिस्थितियों पर निर्भर है। मनुष्य अपनी इच्छा और इच्छा के अनुसार परिस्थितियों में बदलाव कर सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। मनुष्य एक खिलौना है। परिस्थितियाँ जिस प्रकार की चाबी उसके भीतर भर देती हैं, उसी प्रकार यह कूदना, नाचना शुरू कर देता है। वास्तविकता यह है कि यदि वास्तव में मनुष्य को परिस्थितियों पर अधिकार होता, तो कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं होता, कोई भी व्यक्ति बीमार नहीं पड़ता, कोई भी व्यक्ति बूढ़ा नहीं होता और कोई भी व्यक्ति मृत्यु के मुख में नहीं जाता।

इतिहास यह प्रमाणित करता है कि वे लोग, जिन्होंने स्वयं को परमेश्वर घोषित किया, उनका अंत मृत्यु के पंजों द्वारा हुआ, जिसने उनके सामर्थ्य और बल को नष्ट कर दिया। शद्दाद, नमरूद और फरऔन जैसी उदाहरणें केवल कथाएँ नहीं हैं जिन्हें हम हल्के में ले लें। इतिहास समय-समय पर अपने आप को पुनः प्रस्तुत करता है, हालांकि इसका रूप, नाम और आकार बदलते रहते हैं। वर्तमान समय में ईरान के सम्राट की एक और ज्वलंत मिसाल हमारे सामने है, जिसने ढाई हजार साल की सालगिरह मनाई, लेकिन मृत्यु के हाथों वह इस हद तक विवश और अपमानित हुआ कि उसकी साम्राज्य की ज़मीन भी उसके लिए अपर्याप्त हो गई और वह परदेश में मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके निधन के बाद उसकी स्थिति ऐसी हो गई कि कोई भी उसकी सहायता को आगे नहीं आया। यदि मानवता अपने हालात पर पूरी तरह से काबू रखती तो इतना विशाल सम्राट अपनी दरिद्रता में कैसे डूब सकता था? इस तरह के न जाने कितने घटनाएँ प्रतिदिन घटित होती रहती हैं। बहरहाल, हम इन घटनाओं पर गहरे विचार नहीं करते और उन्हें संयोग या दुर्घटना के रूप में ग्रहण कर लेते हैं, जबकि ब्रह्माण्ड में न तो संयोग है, न कोई दुर्घटना, और न ही कोई मजबूरी।

इस ब्रह्माण्ड का संचालन एक निश्चित और सुनियोजित प्रणाली के तहत होता है, जिसका प्रत्येक घटक आपस में जुड़ा हुआ है। इस प्रणाली में न तो कोई संयोग है, न कोई दुर्घटना और न ही कोई अनिवार्यता है। जब किसी व्यक्ति को यह पूर्ण विश्वास हो जाता है कि इस प्रणाली में प्रत्येक घटक, चाहे वह अत्यन्त सूक्ष्म हो या विशाल, केवल और केवल परमेश्वर की निर्धारित व्यवस्था के अनुसार कार्य कर रहा है, तो उसके मन में एक अडिग विश्वास का निर्माण होता है। जब उसे इस विश्वास की गतिशीलता मिलती है और जीवन में अनेक घटनाएँ घटित होती हैं, तो ये घटनाएँ इतनी सुसंगत और मजबूत कड़ियाँ बन जाती हैं कि

www.ksars.org

वह यह मानने और समझने के लिए बाध्य हो जाता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सर्वोच्च शासक केवल और केवल परमेश्वर ही है।

www.ksars.org

आकाश से नोट गिरा:

यह बात हम जानते हैं कि किसी वस्तु पर पूर्ण विश्वास केवल तब संभव है जब वह वस्तु या क्रिया, जिसके बारे में हम नहीं जानते कि वह किस प्रकार घटित होगी, बिना किसी इच्छा, अधिकार और साधनों के पूरी होती रहे।

एक बार की बात है, मैं अपने कक्ष में बैठा हुआ क़लंदर बाबा औलिया की कृति **"लोह-ओ-क़लम"** के पृष्ठों का पुनर्लेखन कर रहा था। यह समय अस्र और मग़रिब के मध्य का था। इसी दौरान लाहौर से कुछ अतिथि पधारे। सामान्य परिस्थितियों में, क्योंकि कुछ समय पश्चात भोजन का समय था, यह विचार आया कि इन अतिथियों को भोजन कराना चाहिए। यह घटना उस समय की है जब मैं "हैरत" के आध्यात्मिक चरण में था। उस दौर में न केवल भोजन का कोई प्रबंध था, बल्कि वस्त्र भी सीमित होकर केवल एक लुंगी और एक बनियान तक रह गए थे। यह अलग विवरण का विषय है कि ऐसे साधनहीन परिधानों में ग्रीष्म, शीत और वर्षा के दिन कैसे व्यतीत हुए। जब परमेश्वर की कृपा होती है, तो वह साहस और सामर्थ्य प्रदान करता है, जिससे बड़ी से बड़ी कठिनाइयाँ क्षण भर में दूर हो जाती हैं। मैंने यह विचार किया कि पड़ोसी से पाँच रुपये उधार मांगकर भोजन की व्यवस्था की जाए। किंतु तत्क्षण यह भी विचार उत्पन्न हुआ कि यदि पड़ोसी ने सहायता से इनकार कर दिया, तो यह अत्यंत लज्जाजनक होगा। इसके पश्चात यह सोचा कि समीप के एक छोटे होटल से उधार भोजन प्राप्त कर लिया जाए, किंतु स्वाभाविक प्रवृत्ति ने इसे भी स्वीकार नहीं किया। अंततः यह विचार किया कि यदि परमेश्वर ने चाहा, तो भोजन की व्यवस्था स्वाभाविक रूप से हो जाएगी। इसके बाद मैं कक्ष से बाहर निकला। जैसे ही मैंने द्वार के बाहर कदम रखा, छत से पाँच रुपये का एक नोट गिरा। वह नोट अत्यंत नया और स्वच्छ था। उसके ज़मीन पर गिरने की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दी। जब मैंने उस नोट को देखा, तो मेरे मन पर एक प्रकार की विस्मयकारी दशा छा गई। किंतु उसी क्षण अंतर्मन में यह ध्वनि प्रतिध्वनित हुई: **"यह परमेश्वर की ओर से है।"** मैंने वह नोट उठा लिया और इससे भोजन की समुचित व्यवस्था सहजता से संपन्न हो गई।

साठ रुपये:

ईद के चाँद को देखने के पश्चात बच्चों को ईदी देने के संबंध में विचार उत्पन्न हुआ और मैं अपने मित्र के पास कुछ रुपये उधार लेने के लिए गया। मित्र ने मुझसे कहा कि रुपये तो उसके पास मौजूद हैं, लेकिन वे किसी और की अमानत हैं। मेरी मानसिकता ने इस बात को स्वीकार नहीं किया कि मैं अपने मित्र को उसकी अमानत में विश्वासघात करने का दोषी ठहराऊँ। वहाँ से चलते हुए मैं बाज़ार में चला गया। वहाँ मुझे एक अन्य मित्र मिले, जिन्होंने मुझसे अत्यंत अच्छे तरीके से व्यवहार किया और प्रस्ताव रखा कि यदि आपको ईद के अवसर पर रुपये या धन की आवश्यकता हो, तो कृपया निःसंकोच ले लीजिए। किंतु मैंने उनकी इस पेशकश को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, "साहब! मैंने आपसे पहले कुछ रुपये उधार लिए थे। अब मैं उन्हें चुकता करना चाहता हूँ।" और उन्होंने मेरी जेब में साठ रुपये डाल दिए। मैं घर वापस आया और उन साठ रुपयों से ईद की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर ली।

www.ksars.org

इस घटना में जो सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात है, वह यह है कि मैंने अपने मित्र से तीस रुपये उधार लेने के लिए कदम बढ़ाया था, किंतु परमेश्वर ने मुझे इतने रुपये दे दिए जो मेरी आवश्यकता के लिए पर्याप्त थे। यह स्पष्ट है कि यदि तीस रुपये उधार के रूप में मिल जाते तो मेरी आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती। मैंने केवल दो घटनाएँ प्रस्तुत की हैं, इस प्रकार की अनगिनत घटनाएँ मेरे जीवन में घटित होती रही हैं।

गाँव में मुर्ग़ पलाऊ:

इस्तग़ना (निर्वासन) के संदर्भ में, गौस अली शाह कलंदर पानी पटी अपनी रचनात्मक कृति **"तज़करा-ए-गौसिया"** में एक अत्यंत दिलचस्प घटना का उल्लेख करते हैं, जो निम्नलिखित है: मैं एक ग्राम की मस्जिद में इमाम के रूप में नियुक्त था। एक दिन, एक फकीर वहाँ आकर ठहर गया। मैंने उसे नमाज़-ए-मग़रिब के बाद भोजन के लिए आमंत्रित किया, तो उसने प्रश्न किया, "खाने में क्या है?" संयोगवश, उस दिन दाल-रोटी थी। फकीर ने यह सुनकर कि केवल दाल-रोटी उपलब्ध है, कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं दी और मौन रह गया। मैंने पुनः उसे खाने के लिए आग्रह किया, तो उसने कहा, "मेरा परमेश्वर से यह विशेष समझौता है कि यदि मुझे मुर्ग़ पलाऊ मिलता है, तो ही मैं खाता हूँ, अन्यथा नहीं।" मैंने इसे मानसिक विकार समझते हुए, यह निर्णय लिया कि मैं उसके लिए भोजन सुरक्षित रखूँ। यह घटना बरसात के मौसम में घटी, जब आकाश में घने बादल थे। मैं अपने कक्ष में चला गया और दरवाज़ा बंद कर सोने की तैयारी करने लगा। किंतु कुछ समय पश्चात, मूसलधार वर्षा शुरू हो गई और इसी दौरान किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। मैंने उठकर दरवाज़ा खोला, तो देखा कि एक व्यक्ति, जो सिर पर बोरी ओढ़े हुए था, दरवाजे पर खड़ा था। उस व्यक्ति ने मुझे एक थाल सौंपते हुए कहा, "मलाजी! हमने मन्नत मांगी थी, यह मुर्ग़ पलाऊ है। बर्तन सुबह वापस कर दिए जाएंगे।" मैं उस मुर्ग़ पलाऊ को लेकर फकीर के पास गया और थाल उसे सौंप दिया। फकीर ने भोजन को पूर्ण संतुष्टि के साथ खाया। यह घटना न केवल परमेश्वर की ओर से दी गई विशेष कृपा को दर्शाती है, बल्कि यह भी बताती है कि एक भक्त का विश्वास और त्याग किस प्रकार उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होते हैं।

मछली मिल जाएगी?

यह घटना उस समय की है जब रात का समय लगभग साढ़े ग्यारह बजे था। **कलंदर बाबा औलिया (रह.)** ने मुझसे प्रश्न किया, "क्या मछली मिल जाएगी?" मैंने आदरपूर्वक उत्तर दिया, "हुज़ूर, इस समय रात के साढ़े ग्यारह बज रहे हैं, लेकिन मैं प्रयास करता हूँ। संभवतः किसी होटल में मिल जाए।" इस पर कलंदर बाबा औलिया (रह.) ने स्पष्ट किया, "होटल की पकी हुई मछली मैं नहीं खाता।" इस उत्तर ने मुझे गहरी चिंतनावस्था में डाल दिया कि इस समय कच्ची मछली का प्रबंध कहाँ से होगा। उस समय नाज़िमाबाद एक विरल आबादी वाला क्षेत्र था। तथापि, मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि हर संभव प्रयास करके मछली की व्यवस्था करनी चाहिए। यह सोचकर जब मैंने टोकरी उठाई, तो बाबा साहिब (रह.) ने कहा, "अब रहने दो। यह कार्य सुबह

www.ksars.org

देख लेंगे।" अभी एक घंटे का समय भी नहीं गुज़रा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। जब मैंने बाहर जाकर देखा, तो एक व्यक्ति हाथ में एक ताज़ा मछली लिए खड़ा था। उसने कहा, "मैं ठट्टा से आ रहा हूँ, और यह मछली कलंदर बाबा औलिया (रह.) की नज़र है।" यह कहने के बाद वह व्यक्ति चुपचाप वहाँ से चला गया। यह घटना एक आध्यात्मिक जीवन के रहस्यमय पहलुओं और परमेश्वर की असीम कृपा का एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

पक्षियों का आहार

अनगिनत घटनाओं के परिणामस्वरूप यह विश्वास दृढ़ और अडिग हो चुका है कि आवश्यकता की पूर्ति का एकमात्र प्रबंधक परमेश्वर है। परमेश्वर ने यह वादा किया है कि वह पालनहार है और वह हमें आहार प्रदान करता है। परमेश्वर के वे प्रतिनिधि, जो तक़्वीन (सृष्टि के प्रबंधन) के कार्यों में नियुक्त हैं और जिन्हें परमेश्वर ने "फ़ी-अल-अर्द ख़लीफ़ा" (पृथ्वी पर प्रतिनिधि) कहा है, इस दायित्व का निर्वाह करते हैं कि सृष्टि को जीवित रखने के लिए संसाधनों की आपूर्ति सुनिश्चित करें। यह अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारणीय तथ्य है कि परमेश्वर अपनी इच्छा से सृष्टि को उत्पन्न करता है। जीव तब तक जीवन प्राप्त करता है, जब तक परमेश्वर उसे जीवित रखना चाहता है। जब परमेश्वर की इच्छा समाप्त होती है, तो जीव एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। लेकिन मनुष्य यह भ्रम पालता है कि वह अपनी शक्ति और इच्छा से जीवित है तथा उसकी आर्थिक व्यवस्था भी उसके नियंत्रण में है।

किसान जब फसल काटता है, तो झाड़ू से हर दाने को समेट लेता है। जो दाने खराब हो जाते हैं, या कीड़ों द्वारा नष्ट कर दिए जाते हैं, उन्हें भी वह एकत्र कर जानवरों को खिला देता है। जिस ज़मीन पर गेंहू को बालियों से अलग कर साफ़ किया जाता है, वहां भी खोजने पर मुश्किल से कुछ दाने मिलते हैं। किंतु जब हम यह देखते हैं कि पक्षी, जो परमेश्वर की सृष्टि का अभिन्न अंग हैं, अरबों-खरबों की संख्या में दाना चुगते हैं, तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि किसान द्वारा एक भी दाना नहीं छोड़ा जाता, तो पक्षियों के आहार का स्रोत क्या है?

नियम यह है कि जब पक्षियों का झुंड इस इरादे से भूमि पर उतरता है कि उन्हें दाना चुगना है, तो उनके पैर भूमि पर पड़ने से पहले प्रकृति वहां उनके आहार का प्रबंध कर देती है। यदि पक्षियों की खाद्य आपूर्ति किसानों पर निर्भर होती, तो समस्त पक्षी भूख के कारण विलुप्त हो जाते।

पेड़ और घास

चौपायों की संख्या मानव जाति की तुलना में कहीं अधिक है। वे पृथ्वी पर उगने वाली घास और वृक्षों की पत्तियों का उपभोग करते हैं। जिस परिमाण में वे इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं, उसे देखकर यह विचार उत्पन्न होता है कि पृथ्वी पर एक भी वृक्ष शेष नहीं रहना चाहिए। किंतु प्रकृति उनकी पोषण आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु इतनी प्रचुर मात्रा में घास और पत्तियां उत्पन्न करती है कि उनकी कोई कमी दृष्टिगोचर नहीं होती। यह उन वृक्षों और घास

www.ksars.org

का उल्लेख है, जिन पर मनुष्य का कोई अधिकार या नियंत्रण नहीं है। प्रकृति अपनी स्वेच्छा से इनका सृजन करती है और अपनी इच्छा से उन्हें हरा-भरा और जीवन्त बनाए रखती है।

जीवन की आधारभूत आवश्यकताएं, जैसे वायु, जल, धूप, और चंद्रमा की रोशनी, परमेश्वर द्वारा बिना किसी मानवीय श्रम या प्रयास के प्रदान की जाती हैं। यदि मनुष्य यह दावा करता है कि वह अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूर्ण करने में सक्षम है, तो उसे यह भी प्रदर्शित करना चाहिए कि उसके पास ऐसी कौन-सी शक्ति या ज्ञान है, जिसके द्वारा वह धूप प्राप्त कर सकता है। यदि पृथ्वी के गर्भ में स्थित जल स्रोत सूख जाएं, तो मनुष्य के पास ऐसी कौन-सी सामर्थ्य है, जिससे वह इन स्रोतों को पुनः प्रवाहित कर सके? वायु का भी यही सिद्धांत है। यदि वायु का प्रवाह रुक जाए, या परमेश्वर का वह तंत्र, जो वायु का निर्माण और प्रवाह सुनिश्चित करता है, बाधित हो जाए, तो पृथ्वी पर विद्यमान अरबों-खरबों प्राणी एक पल में नष्ट हो जाएंगे। परमेश्वर की पालनकर्ता शक्ति और संसाधनों के वितरण से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रसंग हज़रत क़लंदर ग़ौस अली शाह द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

मज़दूर समुदाय

एक नगर में आर्थिक मंदी इतनी गंभीर हो गई कि वहाँ के बाजार पूर्णतः सूने हो गए। व्यापारिक गतिविधियों के अभाव में, स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि नगरवासियों ने धीरे-धीरे उस नगर से पलायन आरंभ कर दिया। इस आर्थिक अस्थिरता और पलायन के कारण, नगर में रहने वाले गरीब मजदूर अत्यंत परेशान और कष्टपूर्ण जीवन जीने को विवश हो गए। ऐसी विकट परिस्थिति में, जब किसी समाधान की कोई संभावना दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी, और बाजार की वीरानी समाप्त होने के आसार नहीं थे, तभी अचानक दो व्यापारी उस नगर में आए। इन व्यापारियों ने खरीदारी आरंभ कर दी। इनकी क्रियाशीलता ऐसी थी कि इन्होंने सुई से लेकर हाथी तक हर वस्तु की कीमत निर्धारित कर दी। इस अप्रत्याशित खरीदारी ने नगर में नई ऊर्जा का संचार किया। घोड़े, खच्चर, बैलगाड़ियाँ और मजदूर सभी सक्रिय हो गए। इन व्यापारियों ने घोषणा की कि वे पूरे सप्ताह खरीदारी करेंगे। साथ ही, उन्होंने अपनी आवश्यकताओं की सूची इतनी विस्तृत बना दी कि नगर के व्यापारियों को रात-दिन परिश्रम करके अन्य नगरों से भी सामान मंगवाने की व्यवस्था करनी पड़ी। एक सप्ताह के भीतर, वह उजड़ा हुआ नगर पुनः जीवंत हो गया। बाजारों में चहल-पहल लौट आई। नागरिकों के चेहरे पर प्रसन्नता और संतोष की झलक दिखाई देने लगी। जो लोग पहले पलायन कर चुके थे, वे पुनः लौट आए, और जिन्होंने पलायन की योजना बनाई थी, उन्होंने अपने निर्णय को स्थगित कर दिया। मजदूर वर्ग समृद्ध हो गया, और नगर में व्याप्त अस्थिरता, भूख और निर्धनता समाप्त हो गई। जब व्यापारी अपनी खरीदारी पूरी कर चुके और सारा सामान जहाज पर लादने की प्रक्रिया आरंभ हुई, तो नगर के समस्त मजदूर इस कार्य में व्यस्त हो गए। लोडिंग और अनलोडिंग के कार्य ने मजदूर वर्ग को पूर्णतः व्यस्त कर दिया। इस प्रकार, जो नगर पूर्णतः उजड़ने की कगार पर था, वह फिर से समृद्ध और सक्रिय हो गया। इन व्यापारियों के साथ एक वृद्ध मजदूर भी कार्यरत था। जब सारा सामान जहाज पर

www.ksars.org

लाद दिया गया और व्यापारी विदा होने लगे, तब उस वृद्ध ने उनसे कहा, "मैं अकेला हूँ। मैं आपकी सेवा करता रहूँगा और इसी प्रकार अपना शेष जीवन व्यतीत करूँगा। कृपया मुझे अपने साथ ले चलें।" व्यापारी और मजदूर जहाज पर सवार हो गए। जब जहाज समुद्र के मध्य में पहुँचा, तो व्यापारियों ने जहाज को समुद्र में डुबो दिया। इसके पश्चात, उन्होंने उस वृद्ध मजदूर से कहा, "हम दोनों फरिश्ते हैं। चूँकि यह नगर आर्थिक गतिविधियों के अभाव में उजड़ने के कगार पर था, इसलिए परमेश्वर ने हमें आदेश दिया कि इस नगर को पुनः आबाद किया जाए, ताकि सृष्टि की आजीविका का क्रम निर्बाध बना रहे।" यह कहने के बाद, वे दोनों फरिश्ते अदृश्य हो गए।

www.ksars.org

आदम और हव्वा की सृजन

आध्यात्मिक ग्रंथों और धार्मिक शिक्षा पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि आदम का सृजन एक मूल आत्मा या जीवात्मा से हुआ था। इस सृजन का प्रतीकात्मक रूप से निरूपण 'नफ़्स', 'आत्मा' और 'एकक बिंदु' के रूप में किया गया है।

साधारणतः, जब हम सृजन के संदर्भ में बात करते हैं, तो यह माना जाता है कि प्रत्येक प्रजाति का एक मूल आदम होता है, और समग्र जीव-जगत का उद्भव आदम और हव्वा से हुआ है। जैसे एक आदमी की प्रजाति का संबंध आदम और हव्वा से है, वैसे ही बकरी की प्रजाति का संबंध बकरा और बकरी से है। यही सिद्धांत ब्रह्मांड की प्रत्येक प्रजाति पर लागू होता है, जिसका आधार सृजन के कालक्रम में आदम और हव्वा का अस्तित्व है, और उनके माध्यम से प्रजातियों का विस्तार हुआ। बैल, बकरी, भेड़, कबूतर, बिल्ली, कुत्ता और नए-नए पक्षियों की उत्पत्ति भी आदम और हव्वा की संतानता से हुई। सृजन के इस संदर्भ में, हम मांस और हड्डियों के अस्थायी रूप को पहचानते हैं, जो हर जीवित प्राणी का भौतिक रूप है। प्रत्येक व्यक्ति—चाहे वह मनुष्य, भेड़, बकरी, बंदर, आदि हो—शारीरिक रूप से मांस और हड्डियों के अस्थायी शरीर से बना है। यह शरीर प्रारंभ में कोमल और नाजुक होता है, लेकिन समय के साथ यह कठोर और शुष्क हो जाता है, और अंततः यह शारीरिक व्यवस्था समाप्त हो जाती है। इन्हीं परिवर्तनों को जीवन और मृत्यु के रूप में पहचाना जाता है। हालाँकि, यह भी सुस्पष्ट किया जाता है कि जिस तरह शारीरिक रूप एक अस्थायी और नाशवान वस्तु है, उसी तरह वह अव्यक्त अस्तित्व, जिसे आत्मा, नफ़्स, बिंदु या रूह के रूप में पहचाना जाता है, स्थायी और अपरिवर्तनीय होता है। जब तक यह अव्यक्त अस्तित्व शारीरिक ढांचे को धारण करता है, तब तक शरीर सक्रिय, जीवंत और गतिशील रहता है; लेकिन जैसे ही यह अव्यक्त अस्तित्व शारीरिक ढांचे से संबंध विच्छेद कर लेता है, शरीर में कोई भी जीवन या गतिशीलता शेष नहीं रहती। इस अदृश्य अस्तित्व की पहचान केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भों में की जाती है, जहां इसे निरंतरता और शाश्वतता का प्रतीक माना जाता है।

क़लंदरिया सिलसिले से जब आध्यात्मिक दुनिया के यात्री को क़लंदर चेतना का सम्बन्ध प्राप्त होता है, तो उसकी अंतरदृष्टि यह देख लेती है कि आत्मा, नफ़्स, बिंदु या रूह, सृष्टि करने वाली हिस्ती के अस्तित्व का एक हिस्सा हैं। सृष्टि करने वाली हिस्ती की आभा का एक गुण है, और आभा का यह गुण, सत्ता और कृपा के साथ आत्मा, नफ़्स या बिंदु के साथ संबद्ध है।

लहरों का प्रणाली:

संपूर्ण ब्रह्मांड में प्रत्येक अस्तित्व लहरों के ताने-बाने पर आधारित है, और ये लहरें दिव्य प्रकाश (रोशनी) पर आधारित हैं। परमेश्वर की दृष्टि में पृथ्वी और आकाश परमेश्वर का दिव्य प्रकाश

www.ksars.org

हैं। सृष्टि की एक अवस्था दिव्य है, और सृष्टि की दूसरी अवस्था रोशनी, आत्मा, जीवन या बिंदु के रूप में प्रकट होती है। इन लहरों या सृष्टि के भीतर दिव्य गुण की पहचान करने के लिए परमेश्वर के प्यारे भक्तों ने मानव चेतना के अनुरूप नियम बनाए हैं। इस बिंदु को छह भागों में विभाजित किया गया है, ताकि एक प्रारंभिक साधक इसे आसानी से समझ सके। इन छह भागों को रूहानी विज्ञान में 'लताइफ सत्ताह' या 'छह लतीफे' के रूप में जाना जाता है, जो chakras के समान होते हैं।

पहला लतीफा जिसे 'अखफी' कहा गया है, वह प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक बिंदु के रूप में स्थित है, जिसे 'नुक्ता वाहिदा' कहा जाता है। यही वह बिंदु है, जिसे परमेश्वर का घर कहा गया है, क्योंकि इसमें परमेश्वर का वास है। यह वह बिंदु है जिस पर सीधे परमेश्वर की तेजस्विता की वर्षा होती है। यही वह बिंदु है, जिसके प्रवेश के बाद मनुष्य सृष्टि के समग्र तंत्र में प्रवेश कर जाता है, और सृष्टि पर उसका आधिपत्य स्थापित हो जाता है। यही वह बिंदु है, जिसमें प्रवेश करने के बाद परमेश्वर के इस वचन का वास्तविक अर्थ समझ में आता है: "हमने आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ भी है, सब तुम्हारे लिए समर्पित कर दिया है।" अर्थात आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारा अधीन है। तुम इसके शासक हो। इस वचन की व्याख्या इस प्रकार की जाती है कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए सूर्य, चाँद, सितारे, हवा, जल, गैस, वृक्ष, पशु, वनस्पति और खनिजों को समर्पित कर दिया है। इन सभी तत्वों और अस्तित्वों की सेवा में संलग्न होने का कार्य मनुष्य के कंधों पर है। यह समर्पण 'क़लंदर' चेतना के दृष्टिकोण से नहीं है। परमेश्वर ने एक नियम स्थापित किया है,

और इस नियम का पालन हो रहा है। हर वस्तु मानव की सेवा में कार्यरत है। समर्पण या किसी वस्तु पर अधिकार स्थापित करना यह अर्थ रखता है कि उस वस्तु पर पूर्ण नियंत्रण किया जा सके। हालाँकि वर्तमान स्थिति यह है कि मानव जाति सूर्य और चाँद के नियंत्रण में जीवन यापन कर रही है। यदि सूर्य और चाँद अपना नियंत्रण समाप्त कर सकते तो पृथ्वी का अस्तित्व कायम नहीं रह पाता। उदाहरण स्वरूप, हम सूर्य की रोशनी के बिना जीवित नहीं रह सकते, और भोजन में मिठास उत्पन्न करने के लिए हमें चाँद की सेवा की आवश्यकता होती है। लेकिन हमारे पास सूर्य और चाँद पर कोई अधिकार नहीं है।

रंगों की दुनिया:

जब हम पृथ्वी पर स्थित विभिन्न सृष्टियों पर विचार करते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि सृष्टि की प्रक्रिया को यदि हम बाहरी दृष्टिकोण से देखें तो यह दृश्यात्मक रूप से परिलक्षित होती है। उदाहरणस्वरूप, जब हम किसी वृक्ष की उत्पत्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमें पृथ्वी पर उपस्थित समस्त वृक्षों की उत्पत्ति का अनंत क्रम एक ही पद्धति से प्रकट होता है। चाहे वह वृक्ष छोटा हो, बड़ा हो, पादप की उपाधि में हो, बेल की संरचना में हो, अथवा औषधीय पौधों के रूप में हो, उत्पत्ति का क्रम यही है कि भूमि में बीज बोया जाता है, और भूमि उसे अपने गर्भ में

www.ksars.org

परिपुष्ट करती है, तत्पश्चात बीज का विकास होने के उपरांत वृक्ष का प्रकट होना। फिर भी यह अत्यंत अद्भुत है कि जहाँ उत्पत्ति की प्रक्रिया एक समान होती है, वहाँ प्रत्येक वृक्ष अपनी विशिष्टता और अप्रतिमता का परिचायक होता है, जो कभी भी अपूर्ण नहीं होती। उदाहरण स्वरूप, जब हम आम और बादाम के वृक्षों की तुलना करते हैं, तो वृक्ष के स्तर पर वे दोनों समान प्रतीत होते हैं। दोनों की उत्पत्ति का तरीका समान है, दोनों का आकार-संरचना भी समान है, लेकिन आम के वृक्ष का फल और बादाम के वृक्ष का फल पूर्णतः भिन्न रूपों में दृष्टिगत होता है। इसी प्रकार, जब हम पुष्पों की ओर दृष्टि मोड़ते हैं, तो प्रत्येक फूल का वृक्ष अपनी अलग पहचान रखता है, और इस पहचान में उसके पत्ते, शाखाएँ तथा फूलों की संरचना भी भिन्न होती है। पुष्पों की अनगिनत जातियाँ और प्रकार होते हैं, और प्रत्येक पुष्प में विशेष रूप से विशिष्ट गंध होती है। पुष्पों में विशेष ग्रंथियाँ होती हैं, जिनसे विभिन्न प्रकार का सुगंधित तेल उत्सर्जित होकर वातावरण में फैलता रहता है। इस प्रकार, पुष्पों के द्वारा उत्पन्न होने वाली सुगंध वातावरण को शुद्ध और मानसिक रूप से ताजगी प्रदान करती है। पुष्पों के रंगों में भी बेजोड़ विविधता होती है। कुछ पुष्प इतने लाल होते हैं कि उनकी रंगत पर दृष्टि ठहर जाती है। पुष्पों में कहीं सफेद रंग, कहीं हरा रंग, और कहीं हल्का गुलाबी रंग होता है। इस प्रकार, पृथ्वी पर अनगिनत रंगों की रचनाएँ फैली होती हैं। परमेश्वर की महिमा कितनी अद्भुत है! भूमि एक है, वायु एक है, जल एक है, उत्पत्ति की प्रक्रिया एक है, फिर भी प्रत्येक वस्तु अपनी विशिष्टता में अभिन्न है। और एक और तथ्य जो अत्यधिक ध्यान आकर्षित करता है, वह यह है कि प्रत्येक उत्पन्न होने वाली वस्तु में किसी न किसी रंग का प्रभुत्व अवश्य होता है, कोई भी वस्तु रंगहीन नहीं होती। यह रंग और रंगहीनता वास्तव में स्रष्टा और सृष्टि के बीच एक पर्दे के रूप में कार्य करती है। स्रष्टा को सृष्टि से जो पृथक और विशिष्ट करता है, वह रंग है। जब मनुष्य के भीतर रचनात्मक गुणों का उदय होता है, या परमेश्वर अपनी कृपा से उसके रचनात्मक गुणों को जागृत कर देता है, तो उसे यह ज्ञान प्राप्त होता है कि कोई भी रंगहीन विचार जब रंगीन हो जाता है, तो रचना की प्रक्रिया का आरंभ होता है। अल्लाह, स्रष्टा के रूप में, रंगहीन है। जब परमेश्वर ने ब्रह्मांड की सृष्टि का संकल्प लिया, तो जो कुछ भी परमेश्वर के मन में था, उसने उसे विचारित किया और कहा "हो जा", और वह वस्तु अस्तित्व में आ गई। इसका अर्थ यह है कि रंगहीनता से उतरकर परमेश्वर के विचार ने रंग ग्रहण किया। इसे समझने के लिए, आध्यात्मिकता ने रंगहीनता को एक विशेष नाम दिया है, जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर इस रंगहीनता में गति उत्पन्न हुई और रंगीन अस्तित्व का सृजन हुआ। यही अस्तित्व विभिन्न रूपों, रंगों, और विभिन्न क्षमताओं के साथ रूपाकार ग्रहण करता है।

ब्रह्मांड की सृष्टि में प्रमुख तत्व या मूल तत्व रंग है। रंगों का मिश्रण ही रचनात्मक सूत्र है। रंगों के अनुपात या उनके अभाव से विभिन्न सृष्टियाँ उत्पन्न होती हैं। मनुष्य, जो सृष्टि में परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है और जिसे परमेश्वर ने रचनात्मक रूप से अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है, उसकी असलियत भी रंगों से मिलकर बनी है। इस सृष्टि को समझने के लिए, आध्यात्मिकता ने छह गोलार्द्ध (दायरे) निर्धारित किए हैं, और प्रत्येक गोलार्द्ध विशिष्ट रंगों से बना है।

www.ksars.org

आध्यात्मिकता में जब इन गोलार्द्धों को प्रकाश से प्रकाशित किया जाता है, तो इसे 'लताइफ का रंगीन होना' कहा जाता है।

दिव्य रोशनी के छह दीपक

मनुष्य केवल मांस, त्वचा और हड्डियों के ढांचे का नाम नहीं है। मनुष्य के साथ एक और दिव्य रोशनी से निर्मित शरीर होता है, जिसे कलंदर बाबा औलियाؒ ने नस्मा (AURA) कहा है। नस्मा या आभामंडल छह बिंदुओं या चक्रों से निर्मित होता है। इन चक्रों का नाम अख़फ़ा, ख़फ़ी, सिर, आत्मा, क़ल्ब और नफ़्स है। इन छह चक्रों से तीन प्रकार की आत्माओं का निर्माण होता है। इन आत्माओं के नाम आत्मा-ए-हैवानी, आत्मा-ए-मानवी और आत्मा-ए-आज़म हैं।

छह बिंदुओं, छह चक्रों या दिव्य रोशनी के दीपकों को आध्यात्मिकता में चक्र या जनरेटर कहा जाता है। प्रत्येक दो चक्रों से एक आत्मा का निर्माण होता है।

चक्र-ए-नफ्सी और चक्र-ए-हृदय से आत्मा-ए-हैवानी (पशु आत्मा) बनती है।

चक्र-ए-गुप्त और चक्र-ए-आत्मिक से आत्मा-ए-मानवी (मानव आत्मा) का निर्माण होता है।

चक्र-ए-सूक्ष्म और चक्र-ए-अत्यंत सूक्ष्म से आत्मा-ए-आज़म (महान आत्मा) की संरचना होती है।

चक्र नफसी और चक्र क़लबी से बनने वाली पशु आत्मा पर हमेशा पीला रंग प्रबल रहता है। चक्र रुही और चक्र सिरी से मानव आत्मा पर हरा रंग का प्रभाव होता है। और, चक्र खुफ़ी और चक्र अख़फ़ी से मिलकर बनने वाली आत्मा-ए-आज़म पर नीला रंग प्रबल होता है। जैसे-जैसे पीले रंग का प्रभाव बढ़ता है, उसी अनुपात में व्यक्ति पर संसारिक इंद्रियों का प्रभाव भी अधिक होता जाता है। आत्मिक साधना इस कारण कराई जाती है ताकि व्यक्ति से पीले रंग का प्रभाव कम हो जाए। पीले रंग का प्रभाव कम होने से व्यक्ति का मानसिक ध्यान हरी आभा की ओर स्थानांतरित हो जाता है। ये हरी आभाएँ उसे मानसिक शांति प्रदान करती हैं और मानसिक एकाग्रता में सहायक होती हैं। जब मानसिक एकाग्रता हरी आभाओं पर स्थापित हो जाती है, तो मन नीली आभाओं में परिवर्तित हो जाता है।

दुनिया का त्याग:

परमेश्वर ने मानव की सृष्टि इस प्रकार से की है कि वह किसी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। वह रंगहीनता से निकलकर रंगों के पार एक अद्वितीय अवलोकन करने में सक्षम होता है, और यही परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता का ज्ञान है। क़लंदर शऊर (बोध) हमारी दिशा-निर्देश करता है कि एक व्यक्ति अपने आत्मीय इच्छाशक्ति और स्वतंत्रता से ऐसी परिस्थितियों और घटनाओं को ग्रहण कर सकता है, जो उसे भौतिक और संसारिक विचारों से पूर्णतः मुक्ति प्रदान कर सकें। संसारिक विचारों से मुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति भोजन, पेय, वस्त्र या पारिवारिक जीवन को त्याग दे, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि वह संसारिक विषयों में अपने मन

www.ksars.org

का अत्यधिक संलग्नता और मानसिक जुड़ाव समाप्त कर दे। व्यक्ति को इन विषयों को एक दिनचर्या के रूप में पूर्ण करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, जब किसी व्यक्ति को प्यास लगती है, तो वह पानी पीता है, लेकिन वह इस आवश्यकता को पूरे दिन अपने मन पर हावी नहीं होने देता। प्यास की भावना उत्पन्न हुई, पानी पिया, और फिर उसे भूल गया। यही स्थिति सोने और जागने की है।

जब कोई व्यक्ति किसी एक, दो, दस, बीस, या पचास विचारों में इस तरह डूब जाता है कि उसका मन अपनी सामान्य दिनचर्या से बाहर निकल जाता है, तो वह रंगहीनता से अलग हो कर रंगों की दुनिया में व्यस्त हो जाता है। जब व्यक्ति संसारिक आवश्यकताओं के सभी कार्यों और गतिविधियों को एक निर्धारित दिनचर्या के रूप में करता है, तो वह रंगों की दुनिया में रहते हुए भी रंगहीनता की ओर यात्रा करता है।

एक बार एक शिष्य ने हज़रत जुनैद बग़दादी (रह.) से पूछा कि तर्क दुनिया क्या है? हज़रत जुनैद (रह.) ने उत्तर दिया, "दुनिया में रहते हुए, व्यक्ति का दुनिया से अदृश्य होना ही तर्क दुनिया है।" शिष्य ने पूछा, "यह कैसे संभव है?" हज़रत जुनैद (रह.) मुस्कुराए और उत्तर दिया, "जब मैं तुम्हारी अवस्था का था, मैंने भी अपने गुरु से यही प्रश्न पूछा था, तो उन्होंने मुझसे कहा, 'आओ, हम बग़दाद के सबसे प्रसिद्ध बाजार का दर्शन करें।' अतः हम दोनों बग़दाद के सबसे व्यस्त बाजार की ओर बढ़े। जैसे ही हम बाजार के मुख्य द्वार से प्रवेश किए, मैंने पाया कि हम दोनों एक सुनसान स्थान में खड़े हैं। दूर-दूर तक रेत के टीले और बवंडरों के सिवा कुछ नहीं था। मैंने विस्मय से कहा, 'शेख! यहाँ तो कोई बाजार नहीं दिखाई दे रहा।' शेख ने स्नेहपूर्वक मेरे सिर पर हाथ रखते हुए कहा, 'जुनैद! यही तर्क दुनिया है कि व्यक्ति को संसारिक जगत दिखाई न दे।' यह न तो वस्त्रों का त्याग करना है, न जौ की रोटी खाना, न भव्य महलों से मुंह मोड़कर जंगलों में जाना। तर्क दुनिया यह भी है कि भले ही व्यक्ति स्वादिष्ट भोजन करे, उसे जौ की रोटी का स्वाद मिले; रेशमी वस्त्र पहनते हुए भी उसे खद्दर का ही आभास हो; भव्य बाजारों और सुंदर महलों के मध्य से होकर भी वह उन्हें वीरान मानते हुए आगे बढ़े। लेकिन जुनैद, यह सारी बातें तब तक समझ में नहीं आएँगी जब तक तुम तर्क दुनिया के अनुभव से स्वयं न गुजरो। अब चलो, घर चलते हैं।' फिर हम उस सुनसान स्थान से घर के लिए लौटते हुए, फिर से उसी जीवंत बाजार के मुख्य द्वार पर खड़े थे।

समय और स्थान:

क़लंदर शऊर यह स्पष्ट करता है कि मानसिकता को संसारिक बंधनों और भौतिक गतिविधियों से मुक्त करने के लिए विशेष अभ्यासों की आवश्यकता होती है। इन अभ्यासों का उद्देश्य मन को अस्थायी रूप से भौतिक संसार से पृथक करना है। जब इन अभ्यासों के माध्यम से मन एकाग्रता की स्थिति तक पहुँचता है और संसार की महत्ता समाप्त हो जाती है–यानी संसारिक कार्य मात्र यांत्रिक दिनचर्या बन जाते हैं–तब व्यक्ति की आध्यात्मिक क्षमताएँ सक्रिय होने लगती

www.ksars.org

हैं। जैसे ही ये आध्यात्मिक क्षमताएँ सक्रिय होती हैं और मन पूरी तरह इन पर केंद्रित होता है, चेतना पर छाया पीले रंग का आवरण टूटने लगता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, समय और स्थान की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। व्यक्ति जाग्रत अवस्था में रहते हुए भी ऐसे कार्य करने में सक्षम हो जाता है, जो सामान्य रूप से स्वप्न अवस्था में ही संभव होते हैं। ध्यान (मेडिटेशन) की अवस्था में, जब व्यक्ति अपनी आँखें बंद किए हुए होता है, तब उसे यह तीव्र अनुभव होता है कि वह शारीरिक रूप से पृथ्वी पर बैठा हुआ है, लेकिन इसके बावजूद वह स्वयं को चलता-फिरता, उड़ता हुआ, और दूरस्थ स्थानों पर पहुँचता हुआ देखता है। यह अनुभव उसे स्थान और दूरी की सीमाओं से परे, अस्तित्व की नई परिभाषाएँ समझने में सक्षम बनाता है।

स्वप्न और ध्यान (मुराक्बा)

स्वप्न और ध्यान में मौलिक अंतर यह है कि स्वप्न की अवस्था में मस्तिष्क (चेतना) शारीरिक अंगों की उपेक्षा करते हुए उन्हें निष्क्रिय कर देता है, जबकि ध्यान की अवस्था में चेतना शारीरिक अंगों के साथ सक्रिय संपर्क बनाए रखती है। ध्यान की प्रक्रिया में साधक की "आंतरिक दृष्टि" (जीवात्मा की दृष्टि) जागृत रहती है, और वह समय एवं स्थान (काल और देश) की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए भी शारीरिक अनुभवों से परिचित रहता है। ध्यान को स्वप्न की प्रारंभिक अवस्था के रूप में देखा जा सकता है। यह वह स्थिति है जिसमें साधक पर नींद का प्रभाव नहीं होता और वह पूर्णतया जागृत रहते हुए अपने मानसिक और आध्यात्मिक आयामों का अनुभव करता है।

मुराक्बा की श्रेणियाँ:

मावाराई (अलौकिक) दुनिया को देखने की प्रक्रिया प्रारंभिक स्तर पर चार तरीकों पर आधारित होती है।

जीवात्मा दो बिंदुओं से बनी होती है–एक बिंदु 'नफ़्स' और दूसरा 'क़ल्ब'। जब तक मानव चेतना नफ़्स के माध्यम से दुनिया का अवलोकन करती है, तब तक वह काल और स्थान (टाइम-स्पेस) की सीमाओं में बंधी रहती है और जाग्रत अवस्था में देखती है। चेतना की उन्नति के साथ जब यह नफ़्स से ऊपर उठकर क़ल्ब में प्रवेश करती है, तो काल और स्थान की सीमाएँ टूटने लगती हैं, और भौतिक दुनिया तथा परोक्ष (अलौकिक) दुनिया दोनों एक साथ उसके सामने प्रकट होती हैं। नफ़्स और क़ल्ब की इन दो सीढ़ियों को पार करने के बाद, जब व्यक्ति तीसरी सीढ़ी पर पहुँचता है–यानी 'रूह' के आयाम में प्रवेश करता है–तो यह देखना मुराक्बा के रूप में परिभाषित होता है।

मुराक्बा के कई प्रकार हैं। एक अवस्था यह होती है कि व्यक्ति आँखें बंद करके एकाग्रता की स्थिति में पहुँच जाता है। इस दौरान, उसे कुछ दृश्य प्रतीत होते हैं, परंतु वह इन दृश्यों को अर्थ और अभिप्राय नहीं दे पाता। दूसरी स्थिति यह होती है कि जब कोई दृश्य दिखाई देता है, तो उस

www.ksars.org

समय चेतना और इंद्रियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं। बाद में, जब वह इस अवस्था से बाहर निकलता है, तो उसे केवल यह आभास होता है कि उसने कुछ देखा है, लेकिन क्या देखा और कैसे देखा– यह उसकी स्मृति में दर्ज नहीं होता। इस स्थिति को "जाग्रत स्वप्न" कहा जाता है, जिसे तकनीकी रूप में "ग़नूद" कहते हैं। इसके बाद, दूसरी अवस्था आती है, जिसमें मुराक्बा के दौरान व्यक्ति अपनी चेतना और इंद्रियों को बनाए रखते हुए कुछ देखता है। इस प्रक्रिया में उसे एक तीव्र झटका अनुभव होता है, और उसे अपने अस्तित्व का बोध होता है। इस अवस्था में देखे गए दृश्य का कुछ भाग याद रहता है और कुछ भूल जाता है। इसे "वुरूद" कहते हैं। मुराक्बा की सर्वोच्च अवस्था वह है जिसमें व्यक्ति जाग्रत अवस्था में किसी दृश्य का अवलोकन करता है। इस अवस्था में न केवल देखे गए दृश्य का अर्थ और महत्व स्पष्ट रूप से समझ में आता है, बल्कि शरीर के अस्तित्व का भी एहसास रहता है और साथ ही काल और स्थान की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। इस स्थिति को "मुराक्बा" कहा जाता है।

जीवन एक सूचना है:

सामान्य अनुभव के आधार पर, जीवन जीने के जो तरीक़े प्रचलित हैं या जिन पद्धतियों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जीवन का निर्वाह करता है, वे मूलतः दो प्रकार के होते हैं। पहला तरीका यह है कि व्यक्ति चेतन अवस्था में अपनी इंद्रियों के माध्यम से जीवन की सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है, किंतु प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति हेतु उसे शारीरिक श्रम और प्रयास करना अनिवार्य होता है। जब तक शारीरिक अंग अपना कार्य संपादित नहीं करते, आवश्यकता की पूर्ति संभव नहीं होती। इन शारीरिक अंगों में हाथ, पैर, कान, नाक, नेत्र आदि सम्मिलित हैं।

इसी संदर्भ में यह भी अपरिहार्य सत्य है कि शारीरिक अंग मस्तिष्क के नियंत्रण में होते हैं। मस्तिष्क जब तक सक्रिय नहीं होता, तब तक शारीरिक अंग गतिशील नहीं होते। मस्तिष्क की सक्रियता विचार के अधीन होती है। जब तक मस्तिष्क में कोई विचार उत्पन्न नहीं होता, वह न तो शारीरिक अंगों को कोई आदेश देता है और न ही उन्हें प्रेरित करता है (Inspiration)।

विचार क्या है? ख़याल, वस्तुतः किसी आवश्यकता को पूरा करने हेतु एक सूचना है। उदाहरण के रूप में, मस्तिष्क हमें यह सूचना देता है कि अब हमें सो जाना चाहिए, क्योंकि अधिक जाग्रत रहना शारीरिक स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं है। फिर मस्तिष्क यह सूचना देता है कि अब जागना चाहिए, क्योंकि अधिक सोना शारीरिक कार्य क्षमता के लिए हानिकारक हो सकता है। मस्तिष्क यह भी निर्देश देता है कि भोजन ग्रहण करें, क्योंकि यदि भोजन नहीं किया जाता, तो शरीर को ऊर्जा देने वाले कैलोरी समाप्त हो सकते हैं। इसी प्रकार, जीवन के सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मस्तिष्क निरंतर आदेश जारी करता है, और शरीर इन आदेशों का पालन करता है। मस्तिष्क द्वारा दिए गए आदेश का संबंध सूचना से होता है, तथापि मस्तिष्क को इस बात का ज्ञान नहीं होता कि यह सूचना कहां से उत्पन्न हो रही है। मस्तिष्क केवल इस हद तक जागरूक होता है कि उसे कोई सूचना प्राप्त हो रही है। वह उस सूचना को शारीरिक आवश्यकताओं

www.ksars.org

के संदर्भ में अर्थ प्रदान करता है, और अर्थ प्रदान करने के पश्चात, वह शरीर के भीतर स्थित यांत्रिक संरचना को वह सूचना प्रेषित करता है। यह संरचना उस पर क्रियान्वयन हेतु बाध्य होती है। सत्य यह है कि जीवन की आवश्यकताओं की मूलभूत नींव सूचना पर आधारित है। सूचनाओं में अर्थ प्रदान करने की दो प्रमुख विधियाँ हैं। एक विधि वह है जो इंद्रियों के माध्यम से, जो समय और स्थान के सीमाओं के अधीन होती हैं, कार्य करती है। दूसरी विधि वह है, जिसमें इंद्रियाँ अर्थ प्रदान करने में समय और स्थान के बंधनों से मुक्त होती हैं। जैसे शारीरिक अंगों को नियंत्रित करने के लिए शरीर के भीतर एक मस्तिष्क होता है, जो सूचनाएँ ग्रहण कर उन्हें अर्थ प्रदान करता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक मस्तिष्क में, जिसमें रचनात्मक तत्वों का समावेश होता है, वे तत्व समय और स्थान की सीमा से मुक्त होते हैं।

उदाहरण : शारीरिक मस्तिष्क हमें यह सूचना प्रदान करता है कि शरीर को ऊर्जा प्राप्त करने के लिए रोटी का सेवन आवश्यक है। जब हम इस सूचना की पूर्ति करते हैं, तो हमें एक निरंतर अनुक्रम से गुजरना पड़ता है। जैसे, हम गेहूं बोते हैं, फिर उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए उसे बढ़ने देते हैं, बाद में उसे काटकर बालियों से अलग करते हैं, फिर उसे चक्की में पीसते हैं, फिर आटा गूंधकर रोटी पकाते हैं, और अंततः रोटी का सेवन करते हैं। यह शारीरिक मस्तिष्क द्वारा सूचना में अर्थ प्रदान करने की प्रक्रिया है। इसके विपरीत, जब आध्यात्मिक मस्तिष्क हमें किसी वस्तु के सेवन की सूचना प्रदान करता है, तो हमें इन सभी भौतिक सीमाओं से गुजरने की आवश्यकता नहीं होती। जैसे ही आध्यात्मिक मस्तिष्क में यह सूचना उत्पन्न होती है कि कुछ सेवन करना चाहिए, साथ ही इसमें यह अर्थ जोड़ा जाता है कि रोटी का सेवन किया जाना चाहिए, और तत्क्षण इसकी पूर्ति हो जाती है। गेहूं बोना, काटना, पीसना, और रोटी पकाना जैसी प्रक्रियाएँ समाप्त हो जाती हैं। आध्यात्मिक मस्तिष्क स्वप्न के दौरान कार्य करता है, और अभ्यास के पश्चात यह ध्यान में परिणत हो जाता है। जैसे कोई व्यक्ति आध्यात्मिक मस्तिष्क की सूचना को स्वीकार करते हुए संसाधनों के बिना रोटी का सेवन कर लेता है, वैसे ही कोई साधक, जो ध्यान के अभ्यास से परिचित है या जिसके भीतर आध्यात्मिक मस्तिष्क सक्रिय हो चुका है, वह समय और स्थान की संकुचन से मुक्त हो जाता है। जैसे जागृत अवस्था में रोटी खाने के लिए विभिन्न भौतिक चरणों से गुजरना पड़ता है, जैसे कराची से लंदन जाना हो, तो व्यक्ति को घर से बाहर निकलकर रिक्शा या टैक्सी से हवाई अड्डे पहुंचना होता है, फिर हवाई जहाज में बैठकर वायुमार्ग द्वारा लंदन पहुंचना होता है। किन्तु, यदि हम यह यात्रा ध्यान की अवस्था में करें तो न तो घर से बाहर निकलने की आवश्यकता होगी, न टैक्सी या रिक्शे की आवश्यकता होगी, और न ही हवाई जहाज में बैठने की आवश्यकता होगी। ध्यान की अवस्था में व्यक्ति विचार की गति से यात्रा करता है। जैसे, एक व्यक्ति कराची में बैठा हुआ यह निश्चय करता है कि उसे दिल्ली जाना है, और वह सेकंड के हजारवें हिस्से में वहाँ पहुँच जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण प्रत्येक व्यक्ति के स्वप्न में देखा जा सकता है। जैसे, एक व्यक्ति कराची में स्वप्न देखता है कि वह दिल्ली में है, और वहाँ ख्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार क़की (रह.) के मजार पर ध्यान कर रहा है।

www.ksars.org

वह दिल्ली की हवा से पूरी तरह अवगत और प्रभावित है। घर के किसी सदस्य ने उसे जगाया, और अब वह कराची में उपस्थित है।

मुराक़बा की चार श्रेणियाँ:

हमने मुराक़बा (ध्यान) की चार श्रेणियाँ वर्णित की हैं। ये चार श्रेणियाँ वस्तुतः प्रारंभिक अवस्थाएँ हैं, जिन्हें चार सीढ़ियाँ भी कहा जा सकता है। इन चार कक्षाओं का अध्ययन करने और इन सीढ़ियों से गुजरने के पश्चात, जब 'कलंदर' चेतना का यात्री पाँचवे स्तर में प्रवेश करता है, तो वह 'इ◌ामी' (प्रकाशित) अवस्था में प्रवेश करता है। यह अवस्था इस बात की आवश्यकता नहीं रखती कि कोई व्यक्ति विशेष रूप से किसी स्थान पर बैठकर, अपनी आँखें बंद करके, अपनी इच्छा या स्वायत्तता से अपने आत्मिक शरीर को एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानांतरित करे, या पृथ्वी से आकाश तक यात्रा करे। 'इलेहामी' अवस्था, किसी भी अवस्था में - बैठते, उठते, चलते, घूमते, संवाद करते या अन्यथा - उत्पन्न हो सकती है। यदि इस अवस्था में व्यक्ति का जागृत मस्तिष्क, जिसे हमने चेतना और अवचेतना का मिलाजुला रूप माना है, 'कलंदर' चेतना से जुड़ा हुआ है, तो वह व्यक्ति जागृत अवस्था में भी, मात्र अपने भौतिक कार्यों के माध्यम से, दूसरी दुनिया का न केवल निरीक्षण करता है, बल्कि उसकी गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेता है। जैसा वह भौतिक जीवन में कार्य करता है, वैसा ही वह दूसरी, सूक्ष्म या आध्यात्मिक दुनिया में भी करता है। यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें चेतना और अवचेतना दोनों एक साथ, समन्वित रूप से कार्य करने लगते हैं।

हालाँकि, 'इलेहामी' अवस्था की स्थिति स्थिर नहीं होती, बल्कि इसका अनुभव एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया होती है। कभी यह स्थिति सप्ताहों या महीनों तक अनुपस्थित रहती है, जबकि कभी यह चौबीस घंटे के भीतर अनेक बार उत्पन्न हो सकती है। कुल मिलाकर, यह सूचना और अर्थ की संरचना है, जो चेतना और अवचेतना दोनों में एक साथ कार्य करती है,

पैदा होने से पहले की जीवन अवस्था:

यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि इस भौतिक संसार (आलम-ए-नासूत) में आने से पहले आत्मा कहाँ स्थित थी। क्योंकि जब हम "आना" शब्द का प्रयोग करते हैं, तो इसका अर्थ यह निकलता है कि किसी स्थान पर कोई अस्तित्व या वस्तु पहले से विद्यमान थी। जब यह तथ्य स्थापित हो जाता है कि किसी वस्तु का अस्तित्व कहीं है, तब यह प्रश्न उठता है कि वह वस्तु किस रूप में और किस आकार में अस्तित्व में थी। रूप और आकार की चर्चा करते समय, उनका एक विशिष्ट स्थान पर स्थिति होना अनिवार्य हो जाता है। साथ ही स्थान के निर्धारण के साथ-साथ समय और स्थान की अवधारणा भी परिकल्पित होती है।

हम पैदा होने से पहले कहाँ थे? इस प्रश्न का सामान्य उत्तर यह है कि हम सभी, मनुष्य और प्राणी, पैदा होने से पूर्व आलम-ए-अरवाह (आध्यात्मिक संसार) में स्थित थे। फिर आलम-ए-अरवाह

www.ksars.org

से इस भौतिक संसार (आलम-ए-नासूत) में आकर स्थित हो गए। तथापि, जब हम आलम-ए-अरवाह की बात करते हैं, तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह आलम-ए-अरवाह क्या है? आलम-ए-अरवाह का ज्ञान अनंत और अज्ञेय है, लेकिन परमेश्वर द्वारा जिन व्यक्तियों को इस ज्ञान की प्राप्ति हुई है, वे इस अद्वितीय ज्ञान से परिचित होते हैं और इसे अपने शागिर्दों को प्रसारित करते हैं।

गुप्तित खजाना:

स्वर्गीय शास्त्रों (आधिकारिक किताबों) के दृष्टिकोण से, जब हम काइनात की तख्लीक (सृष्टि) पर विचार करते हैं, तो यह ज्ञात होता है कि हम मखलूक (सृष्टी) हैं और परमेश्वर हमारा खालिक (सृष्टिकर्ता) है। खालिक ने जब चाहा, "कुन" (हो) का आदेश देकर काइनात को अस्तित्व में ला दिया। यह सवाल उठता है कि खालिक ने ऐसा क्यों चाहा और खालिक की इच्छा पहले से मौजूद थी या नहीं? यदि खालिक का चाहना पहले से अस्तित्व में था, तो वह कहाँ था और खालिक ने काइनात को क्यों बनाया? इस प्रश्न का उत्तर खालिक स्वयं देता है, जहां वह कहता है, "मैं गुप्तित खजाना था, और मैंने मखलूक को अपनी मोहब्बत से इसलिए पैदा किया कि मैं पहचाना जा सकूं।"

मखलूक के अस्तित्व और उसकी उपस्थिति के बारे में खालिक का कहना है, "मैंने मखलूक को अपनी सिफात (गुणों) पर उत्पन्न किया।" यह ज्ञात सत्य है कि ज़ात (स्वरूप) और सिफात (गुण) को अलग नहीं किया जा सकता। सिफात हमेशा ज़ात के अंदर मौजूद रहती हैं और इन सिफात के माध्यम से ही ज़ात का परिचय प्राप्त होता है।

www.ksars.org

लोह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका)

सभी स्वर्गीय शास्त्रों और दिव्य ग्रंथों, चाहे वे इब्राहीमी शास्त्र हों, ज़बूर हो, इंजील हो, तोरात हो, गीता हो, या अंतिम ग्रंथ क़ुरआन पाक हो, प्रत्येक ग्रंथ और दिव्य लेख हमें यह ज्ञान प्रदान करता है कि जीवन के सभी आवश्यकताएँ, जीवन के समस्त कार्य और क्रियाएँ, तथा जीवन जीने के सभी तरीकों और कालों के उतार-चढ़ाव 'कुन' के साथ एक स्तर पर अंकित हो गए हैं। अर्थात्, काइनात (सृष्टि) और काइनात की जीवन-प्रक्रिया पूर्ण रूप से एक रिकार्ड के रूप में विद्यमान है। जिस स्थान पर, जिस स्तर पर, या जिस स्क्रीन पर काइनात अपने सम्पूर्ण रूप में रिकार्ड है या संरक्षित है, दिव्य ग्रंथ उसे 'लोह महफ़ूज़' (सुरक्षित पट्टिका) का नाम देते हैं।

पृथ्वी की सतह पर जो कुछ भी घटनाएँ घटित हो रही हैं, वे वास्तव में 'लोह महफ़ूज़' पर बनी हुई फ़िल्म का प्रदर्शन (display) हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे इस प्रकार कहा जा सकता है कि एक प्रोजेक्टर है, जिस पर एक फ़िल्म लगी हुई है। जब वह फ़िल्म चलती है, तो जहाँ-जहाँ स्क्रीन होती है, वहाँ-वहाँ वह फ़िल्म दिखाई देती रहती है। इस सिद्धांत से यह ज्ञात हुआ कि हमारी पृथ्वी के समान अनगिनत पृथ्वियाँ अस्तित्व में हैं। जैसे हमारी पृथ्वी पर मानव आबादी है, उसी प्रकार काइनात में स्थित अनगिनत ग्रहों पर भी मानव आबादी है और वहाँ भी जीवन जीने के सभी संसाधन मौजूद हैं।

परमेश्वर का दिव्य प्रकट(तजली):

प्रक्षिप्त चित्र पर एक चलचित्र अस्तित्वमान है। यह चलचित्र तब तक परदर्शित नहीं होता जब तक कि उसे कोई ऊर्जा प्रदान न की जाए। लोह महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) पर प्रदर्शित होने वाला चलचित्र वह दिव्य ऊर्जा है, जिसे परमेश्वर के दिव्य प्रकट ने सक्रिय किया है। इस दिव्य प्रकट का प्रतिबिंब प्रत्यक्ष रूप से चक्र (लतीफ़ा अख़फी) पर पड़ता है। इसका अभिप्राय यह है कि जब कोई साधक अपने भीतर स्थित चक्र (लतीफ़ा अख़फी) को पहचानता है या उसे तात्विक रूप से अनुभव करता है, तो वह वास्तव में परमेश्वर के दिव्य प्रकट का साक्षात्कार करता है। इस स्थिति में उसे यह ज्ञान प्राप्त होता है कि "कुन" के शब्द से पूर्व अस्तित्व की दुनिया की स्थिति क्या थी और "कुन" के उपरांत ब्रह्मांड की संरचना और वास्तविकता का स्वरूप क्या है।

www.ksars.org

ब्रह्मांड पर शासन

परमेश्वर का कथन है, "मैं तुम्हारी रग-ए-जान से भी निकट हूँ।" रग-ए-जान, जो एक ग़ैबी तत्व है, मानव अस्तित्व के भीतर समाहित है। यह संकेत करता है कि मानव के अंतर्निहित अस्तित्व में एक ऐसी शक्ति या आधार है, जिसे जीवन की मूलभूत स्थिति (BASE) माना जाता है। यदि यह तत्व अनुपस्थित हो, तो जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। जब साधक अपनी रग-ए-जान के वास्तविक स्वरूप को पहचानता है, तो उसके भीतर परमेश्वर के निकट होने की अनुभूति जागृत होती है और वह आत्मिक रूप से स्वयं को परमेश्वर के समीप अनुभव करता है। इस अनुभव के साथ वह परमेश्वर की वास्तविक पहचान प्राप्त करता है। परमेश्वर की पहचान के लिए स्व-आत्मा की पहचान अनिवार्य है। स्व-आत्मा की पहचान दरअसल ब्रह्मांड (kainat) के रहस्यों का ज्ञान और समझ प्राप्त करना है। ब्रह्मांड के रहस्यों में परिपूर्णता से समझ विकसित करने के बाद ही व्यक्ति ब्रह्मांड पर पूर्णतया शासन करने में सक्षम होता है। यह शासन केवल बाहरी दुनिया पर ही नहीं, बल्कि उस सूक्ष्म सत्ता पर भी होता है, जो प्रत्येक अस्तित्व की शुद्धता और उद्देश्य का निर्धारण करती है। जिस प्रकार एक व्यक्ति जब इस सत्ता को समझता है, तो वह परमेश्वर का खलीफा और प्रतिनिधि बन जाता है।

आध्यात्मिकता केवल एक क्रियात्मक प्रक्रिया या विशेष मंत्र जाप करने तक सीमित नहीं है। आध्यात्मिकता का वास्तविक उद्देश्य और तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने आंतरिक (INNER) सत्य को पहचान कर, उस सत्य के साथ अपने अस्तित्व को जोड़कर जीवन की पूर्णता को समझे।

प्रकाश की चार नदियाँ:

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, इन छह चक्रों की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि ये छह चक्र, या छह जनरेटर, अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होने वाली रोशनियों को विभिन्न रूपों में परिणत करते हैं, जैसे कि भ्रम, विचार, अवधारणाएँ, और फिर वे इन रूपों के साथ प्रत्यक्ष रूप में व्यक्त होते हैं। इस विचारधारा को और स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि इन छह बिंदुओं या छह मंडलियों से उत्पन्न होने वाली रोशनियाँ किस स्रोत से आती हैं। इन रोशनियों का उत्पादन कहां से होता है और ये बिंदु अथवा मंडल इन ऊर्जा स्रोतों को किस प्रकार प्राप्त करते हैं। इन पहलुओं को समझने के लिए हम इन छह मंडलों को दोगुना करके तीन प्रमुख मंडलों में विभाजित करते हैं। ये तीन मंडल या छह दिशाएँ चार दिव्य नदियों से ऊर्जा प्राप्त करती हैं।

1. **प्रकाश की पहली नदी का नाम तज़हीर (प्रकाशन)** है,
2. **प्रकाश की दूसरी नदी का नाम तशहीद(प्रकाशित)** है,

www.ksars.org

3. **प्रकाश की तीसरी नदी का नाम तिज़रीद (निष्कर्षण)** है,
4. **प्रकाश की चौथी नदी का नाम तसवीद (लेखन करना)** है,

यह तीन नदियाँ और एक नूरानी जलप्रपात उत्पत्ति से पूर्व की जीवन में, उत्पत्ति के बाद की जीवन में, मृत्यु के बाद के हश्र और प्रलय के संसार, स्वर्ग, नरक और अज़ल से अबद तक के कार्यक्रम को हर समय और हर क्षण में फीड करती रहती हैं। और नूरानी नदियों के ये प्रकाश और आभाएँ ही वहम, विचार, अनुभूति और रूपांतरित रूप में प्रकट होती रहती हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि यह ध्यान में रखा जाए कि दायरे या जनरेटर तीन हैं और नदियाँ चार हैं। ये नदियाँ किस रूप में अस्तित्व में हैं? इन नदियों के सृजनात्मक सिद्धांत किस प्रकार कार्यशील होते हैं? इन प्रकाशों या इन आभाओं से परमेश्वर की कौन-कौन सी विशिष्टताएँ संबंधित हैं और कौन से सूफी या आध्यात्मिक विज्ञान इन नदियों में निहित हैं? यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें परमेश्वर स्वयं अपने भक्त को शिक्षा प्रदान करता है।

www.ksars.org

नियाबाद(प्रतिनिधित्व) और ख़िलाफ़त (खिलाफत)

क़लंदर चेतना की शिक्षाओं के अनुसार, मनुष्य के सद्गुण और ब्रह्मांड में अन्य सृष्टियों की तुलना में उसकी विशिष्ट स्थिति, तथा परमेश्वर के दिए हुए अधिकारों से मनुष्य का विभूषित होना, स्वर्गदूतों का मनुष्य के लिए सजदा करना, और ब्रह्मांड का मनुष्य के लिए वश में होना, इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी उन विशेषताओं का ज्ञान प्रदान किया है, जो ब्रह्मांड में किसी अन्य सृष्टि को प्राप्त नहीं हैं। यह वह ज्ञान है, जिसे जानकर और समझकर मनुष्य ब्रह्मांड में अपनी विशेष स्थिति से परिचित हो जाता है। यह संपूर्ण ज्ञान उस व्यवस्था से संबंधित है, जिसके अंतर्गत ब्रह्मांड संचालित होती है। एक ज्ञानवान व्यक्ति इस तथ्य से परिचित होता है कि सूर्य क्या है, चंद्रमा क्या है, तारे क्या हैं, स्वर्गदूतों की सृष्टि क्या है, परमेश्वर ने जिन्नात को किस स्वरूप में उत्पन्न किया है और जिन्नात की प्रवृत्तियाँ और व्यवहार क्या हैं। एक सौरमंडल में कितने ग्रह कार्यरत हैं और एक आकाशगंगा में कितने सौरमंडल गतिशील हैं। वह व्यक्ति, जो परमेश्वर के ज्ञान की अमानत का संरक्षक है, यह समझ लेता है कि परमेश्वर की सृष्टि में परमेश्वर की विशेषताएँ और उसकी इच्छा किस प्रकार प्रभावी हैं। उसके ज्ञान में यह तथ्य भी शामिल होता है कि मृत्यु से पहले मानव की भौतिक जीवन किन सृजनात्मक सिद्धांतों के आधार पर संचालित होती है। वह यह भी जानता है कि जन्म से पहले मनुष्य कहाँ था। जन्म से पहले मानव जिस स्थिति में था, उससे पहले की अवस्था क्या है? यदि उस अवस्था को 'बरज़ख़' कहा जाता है, तो बरज़ख़ से पहले क्या था? यदि वह 'आलम-ए-अरवाह' है, तो आलम-ए-अरवाह से पहले क्या था? आलम-ए-अरवाह में ब्रह्मांड की संरचना क्या है, और इससे पहले ब्रह्मांड किस प्रकार अस्तित्व में आई। 'कुन' के पश्चात ब्रह्मांड और उसकी सृष्टियाँ प्रकृति के किस प्रकार के संवेदन और अनुभवों से युक्त होती हैं। और 'कुन' से पहले ब्रह्मांडीय सृष्टियों की स्थिति क्या थी। यह भी उसके ज्ञान में होता है कि जन्म से लेकर क़यामत तक का जीवन किन नियमों पर आधारित है। वह यह भी जानता है कि एक अस्तित्व के ऊपर प्रकाश के कितने स्तर मौजूद हैं। परमेश्वर के इस ज्ञान के माध्यम से उसके अवलोकन में यह तथ्य भी सम्मिलित हो जाता है कि प्रकाशमय अस्तित्वों के ऊपर कितने आवरण हैं। प्रकाश और आभा में क्या अंतर है। आभा और उसके रहस्य क्या हैं। यह समस्त ज्ञान तभी प्राप्त होता है, जब वह उस ज्ञान से परिचित हो जाता है, जिसे परमेश्वर ने अपनी अमानत घोषित किया है। यह ऐसी अमानत है, जो केवल मनुष्य को प्रदान की गई है। यही वह अमानत है, जिसके कारण मनुष्य परमेश्वर का प्रतिनिधि और उत्तराधिकारी है। नियाबाद और ख़िलाफ़त का अर्थ यह है कि जिसके प्रतिनिधि होते हैं, उसके अधिकार उन्हें प्रदान किए जाते हैं। परमेश्वर सृष्टिकर्ता हैं। उनके सृजनात्मक अधिकार अनन्य हैं। जब मनुष्य को पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधि बनाया गया, तो उसे भी

www.ksars.org

परमेश्वर के सृजनात्मक अधिकार प्रदान किए गए। इन्हीं सृजनात्मक अधिकारों को लागू करने वाले व्यक्तियों के समूह को 'अहले-तक़वीन' कहा जाता है।

आदम और स्वर्गदूत

परमेश्वर ने आदम को 'अस्मा' (नामों) का ज्ञान सिखाया, अर्थात अपनी विशेषताओं की वास्तविकता से परिचित कराया। फिर स्वर्गदूतों से पूछा, "यदि तुम जानते हो तो बताओ।" स्वर्गदूतों ने स्वीकार किया कि हम केवल वही जानते हैं जो आपने हमें सिखाया है। यह स्पष्ट करता है कि ज्ञान के संदर्भ में आदम की स्थिति स्वर्गदूतों से अधिक है। अल्लाह, स्वर्गदूतों और आदम के बीच इस ज्ञानमय संवाद में तीन हस्तियाँ शामिल हैं: एक आदम, दूसरी स्वर्गदूत, और तीसरी स्वयं परमेश्वर की सत्ता। आदम परमेश्वर को देख रहा है, उसके सामने स्वर्गदूत भी हैं। वह इस तथ्य से भी परिचित है कि परमेश्वर ने जो ज्ञान उसे प्रदान किया है, वह स्वर्गदूतों के पास नहीं है। न केवल स्वर्गदूत इस ज्ञान से वंचित हैं, बल्कि वे इस बात को स्वीकार भी करते हैं कि इस ज्ञान में आदम उनसे श्रेष्ठ हैं। यह संवाद जिस अवस्था में हो रहा है, उसे 'अदृश्य' की दुनिया के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि स्वर्गदूत अदृश्य दुनिया की सृष्टि हैं और परमेश्वर स्वयं अदृश्य हैं। इससे सिद्ध होता है कि आदम अदृश्य में दृष्टि रखते हैं। उनके भीतर अदृश्य को देखने, समझने, सुनने और महसूस करने की क्षमता मौजूद है।

चूँकि परमेश्वर अनंत हैं, इसलिए उनकी विशेषताओं का ज्ञान भी अनंत है। इसका अर्थ यह है कि आदम को जो ज्ञान प्रदान किया गया है, वह भी अनंत है। यह ऐसा महासागर है जिसका कोई किनारा नहीं है। जब ज्ञान के इस पहलू में आदम की स्थिति स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ ठहराई गई, तो ब्रह्मांड की सभी प्रजातियों और सृष्टियों में आदम को श्रेष्ठ घोषित कर दिया गया। इसका कारण यह है कि आदम के पास परमेश्वर की अनंत विशेषताओं का ज्ञान है।

परमेश्वर की विशेषताएँ क्या हैं? अल्लाह, अपनी सत्ता के रूप में, सृष्टिकर्ता हैं, और उनकी सभी विशेषताएँ सृष्टि के सृजनात्मक तत्व और सूत्र हैं। यही वह 'अमानत' (धरोहर) है जिसे परमेश्वर ने अपनी विशेष कृपा से आदम को प्रदान किया।

आदम और परमेश्वर के संवाद में विचार करने पर यह तथ्य उजागर होता है कि मानवजाति के अलावा भी सृष्टियाँ हैं, जिनमें से एक को स्वर्गदूत कहा जाता है और दूसरी को जिन्न। हम न तो जिन्नों को देख सकते हैं और न ही स्वर्गदूतों को। जिन्नों और स्वर्गदूतों की दुनिया से हम इसीलिए अपरिचित हैं क्योंकि हम उस अमानत से अनभिज्ञ हैं, जिसे परमेश्वर ने अपनी विशेष कृपा से हमें प्रदान किया है।

दूरबीन दृष्टि:

आदम और हव्वा की औलाद में प्रत्येक व्यक्ति दरअसल आदम और हव्वा का प्रतिबिंब, रूप और छाया है। जैसे आदम में "इल्मुल अस्मा" (अल्मुल अस्मा) प्राप्त करने की क्षमता थी, उसी प्रकार

www.ksars.org

हर व्यक्ति में यह क्षमता परमेश्वर द्वारा दी गई है। हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि वास्तविक मानव आत्मा (रूह) है, और मानव जीवन के सभी आवश्यकताएँ आत्मा से संबंधित होती हैं। जब तक यह शारीरिक रूप (मांस और खाल) रूह द्वारा जीवित और गतिशील रहता है, तब तक मांस-खाल के शरीर में गति बनी रहती है; और जब आत्मा इस शरीर से अपना संबंध समाप्त कर देती है, तो मांस-खाल के शरीर में कोई भी गतिविधि शेष नहीं रहती। यही आत्मा वही है जिसे परमेश्वर ने अपनी प्रतिनिधित्व (नियाबत) दी थी। आदम ने जब जन्नत में परमेश्वर के आदेश के खिलाफ कार्य किया, उस समय आत्मा पर एक पर्दा आ गया और वह अमानत, जिसके आधार पर वह काइनात में सर्वोत्तम था, वह पर्दा चला गया। यही पर्दा शारीरिक मांस और खाल के रूप में प्रकट हुआ।

जब तक किसी भी मानव की रुचियाँ इस भौतिक शरीर से जुड़ी रहती हैं, तब तक उसकी आत्मिक शक्तियाँ छिपी रहती हैं। और जब किसी मानव को यह ज्ञान होता है कि मांस और खाल का यह शरीर असल में नाफ़रमानी के कारण एक पर्दे का रूप है, तब उसका मानसिक रुझान सत्य की खोज की ओर मुड़ जाता है। यह खोज उसे उस अमानत से अवगत कराती है, जिसके कारण उसे क़ाइनात में इंसान को उच्चतम स्थान प्राप्त है।

किसी भी विज्ञान या ज्ञान को अधिग्रहण करने के लिए यह अनिवार्य है कि हम उस शिक्षक को अपना मार्गदर्शक स्वीकार करें और जैसे ही वह मार्गदर्शन प्रदान करें, मानसिक रूप से उसे ग्रहण करें। जब एक शिष्य शिक्षक के साथ जुड़ता है, तो शिक्षक शिष्य से कहता है, "अलिफ़" पढ़ो। शिष्य को प्रारंभ में यह नहीं पता होता कि "अलिफ़" का वास्तविक अर्थ क्या है, लेकिन वह शिक्षक की नकल करते हुए "अलिफ़" कहता है और धीरे-धीरे शिक्षक की उपदेश विधि का अनुसरण करते हुए वह ज्ञान प्राप्त करता है। यदि शिष्य पहले ही यह प्रश्न पूछे कि "अलिफ़" का उद्देश्य क्या है, तो वह इस ज्ञान की प्राप्ति में सफल नहीं हो सकता। अतः जब शिक्षक शिष्य से कहता है, "अलिफ़" पढ़ो, तो शिष्य की मानसिक स्थिति केवल इतनी ही होती है कि वह उत्तर में "अलिफ़" कहे। चाहे हम कितने ही शिक्षा-प्राप्त और विद्वान क्यों न हो जाएं, ईमानदारी और आध्यात्मिकता के संदर्भ में हमारी स्थिति उस शिष्य की ही होती है जो पहले बार शिक्षा संस्थान में प्रवेश करता है।

www.ksars.org

परमेश्वर की जेल :

जब एक मनुष्य उपराज्यपाल और खिलाफत की ओर बढ़ता है, तो उसके ऊपर स्तंभों की पकड़ टूट जाती है। सृष्टिकर्ता, जो हर वस्तु से निरपेक्ष और सभी स्थितियों से पार हैं, जब किसी व्यक्तित्व में अपनी विशेषताओं का परिवर्तित रूप देखते हैं, तो उस व्यक्ति पर वही अवस्था और भावनाएँ प्रकट होती हैं जो परमेश्वर की स्वाभाविक विशेषताओं के अनुरूप होती हैं। आदम को परमेश्वर ने अपनी कृपा और आशीर्वाद से संपन्न करके स्वर्ग में निवासित किया और कहा, "हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में निवास करो। जहाँ से तुम्हारा मन चाहे, वहाँ से खाओ, लेकिन इस वृक्ष के पास न जाना, वरना तुम उन व्यक्तियों में से हो जाओगे जो अपनी अवज्ञा करते हैं।" आदम ने धैर्य नहीं रखा और वह परमेश्वर की अवज्ञा के पथ पर अग्रसर हो गए। जैसे ही आदम ने अवज्ञा की, प्रकाश की स्थिति अंधकार में बदल गई, सुख की स्थिति दुःख में बदल गई, और स्वतंत्रता की स्थिति बंधन में परिवर्तित हो गई। आदम स्वर्ग छोड़ने के लिए विवश हो गए, अत्यधिक निराशा और दुःख के साथ।

हालाँकि आदम ने परमेश्वर की अवज्ञा की और स्वर्ग जैसी अनुपम कृपा का खंडन किया, फिर भी परमेश्वर ने अपनी करुणा और कृपा के साथ आदम पर पुनः अनुग्रह किया। वह खजाने जो सृष्टि पर प्रभुत्व से संबंधित थे, आदम से विस्थापित नहीं हुए और परमेश्वर ने कहा: "तुम्हारा वतन स्वर्ग है। तुम जब चाहो, अपने वतन में लौट सकते हो, परंतु तुम्हें यह करना होगा कि तुम अवज्ञा के दायरे से बाहर आओ। हम अपने पवित्र दूतों को भेजते रहेंगे, जो तुम्हें यह याद दिलाते रहेंगे कि तुम अनंत खजाने के स्वामी हो। ये पवित्र जन तुम्हारे लिए मार्गदर्शन और नियम बनाएंगे ताकि तुम आसानी से अपने वतन में लौट सको। यह जीवन, जो तुम इस समय जी रहे हो, तुम्हारे लिए एक कारागृह है। यदि तुमने इस जीवन में स्वर्ग के साथ अपने बीच के परदे को नहीं हटाया, तो तुम्हें स्वर्ग पुनः प्राप्त नहीं होगी।"

प्रकृति के नियमानुसार, परमेश्वर का वचन सत्य हुआ और अत्याचारी, अवज्ञाकारी और बग़ावत करने वाले मनुष्यों की हिदायत के लिए लाखों पैग़म्बर भेजे गए। इसके अतिरिक्त, अपनी परंपरा को जारी रखने के लिए परमेश्वर ने अपने पवित्र वारिसों (आलिया अल्लाह) का सिलसिला स्थापित किया, जो क़ियामत तक निरंतर जारी रहेगा।

प्रत्येक व्यक्ति, जो थोड़ा सा भी चेतन है, निरंतर यह अनुभव करता है कि जीवन का प्रत्येक क्षण मृत्यु की ओर अग्रसर है। एक क्षण समाप्त होता है, तो दूसरा क्षण उत्पन्न होता है। दिन समाप्त होता है, तो रात्रि का आगमन होता है। बाल्यावस्था समाप्त होती है, तो किशोरावस्था का उदय होता है। किशोरावस्था समाप्त होती है, तो यौवन का प्रारंभ होता है, और यौवन की समाप्ति पर वृद्धावस्था का जन्म होता है। जब वृद्धावस्था मृत्यु का सामना करती है, तो शरीर के प्रत्येक अंग का कण कण मिट्टी में बदल जाता है।

www.ksars.org

हड्डियाँ, जो मानव शरीर के संरचनात्मक आधार के रूप में कार्य करती हैं, अंततः राख में परिवर्तित हो जाती हैं। मस्तिष्क, जिस पर मानव की बौद्धिक एवं नैतिक महानता का निर्भरता होती है, और जिस मस्तिष्क के कारण व्यक्ति आत्मतोष से अभिभूत हो कर दूसरों पर अत्याचार करता है और स्वयँ को परमेश्वर समान मानने की भूल करता है, वह भी अंततः मृत्तिका के अंशों में विलीन हो जाता है। और इन मस्तिष्क के अंशों से निर्मित अन्य मानव, उस मस्तिष्क को अपने पाँवों तले कुचल डालते हैं।

www.ksars.org

रूहानी बगदादी शासन

किसी भी प्रकार के ज्ञान के अधिग्रहण के लिए उसकी मूलभूत संरचना का बोध अत्यावश्यक है। जैसे कोई भी व्यक्ति तब तक पढ़ने और लिखने की दक्षता अर्जित नहीं कर सकता जब तक वह अक्षरज्ञान (अक्षरों का प्राथमिक ज्ञान) प्राप्त नहीं कर लेता। बाह्य (ज़ाहिरी) ज्ञान के समान, आंतरिक (बातिनी) ज्ञान की प्राप्ति हेतु भी एक प्रारंभिक ढाँचा आवश्यक है। अंतर केवल इतना है कि बाह्य ज्ञान में अक्षरज्ञान का अध्ययन करना आवश्यक होता है, जबकि आंतरिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए सोचने के तरीके (विचारधारा) को परिवर्तित करना अपरिहार्य है। अब तक, बाह्य ज्ञान की भाँति, आध्यात्मिकता का कोई स्पष्ट बगदादी क़ायदा प्रकाशित नहीं हुआ है। आध्यात्मिक ज्ञान एक ऐसे तंत्र पर आधारित है जो नियमों और सिद्धांतों से संचालित होता है, किंतु इसे न तो पारंपरिक पठन-पाठन से प्राप्त किया जा सकता है और न ही इसे लिखने या स्मरण अभ्यास से अर्जित किया जा सकता है। इसे समझने हेतु एक सरल उदाहरण है: माँ की भाषा का बच्चे में स्थानांतरण। कोई माँ अपनी मातृभाषा सिखाने के लिए अपने बच्चे को औपचारिक शिक्षा नहीं देती, फिर भी बच्चा वही भाषा बोलता है जो उसकी माँ बोलती है। बच्चे के विचार और व्यवहार उसके माता-पिता की विचारधारा (विचार शैली) से स्वतः प्रभावित होते हैं। उदाहरणस्वरूप, बकरी का बच्चा घास का उपभोग करता है, मांस नहीं। शेर का बच्चा मांस खाता है, घास नहीं। कबूतर का बच्चा न घास खाता है, न मांस; वह केवल दाने चुगता है। वहीं, मनुष्य का बच्चा मांस, मिट्टी, जड़ें, लकड़ी, और पत्थर तक खा सकता है, क्योंकि उसके माता-पिता की भोजन शैली में ये सब समाविष्ट होते हैं। यह स्पष्ट होता है कि भोजन, आहार-विहार, और जीवन के अन्य अनिवार्य कार्य जैसे शिकार करना या अन्य जीवित रहने की प्रक्रियाएँ बच्चे में उसके माता-पिता से स्वाभाविक रूप से स्थानांतरित होती हैं। इन कार्यों को सीखने के लिए किसी औपचारिक पुस्तक या नियमावली की आवश्यकता नहीं होती। एक और बिंदु पर ध्यान देना आवश्यक है कि प्रत्येक जीवधारी अपनी विशिष्ट भाषा में संवाद करता है और अपनी भावनाओं एवं अनुभवों को अपनी जाति के अन्य सदस्यों तक संप्रेषित करता है। उदाहरण के लिए, जब मुर्गी को अपने बच्चों पर किसी शिकारी पक्षी के आक्रमण का भय होता है, तो वह एक विशिष्ट ध्वनि निकालती है, जिससे उसके बच्चे उसके पंखों में छिप जाते हैं। इस प्रकार, प्रत्येक प्रजाति की भाषा उनकी प्रकृति में अंतर्निहित होती है। इसके अतिरिक्त, संवाद का एक अन्य माध्यम संकेतों की भाषा है। यह संवाद शैली सार्वभौमिक है और मानव सहित सभी प्राणियों द्वारा उपयोग में लाई जाती है। उदाहरणस्वरूप, जब कोई पिता अपने बच्चे को कोई बात मनवाना चाहता है, तो वह अपनी आँखों से एक विशेष प्रकार का संकेत देता है, और बच्चा उसे तुरंत समझ लेता है। इसी प्रकार, माँ बच्चे के रुदन से यह समझने में सक्षम होती है कि बच्चा भूखा है या किसी असुविधा में है।

www.ksars.org

आप अपने मित्रों के साथ एक कक्ष में बैठे हुए हैं। वहाँ ऐसा वातावरण या संवाद हो रहा है जिसे आप नैतिक रूप से अनुचित मानते हैं कि किसी बच्चे को सुनना चाहिए या उस वातावरण में उपस्थित होना चाहिए। जैसे ही बच्चा उस कक्ष में प्रवेश करता है, आप उसकी ओर एक दृष्टि डालते हैं। आपके मस्तिष्क में यह विचार सक्रिय होता है कि उसका वहाँ होना उपयुक्त नहीं है। आप बिना किसी शब्द का उच्चारण किए और बिना किसी स्पष्ट संकेत दिए, केवल अपनी गर्दन के हल्के कंपन से अपनी मंशा व्यक्त करते हैं। इसके बावजूद, बच्चा आपके मानसिक संकेत को ग्रहण कर लेता है और बिना किसी प्रतिवाद के कक्ष छोड़कर चला जाता है तथा पुनः प्रवेश नहीं करता।

कभी-कभी ऐसा होता है कि जब कोई प्रिय व्यक्ति किसी समस्या से जूझ रहा होता है, तो वह मानसिक और भावनात्मक रूप से हम पर भी प्रभाव डालता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब हमारी चिंता और मानसिक अशांति उस व्यक्ति की वास्तविक कठिनाइयों से जुड़े विचारों के रूप में हमारे भीतर समाहित हो जाती हैं। इसी प्रकार, कभी कभी यह विचार अचानक उत्पन्न होते हैं कि किसी मित्र से मुलाकात नहीं हुई है, और फिर आप बाहर निकलते हैं तो वही मित्र सामने आ जाता है। इसी तरह के अनुभव यह दर्शाते हैं कि मानसिक गतिविधियाँ केवल बाहरी घटनाओं से प्रेरित नहीं होतीं, बल्कि पूर्व में उत्पन्न विचार या संवेग भी घटनाओं के घटित होने से पहले हमारे मानस में अपने प्रभाव डाल सकते हैं। अतः यह मानसिक गतिशीलता एक विशिष्ट तरह की स्थिति उत्पन्न करती है, जिसमें मानसिक दबाव और तनाव के कारण व्यक्ति शारीरिक रूप से थका हुआ महसूस करता है। इसके विपरीत, कभी बिना किसी बाहरी कारण के, बिना स्पष्ट प्रमाण के, मानसिक प्रसन्नता का अनुभव भी उत्पन्न हो जाता है। यह एक प्रकार का आंतरिक स्फूर्ति और उल्लास होता है, जिसे व्यक्ति अपने मानसिक क्षेत्र में महसूस करता है, और इसे नकारा या नजरअंदाज करना संभव नहीं होता। ऐसे अनुभव इस तथ्य को उजागर करते हैं कि मानसिक और भावनात्मक प्रक्रियाएँ केवल बाहरी घटनाओं पर निर्भर नहीं होतीं, बल्कि आंतरिक स्थितियों, मानसिक विचारों और धाराओं द्वारा भी प्रभावित होती हैं।

आत्मा और कंप्यूटर

इन विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य के भीतर एक ऐसा जटिल तंत्र (कंप्यूटर) स्थापित है, जो उसकी जीवन यात्रा के विभिन्न चरणों के लिए मार्गदर्शन करता है। यह तंत्र कभी ऐसी सूचना प्रदान करता है जो व्यक्ति को दुःख की अनुभूति कराती है, तो कभी ऐसी सूचना जो उसे प्रसन्नचित कर देती है। यह सूचना कभी पानी पीने का संकेत देती है, तो कभी भोजन ग्रहण करने का। कभी यह तंत्र व्यक्ति को सूचित करता है कि अब तंत्रिकाएँ (नसें) और कार्यक्षमता नहीं रखतीं, अतः विश्राम करो। फिर एक अन्य सूचना प्राप्त होती है कि अब यदि और अधिक समय तक शारीरिक निष्क्रियता बनी रही, तो तंत्रिकाएँ दुर्बल हो जाएंगी। यह संकेत मिलते ही व्यक्ति जाग जाता है। जब तक मस्तिष्क के भीतर स्थापित यह तंत्र (कंप्यूटर) निर्देश नहीं देता, तब तक न केवल मनुष्य, बल्कि कोई भी सजीव क्रियाशील नहीं हो सकता। यह नियम सभी पर लागू है, चाहे वह मनुष्य हो, भेड़-बकरी, कोई अन्य जीव-जंतु, वनस्पति, अथवा निर्जीव वस्तु।

www.ksars.org

सभी के भीतर यह सूचना-प्रदान करने वाला यंत्र मौजूद है, जो आवश्यकता के अनुसार निर्देश प्रदान करता है।

यह तंत्र वस्तुतः मनुष्य की आत्मा है। जितने भी सजीव और निर्जीव अस्तित्व हैं, उन सबमें यह सूचना-प्रदान करने वाला तंत्र एक समान रूप से सक्रिय है। इस तंत्र का ज्ञान किसी भी अन्य सृष्टि को नहीं दिया गया; यह विशेष ज्ञान केवल मनुष्य को प्रदान किया गया है। यही वह ज्ञान है जिसका उल्लेख आदम और स्वर्गदूतों की कथा में मिलता है। परमेश्वर ने कहा, "मैं पृथ्वी में अपना प्रतिनिधि नियुक्त करने वाला हूँ।" स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया, "यह सृष्टि में अशांति फैलाएगा, जबकि हम आपकी स्तुति और पवित्रता के लिए पर्याप्त हैं।" परमेश्वर ने कहा, "मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।"

स्वर्गदूतों को इस सत्य का बोध कराने के लिए आदम को *इल्म-उल-अस्मा* सिखाया गया और आदम से कहा गया, "इस ज्ञान को प्रकट करो।" तत्पश्चात स्वर्गदूतों से कहा गया, "यदि तुम सत्यवादी हो तो इस ज्ञान के बारे में बताओ।" स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया, "हम केवल वही जानते हैं जो आपने हमें सिखाया है।"

आदम की संतान होने के नाते, मनुष्य उन्हीं अनुभवों और ज्ञान का अवलोकन करती है, जिनसे स्वयं आदम गुजरे। यदि कोई व्यक्ति उन अवस्थाओं का अनुभव नहीं कर सकता, जिनसे आदम ने अनुभव किया–जैसे स्वयं को स्वर्गदूतों के लिए वंदनीय देखना, परमेश्वर और स्वर्गदूतों के बीच संवाद का साक्षी होना, परमेश्वर द्वारा अपनी विशेषताओं का ज्ञान प्रदान किया जाना, और स्वर्गदूतों का यह स्वीकार करना कि वे केवल परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान तक ही सीमित हैं–तो वह आदम की संतान कहलाने का अधिकारी नहीं है। आदम की वह विशेषता, जिसे परमेश्वर ने "मेरा प्रतिनिधि और खलीफा" कहा, उसी ज्ञान और अनुभव पर आधारित है।

इस संवाद का संक्षेप यह है कि यदि मनुष्य, जिसे आदम की संतान कहा जाता है, अनादि काल में प्रदत्त प्रतिनिधित्व (नीयाबत) की चेतना से परिचित नहीं है और इन घटनाओं का साक्षात्कार सांसारिक जीवन में नहीं करता, तो उसे आदम की सौभाग्यशाली संतति नहीं माना जा सकता। केवल शारीरिक संरचना और बाह्य रूप के आधार पर उसे आदम की संतान कहना उचित नहीं है; उसकी स्थिति अवज्ञाकारी संतान से अधिक नहीं होगी।

कारण यह है कि यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के अस्मा (दैवी नामों) के ज्ञान से वंचित है, तो वह परमेश्वर का प्रतिनिधि (नीयाबत) नहीं हो सकता। आदम की संतति को अन्य समस्त सृष्टियों पर विशिष्टता और श्रेष्ठता इसलिए प्राप्त है, क्योंकि उसे अस्माए इलाहिया (परमेश्वर के दैवी नामों) का ज्ञान प्राप्त है।

www.ksars.org

विज्ञान और चमत्कारिक घटनाएँ

चमत्कारिक घटनाओं (ख़रक-ए-आदात) के संदर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जो अनुसंधान किए जा रहे हैं, वे इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मनुष्य अपनी स्वानुभव आधारित प्रयासों और विधिपूर्वक अभ्यासों द्वारा अपनी अंतर्निहित अलौकिक क्षमताओं को जाग्रत कर सकता है। टेलीपैथी और हिप्नोटिज्म के क्षेत्र में, विशेष रूप से यूरोप और रूस में, जो प्रगति हुई है, उसके आधार पर केवल उपासना और साधना को ही अलौकिक ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र माध्यम मान लेना तर्कहीन प्रतीत होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि ऐसी जातियाँ, जिनका धर्म में कोई विश्वास नहीं है, अलौकिक विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय उन्नति कर चुकी हैं।

आध्यात्मिकता (रूहानियत) के क्षेत्र में एक प्रचलित अवधारणा है– **तसर्फ (प्रभाव डालना)**। इसका आशय यह है कि कोई आध्यात्मिक गुरु, मार्गदर्शक (मुरशिद), या शैख अपने शिष्य अथवा आध्यात्मिक अनुयायी पर अपनी मानसिक एकाग्रता के माध्यम से कुछ आध्यात्मिक परिवर्तन उत्पन्न कर देता है। वर्तमान युग में यह प्रक्रिया वैज्ञानिकों द्वारा भी संपन्न की जा रही है। वे टेलीपैथी के माध्यम से अपनी इच्छा के अनुरूप लोगों को मानसिक रूप से प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें वही कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, जो वैज्ञानिक के मस्तिष्क में विद्यमान होता है। यह तथ्य भी हमारे समक्ष है कि वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में भ्रमण करने का दावा प्रस्तुत किया है।

आध्यात्मिकता में एक अन्य प्रचलित पद है– **आंतरिक अवलोकन (अंदर देखना)**। इसका तात्पर्य है, अपनी आंतरिक दृष्टि का उपयोग करते हुए इस भौतिक ग्रह से परे की अवस्थाओं और जगत का

मानव में ऐसी विशिष्ट क्षमताएँ उत्पन्न होती हैं, जो उसे उन ज्ञात और अज्ञात क्षेत्रों में मार्गदर्शन करने की क्षमता प्रदान करती हैं, जिनका संदर्भ पारंपरिक पुस्तकों में उपलब्ध नहीं होता। विज्ञान ने इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है और अनेक ऐसे अलौकिक ज्ञानों को उजागर किया है, जिनके प्रति प्रारंभ में मानव चेतना ने संकोच किया था। परंतु, जैसे-जैसे ये क्षमताएँ और ज्ञान वास्तविक रूप में सामने आए, मानव को उन पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ा। इस संदर्भ में, आध्यात्मिकता (रूहानियत) से संबंधित सिद्धांतों–जैसे **तवज्जो (आंतरिक एकाग्रता)**, **तसर्फ (प्रभाव डालना)**, **आंतरिक दृष्टि का जागरण** और **समय और स्थान से मुक्ति**–ने एक जटिल समस्या प्रस्तुत की है। पहले यह माना जाता था कि मावराई दृष्टि का सक्रिय होना केवल ध्यान, चिंतन और साधना की प्रक्रिया से ही संभव है। वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टिकोण में यह प्रश्न उभरता है कि जब वे लोग, जो धर्म में विश्वास नहीं रखते, **तसर्फ** कर सकते हैं, उनकी आंतरिक दृष्टि विकसित हो सकती है, और वे नए ज्ञान की नींव रख सकते हैं, यहाँ तक कि वे अंतरिक्ष में भी कदम रख सकते हैं, तो फिर **आध्यात्मिकता (रूहानियत)** का क्या स्वरूप है?

www.ksars.org

आध्यात्मिकता के साथ धर्म का उल्लेख सामान्यत: किया जाता है, क्योंकि धर्म की मूल धारा भी इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है, जो मनुष्य को धार्मिक कार्यों को पूरा करने के बाद इस योग्य बनाते हैं कि वह अपने या अन्य जीवों के जीवन में परिवर्तन ला सके। इस प्रक्रिया में उसकी आंतरिक दृष्टि के समक्ष पृथ्वी के बाहर या भीतर के घटनाएँ प्रकट हो सकती हैं। परंतु, जब हम धर्म के अनुयायियों का विश्लेषण करते हैं, तो लाखों में से शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है, जिसमें यह आध्यात्मिक क्षमता पुनः सक्रिय हुई हो और जिसकी आंतरिक दृष्टि कार्यरत हो।

यह एक विचारणीय पहलू है कि धार्मिक समुदाय के लोग उन ज्ञानों से अनजान हैं, जिन्हें उन व्यक्तियों ने प्रमाणित किया है, जो धर्म के प्रति आस्थाहीन हैं। इन परिस्थितियों में, हर गंभीर चिंतक यह प्रश्न उठाने पर विवश है कि, **फिर धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है?**

कानून(नियम):

ब्रह्मांड में अनगिनत जातियाँ विद्यमान हैं। प्रत्येक जाति का हर व्यक्ति, जातीय और व्यक्तिगत दृष्टिकोण से, विचारों की तरंगों के माध्यम से निरंतर और निरंतर संपर्क बनाए रखता है। यही निरंतर संपर्क, ब्रह्मांड के व्यक्तियों के बीच परस्पर परिचय का मूल कारण है। ये विचारों की तरंगें वस्तुतः व्यक्तिगत और सामूहिक सूचनाएँ हैं, जो प्रत्येक क्षण, प्रत्येक पल ब्रह्मांड के व्यक्तियों को जीवन से जोड़ने का कार्य करती हैं। सच्चाई यह है कि हमारा समग्र जीवन विचारों के माध्यम से संचालित होता है, और विचारों का प्रभाव विश्वास और संदेह के आधार पर होता है। यही वह बिंदु है जिस पर धार्मिकता की नींव रखी जाती है।

मनुष्य जीवन के विभिन्न चरणों को समय के छोटे-छोटे खंडों में व्यतीत करता है, और जीवन जीने के लिए वह समय के इन खंडों को मानसिक रूप से जोड़ता है, और इन खंडों से कार्य करता है। हम या तो समय के इस खंड से आगे बढ़कर दूसरे खंड में प्रवेश कर जाते हैं, या फिर समय के इस खंड से पीछे लौट आते हैं। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि कोई व्यक्ति वर्तमान में सोचता है कि वह भोजन करेगा, लेकिन उसके पेट में भारीपन महसूस होता है, अतः वह यह इरादा छोड़ देता है। वह इस छोड़ने पर कब तक कायम रहेगा, इस बारे में उसे कोई जानकारी नहीं होती। इसी तरह से उसके जीवन के विभिन्न घटक, जो इस प्रकार के विचारों से जुड़े होते हैं, उसे या तो असफल बनाते हैं या सफल। व्यक्ति प्रारंभ में एक विचार बनाता है, फिर उसे छोड़ देता है। यह त्याग चाहे तो कुछ मिनटों में हो, कुछ घंटों में, कुछ महीनों में, या वर्षों में। यहाँ यह समझाना प्रमुख है कि "त्याग" मनुष्य के जीवन का एक अभिन्न और निर्णायक तत्व है।

कई ऐसी स्थितियाँ हैं जिन्हें हम कठिनाई, समस्या, असंतोष, बीमारी, मानसिक अशांति, या आलस्य जैसे शब्दों से व्यक्त करते हैं। वहीं दूसरी ओर एक और अवधारणा है जिसे हम शांति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह शांति वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति सभी प्रकार की सहजताएँ

www.ksars.org

और सुख-शांति की तलाश करता है। हम यह दावा नहीं कर रहे हैं कि ये सभी बातें वास्तविक हैं; बल्कि अधिकांश मामलों में यह केवल सांस्कृतिक और मानसिक अनुमानों पर आधारित होती हैं। यही वे तत्व हैं जो मनुष्य को सहजता की ओर आकर्षित करते हैं, और यह प्रवृत्तियाँ ही उसे आराम और सुख की ओर प्रवृत्त करती हैं। वास्तव में, मनुष्य के मस्तिष्क की संरचना इस प्रकार की होती है कि वह सहजताओं की ओर स्वाभाविक रूप से प्रवृत्त होता है और कठिनाइयों से बचने का प्रयास करता है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है, जो जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है। हर निर्णय और गतिविधि के पीछे इन दो ध्रुवीय प्रवृत्तियों का प्रभाव रहता है: एक सरलता की ओर और दूसरी जटिलता से बचने की ओर। यह स्थिति इस प्रकार समझी जा सकती है: जब कोई व्यक्ति किसी विशेष कार्य को करने का निर्णय लेता है, तब वह उस कार्य को सुसंगठित और सही दिशा में करने का प्रयास करता है। लेकिन जैसे-जैसे वह कुछ कदम आगे बढ़ता है, उसकी दिशा में बदलाव आता है, और इस बदलाव के साथ उसके विचारों की दिशा भी बदल जाती है। परिणामस्वरूप, उसकी मनोवृत्तियाँ और कार्यों का रूप भी बदल जाता है, और उसकी पूर्व-निर्धारित मंजिल या लक्ष्य अब उस स्थान पर नहीं रहता। इसके स्थान पर, अब वह व्यक्ति केवल अपनी स्थिति को समझने की कोशिश करता है और कदम-दर-कदम एक नई दिशा में बढ़ता है। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि इस प्रकार की मानसिकता का आधार विश्वास और संदेह के बीच की जटिल स्थिति है। समाज में अधिकांश व्यक्ति उन मानसिक स्थितियों में बंधे होते हैं जो भ्रम और संदेह पर आधारित होती हैं। यही वह मानसिक संदेह है जो व्यक्ति के मस्तिष्क कोशिकाओं में निरंतर सक्रिय रहता है, और जैसे-जैसे संदेह बढ़ता है, वैसे-वैसे मस्तिष्क की कोशिकाओं में विघटन होता है। यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि यह मस्तिष्क कोशिकाएँ ही हैं, जो तंत्रिका तंत्र की गतिविधियों को प्रभावित करती हैं, और तंत्रिका तंत्र की गति ही जीवन के सभी मानसिक और शारीरिक पहलुओं को संचालित करती है। वास्तव में, किसी वस्तु या विचार पर विश्वास करना उतना ही जटिल कार्य है जितना किसी मानसिक भ्रांति को नकारना। उदाहरण स्वरूप, मनुष्य अपनी वास्तविक कमजोरियों को छुपाता है और अपनी काल्पनिक और आदर्श गुणों को प्रस्तुत करता है, जो कि वस्तुतः उसके व्यक्तित्व का हिस्सा नहीं होते। यह मानसिक स्थिति न केवल व्यक्ति की वास्तविकता से दूर करती है, बल्कि उसे भ्रमित भी करती है, और उसका आत्मविश्लेषण करने की क्षमता कम कर देती है।

समाज और विश्वास

मनुष्य जिस सामाजिक संरचना में अपना विकास करता है, वही संरचना उसके विश्वास का आधार बन जाती है। उस विश्वास की गहन समीक्षा करने में उसका मस्तिष्क अक्सर असमर्थ रहता है। इस प्रकार, वह विश्वास सत्य के रूप में स्थापित हो जाता है, जबकि वस्तुतः वह मात्र एक मानसिक भ्रांति होती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने के बजाय, प्रायः अपने विपरीत रूप को प्रस्तुत करता है।

www.ksars.org

ऐसी जीवनशैली अनेक जटिलताओं को जन्म देती है। यह जटिलताएँ प्रायः ऐसी होती हैं जिनका समाधान उसके पास उपलब्ध नहीं होता। हर स्थिति में उसे यह भय सताता है कि उसका श्रम निष्फल होगा या उसकी गतिविधियाँ निरर्थक सिद्ध होंगी। कभी-कभी यह मानसिक स्थिति इतनी तीव्र हो जाती है कि मनुष्य यह मानने लगता है कि उसका संपूर्ण जीवन व्यर्थ हो रहा है या गंभीर संकट में है। यह मानसिक अस्थिरता मस्तिष्कीय कोशिकाओं में हो रहे तीव्र क्षरण और असंतुलन का प्रत्यक्ष परिणाम है।

जब मनुष्य का वास्तविक जीवन उस जीवन से भिन्न होता है जिसे वह व्यतीत कर रहा है या जिसे वह प्रस्तुत कर रहा है, तब वह अपने कार्यों से वांछित परिणाम प्राप्त करने की चेष्टा करता है। किंतु मस्तिष्कीय कोशिकाओं के निरंतर क्षरण और परिवर्तनों के कारण उसकी गतिविधियाँ भटकाव का शिकार हो जाती हैं। परिणामस्वरूप, या तो वे निष्फल सिद्ध होती हैं, या हानिकारक प्रभाव उत्पन्न करती हैं, अथवा ऐसा संशय उत्पन्न करती हैं जो उसके निर्णय और आगे बढ़ने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता है।

मनुष्य के मस्तिष्क की संरचना उसकी बौद्धिक और मानसिक दशाओं के अधीन होती है। इस संरचना से तात्पर्य मस्तिष्कीय कोशिकाओं के विघटन की तीव्रता, संतुलन, या न्यूनता से है। मस्तिष्कीय कोशिकाओं का न्यूनतम विघटन एक आकस्मिक घटना हो सकती है, परंतु इसका परिणाम संदेह और अनिश्चितता से मुक्त मानसिक स्थिति के रूप में प्रकट होता है।

मस्तिष्क में संदेह और अनिश्चितता का स्तर जितना कम होगा, उतना ही मनुष्य की जीवन यात्रा सफलता और उद्देश्यपूर्ण उपलब्धियों से परिपूर्ण होगी। इसके विपरीत, संदेह और अनिश्चितता की तीव्रता में वृद्धि जीवन के मार्ग में असफलताओं, मानसिक बाधाओं, और नकारात्मक अनुभवों को जन्म देती है। इस प्रकार, मस्तिष्कीय संरचना में संतुलन व्यक्ति की मानसिक स्थिरता और जीवन की गुणवत्ता के लिए केंद्रीय भूमिका निभाता है।

मस्तिष्क कोशिकाओं का टूटना-फूटना:

मनुष्य का दुर्भाग्य यह है कि उसने परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान को स्वेच्छाचारी और त्रुटिपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित कर दिया, और उसके प्रति अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण अपना लिया। परमेश्वर ने सभी ज्ञान की मूलभूत संरचना को प्रकाश पर आधारित किया है। यह अपेक्षित था कि मनुष्य प्रकाश की विभिन्न श्रेणियों और उनके कार्य-व्यवहार का गहन अध्ययन करता, परंतु उसने इस दिशा में कोई सक्रिय रुचि नहीं दिखाई। परिणामस्वरूप, यह महत्वपूर्ण विषय उसकी चेतना के आवरण में छिपा रहा। मनुष्य ने इस आवरण को हटाने अथवा उसकी आंतरिकता को समझने का प्रयास नहीं किया। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ क्योंकि या तो वह प्रकाश के अस्तित्व से अपरिचित था, अथवा उसने इसके महत्व को पहचानने में असमर्थता प्रकट की। वह उन नियमों और सिद्धांतों को समझने में विफल रहा, जो प्रकाश की अंतःक्रियाओं और उनके संयोजन को संचालित करते हैं। यदि मनुष्य ने इस दिशा में सार्थक प्रयास किया होता, तो उसके मस्तिष्कीय

www.ksars.org

कोशिकाओं के विघटन की प्रक्रिया को न्यूनतम किया जा सकता था। इस प्रकार, वह अधिक स्थायित्व के साथ विश्वास की ओर अग्रसर हो सकता था और शंका, जो उसके मानसिक संतुलन को विघटित करती है, उसे इतना प्रभावित नहीं करती। उसकी क्रियाशीलता में आने वाली व्यवधान भी सीमित हो सकती थी। परंतु यह प्रक्रिया अस्तित्व में नहीं आई। मनुष्य ने न तो प्रकाश की श्रेणियों को समझने का प्रयास किया, न ही उनके स्वभाव और प्रकृति का अध्ययन किया। उसे यह भी ज्ञात नहीं है कि प्रकाश मात्र भौतिक तत्व नहीं, बल्कि उसमें स्वभाव, प्रवृत्तियां और गहन आत्मिक शक्तियां भी विद्यमान होती हैं। मनुष्य इस गूढ़ सत्य से अनभिज्ञ है कि प्रकाश न केवल उसके अस्तित्व का मूल है, बल्कि उसकी सुरक्षा और स्थायित्व का भी आधार है। उसने अपने अस्तित्व को मात्र मिट्टी के उस भौतिक स्वरूप तक सीमित कर लिया है, जिसमें अपनी कोई स्वायत्त जीवनशक्ति नहीं है। यह वही स्वरूप है जिसे परमेश्वर ने सड़ी हुई मिट्टी से गढ़ा और उसमें अपनी दिव्य आत्मा (रूह) का संचार किया। यही रूह मनुष्य की वास्तविकता है, जबकि उसका भौतिक स्वरूप मात्र एक अस्थायी माध्यम है। इस दार्शनिक दृष्टिकोण से स्पष्ट होता है कि मनुष्य का आत्मिक और मानसिक संतुलन केवल तब सुदृढ़ हो सकता है, जब वह अपने अस्तित्व की गहराई को प्रकाश के माध्यम से समझे और उसकी संरचना को ईश्वरीय ज्ञान के साथ संतुलित करे।

प्रकाश की प्रक्रिया के प्रति अज्ञानता, परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए दैवीय मार्गदर्शन से विचलन का कारण बनती है। इस विचलन के परिणामस्वरूप भ्रम और संदेह का विस्तार होता है, जिससे आस्था (ईमान) और विश्वास (यकीन) की संरचना धीरे-धीरे विघटित हो जाती है।

आध्यात्मिक चिंतन में विश्वास को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

"विश्वास एक ऐसा सिद्धांत है, जो संदेह की उपस्थिति से पूर्णतः मुक्त होता है।"

विश्वास (यकीन) की कमजोरी मुख्य रूप से संदेह (शक) से उत्पन्न होती है। जब तक विचारों में अनिश्चितता बनी रहती है, विश्वास में कभी भी दृढ़ता नहीं आ सकती। पदार्थों का अस्तित्व केवल विश्वास के अंतर्गत होता है, क्योंकि कोई विचार विश्वास की रोशनी प्राप्त कर के ही रूप लेता है।

धर्म:

धर्म व्यक्ति को विश्वास (यकीन) के एक विशेष ढांचे में समाहित करता है, जहाँ संदेह, विचारात्मक जटिलताएँ और भ्रम समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति अपनी आंतरिक दृष्टि से ग़ैब (अदृश्य) जगत के तत्वों और वहां स्थित परिवर्तनीय रूपों के दर्शन करता है। इस अदृश्य अनुभव से व्यक्ति का अपने परमेश्वर के साथ एक गहरे और स्थायी संबंध का निर्माण होता है, जिससे वह स्वयं को परमेश्वर की विशुद्ध और अचल गुणों से पूर्ण रूप से अभिव्यक्त और आच्छादित अनुभव करता है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यदि किसी प्राणी के भीतर सक्रिय और जागृत दृष्टिकोण का अभाव

www.ksars.org

होता है, तो वह विश्वास के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता। जब कोई व्यक्ति विश्वास के इस क्षेत्र में प्रवेश करता है, तब उसके मानसिक और आध्यात्मिक संरचना से नकारात्मक तत्व जैसे विनाश और शैतानियत का परित्याग होता है। वहीं यदि किसी व्यक्ति के लिए ग़ैब का उद्घाटन नहीं होता, तो वह निरंतर विघटन और शैतानियत के प्रभाव में स्थित रहता है। यही कारण है कि आज की अत्यधिक विकसित और उन्नत तकनीकी दुनिया में भी, जहां अपार समृद्धि और भौतिक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं, हर व्यक्ति मानसिक अशांति, चिंताओं और अस्तित्व की असुरक्षा का शिकार हो जाता है। यह विषमता इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि विज्ञान केवल भौतिकता (मेटर) में विश्वास करता है, जबकि भौतिकता अस्थायी और काल्पनिक है। इसके परिणामस्वरूप विज्ञान द्वारा की गई सभी प्रगति, अन्वेषण, और भौतिक सुख-सुविधाएँ क्षणिक और नश्वर होती हैं। जिस अस्तित्व की नींव ही अस्थिरता और नाश पर आधारित हो, वह कभी भी स्थायी और वास्तविक सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता। धर्म और नास्तिकता में एक मौलिक अंतर यह है कि नास्तिकता व्यक्ति के मन में शंका, अस्थिरता और अस्तित्व के प्रति अनिश्चितता की भावना उत्पन्न करती है, जबकि धर्म सम्पूर्ण मानसिक, भावनात्मक और कार्यात्मक संरचनाओं को एक निराकार, अनन्त और स्थायी सत्ता से जोड़ देता है, जो शाश्वत सत्य और अडिग विश्वास के प्रति मार्गदर्शन करता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

वैज्ञानिकों द्वारा प्रचारित भौतिक दृष्टिकोण के अनुसार, किसी भी वस्तु को तब तक स्वीकार नहीं किया जा सकता जब तक उसका प्रत्यक्ष प्रमाण (DEMONSTRATION) प्रस्तुत न किया जाए। हालांकि, ये वैज्ञानिक, भले ही अत्यधिक ज्ञान रखते हों, इस तथ्य को नज़रअंदाज कर देते हैं कि वे भौतिक सीमाओं में बंद होकर अपने ही सिद्धांतों का विरोध कर रहे हैं। उनका यह विश्वास है कि जो ग़ैब है और जो आंखों से दिखाई नहीं देता, वह किसी वास्तविकता का निर्धारण नहीं करता, जबकि उनका सम्पूर्ण विज्ञान अदृश्य और परोक्ष ऊर्जा पर आधारित होता है, जिसे वे अपने शोध के परिणामस्वरूप सामने लाते हैं।

कुलंदर बाबा ओलिया ँ, जो चेतना के बुनियादी सिद्धांतकार हैं और जिनकी शिक्षाएँ शुद्धता और दिव्यता से संबंधित हैं, यह उद्घोषित करते हैं कि:

रूहानी (आध्यात्मिक) मूल्य से संबंधित जिन विद्याओं का अध्ययन किया गया है, उन सभी में क़ायनात के भौतिक रूपों के बजाय सबसे प्रमुख बिंदु ग़ैब और रहस्यात्मक तत्व हैं। इन तत्वों की समझ प्राप्त करने के लिए पहले ग़ैब और रहस्य को ध्यान में लाना आवश्यक है। अगर ग़ैब और रहस्य को समझने में सफलता मिल जाती है, तो भौतिक रूपों के निर्माण और उनके रचनात्मक सिद्धांतों को समझना अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। यह चिंतन इस प्रकार से प्रकट होता है, जैसे जीवन के प्रारंभिक अनुभवों से लेकर बौद्धिक परिपक्वता तक की प्रक्रिया में एक निश्चित प्रकार का संबंध स्थापित होता है। इन ग़ैब से संबंधित अवधारणाओं को लेकर परमेश्वर

www.ksars.org

तआला ने क़ुरआन मजीद में विविध नामों से व्यक्त किया है, जिन्हें अंबिया (P.U.H.B.) ने समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। क़ुरआन से पूर्व की धार्मिक ग्रंथों में इन विषयों का उल्लेख हुआ है, लेकिन वे आंशिक और संक्षिप्त रूप में थे। क़ुरआन मजीद में इन पहलुओं की विस्तृत व्याख्या की गई है। जब हम क़ुरआन के गहन अध्ययन में संलग्न होते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि ग़ैब की स्थिति भौतिक रूपों से अधिक महत्वपूर्ण है। ग़ैब को समझना इस दृष्टिकोण से आवश्यक है, क्योंकि धर्म और आस्था का मूल आधार ग़ैब ही है। धर्म में भौतिक रूपों का वर्णन किया गया है, लेकिन यह द्वितीयक स्थान पर है। कभी भी इसको प्राथमिकता नहीं दी गई। भले ही भौतिक जगत इसे प्राथमिकता दे, लेकिन धीरे-धीरे यह भी ग़ैब के महत्व को स्वीकारने लगा है। वर्तमान युग के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में एक दिलचस्प परिघटना देखने को मिलती है, जहाँ वे अपने स्थापित भौतिक नियमों के माध्यम से ग़ैब (अदृश्य) को भी स्वीकार करने पर विवश होते हैं। वे किसी वस्तु को केवल **सिद्धांत** (Hypothesis) के रूप में स्वीकार करते हैं और इस सिद्धांत से उत्पन्न संभावनाओं को प्रमाणित करने के प्रयास में लगे रहते हैं। जब यह संभावनाएँ प्रमाणित हो जाती हैं, तो उन्हें सच्चाई और वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। बीसवीं सदी में इलेक्ट्रॉन के व्यवहार को इस संदर्भ में देखा जा सकता है, जहाँ यह पाया गया कि इलेक्ट्रॉन एक ही समय में **कण** (Particle) और **तरंग** (Wave) दोनों रूपों में कार्य करता है। यह स्थिति इस बात की ओर इशारा करती है कि भौतिकी के पारंपरिक नियमों से परे एक नई वास्तविकता है, जिसे ग़ैब (अदृश्य) की श्रेणी में रखा जा सकता है। विज्ञान के क्षेत्र में इस प्रकार के **अदृश्य** या **अज्ञेय** तत्वों की स्वीकृति इस धारणा को सुदृढ़ करती है कि ग़ैब की सत्ता को किसी भी प्रकार से नकारा नहीं जा सकता। वैज्ञानिकों के अनुसार, इलेक्ट्रॉन का अस्तित्व न तो आज तक देखा गया है और न ही भविष्य में इसे देखने की संभावना है, फिर भी वे इसे एक वास्तविक और ठोस तथ्य मानते हैं। यह स्पष्ट करता है कि ग़ैब (अदृश्य) पर आधारित सिद्दांत एक नई वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, जिसे स्वीकार कर लिया जाता है, भले ही वह सीधे रूप से प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर न हो। इस परिप्रेक्ष्य में, यह भी देखा जाता है कि वैज्ञानिक पहले स्वीकार किए गए तथ्यों को समय-समय पर अस्वीकार करते हैं और नए सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं। यह क्रम **विकासात्मक परिवर्तन** (Evolutionary change) की ओर इशारा करता है, जहां ग़ैब (अदृश्य) के सिद्धांत और भौतिक तथ्यों के बीच संबंधों को लगातार परिभाषित किया जाता है। यह प्रक्रिया दिखाती है कि भौतिक रूप से असंगत प्रतीत होने वाली वस्तुएं भी एक गहरे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझी जा सकती हैं। अर्थात, विज्ञान और ग़ैब दोनों के बीच अंतर एक शास्त्रीय भेदभाव नहीं है, बल्कि ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। ग़ैब, जो विज्ञान के लिए एक अपरिचित और अस्वीकृत विषय था, अब विज्ञान के मूल सिद्धांतों के साथ जुड़कर एक नवीन दृष्टिकोण का निर्माण कर रहा है। इस प्रकार, ग़ैब का सिद्धांत और भौतिक वास्तविकता दोनों एक साथ काम करते हुए मानवता के समक्ष न केवल नई खोजों का मार्ग प्रशस्त करते हैं, बल्कि यह भी सिद्ध करते हैं कि भौतिक दुनिया केवल उस **पारंपरिक दृष्टिकोण** (Traditional perspective) तक सीमित नहीं है, जिसे हम वर्तमान में समझते हैं। यह दृष्टिकोण, वैज्ञानिकों

www.ksars.org

के अनुसार, ग़ैब (अदृश्य) के अस्तित्व को साक्ष्य के रूप में मान्यता देने का एक नया मार्ग खोलता है। लेकिन साथ ही, यह समाज में भौतिकवादी दृष्टिकोण से जुड़े **विज्ञानवादी** (Scientistic) सिद्धांतों को चुनौती भी प्रदान करता है। एक ग़ैबवादी दृष्टिकोण की स्वीकार्यता, केवल एक **सिद्धांत** के आधार पर नहीं, बल्कि इसके गहरे और व्यापक प्रभाव को समझने की दिशा में एक कदम और बढ़ती है। इस विचारधारा के तहत, ग़ैब और विज्ञान के सिद्धांतों को एक साथ परखा जाता है, जो **आध्यात्मिक** और **भौतिक** के बीच संतुलन स्थापित करता है। निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि विज्ञान और ग़ैब (अदृश्य) दोनों के सिद्धांत एक दूसरे से **स्वतंत्र** नहीं हैं, बल्कि इनका आपसी **संबंध** (Interrelation) अत्यंत गहरा और महत्वपूर्ण है। यह साक्षात्कार और मान्यता की प्रक्रिया न केवल भौतिक विज्ञान की सीमाओं को बढ़ाती है, बल्कि यह आध्यात्मिक और अस्तित्व संबंधी सवालों के प्रति एक नए दृष्टिकोण को जन्म देती है।

www.ksars.org

रचनात्मक सूत्र

जब हम परमेश्वर की रचनाओं पर गहरे चिंतन करते हैं, तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि यद्यपि भौतिक तत्व (माटर) एकसमान होते हैं, रचनात्मक सिद्धांत, विधियाँ और तंत्र सर्वत्र समान होते हुए भी, प्रत्येक सृजन में एक विशेषत: और अनूठे गुण का उद्घाटन होता है। प्रत्येक सृजन में प्राकृतिक आवश्यकताएँ समान होती हैं, जैसे कि बुद्धि और चेतना, तथापि यह चेतना विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। कुछ सृजन में यह चेतना अधिक विकसित होती है, कुछ में कम, और कुछ में अत्यंत न्यूनतम। प्रत्येक रचना की विशिष्टता के दो प्रमुख आयाम होते हैं। एक आयाम **सामूहिक** या जातिगत (species) होता है, और दूसरा आयाम **व्यक्तिगत** (individual) रूप में व्यक्त होता है। जातिगत आयाम में, समस्त सदस्य एक जैसी शारीरिक विशेषताओं और रूप-रंग में समान होते हैं, जबकि व्यक्तिगत आयाम में प्रत्येक सदस्य अपनी विशेषताओं, रूप-रंग, और संरचना में भिन्न होता है। उदाहरणार्थ, तोते की जाति के सभी सदस्य शारीरिक रूप से समान होते हैं, वहीं कबूतर की जाति के सदस्य भी समान रूप से दिखते हैं। इसी प्रकार, विभिन्न सृजनात्मक जातियाँ अपनी जातिगत विशेषताओं में समान होती हैं, लेकिन प्रत्येक जाति के भीतर व्यक्ति का रूप, आकार, और रंग में व्यक्तिगत भिन्नताएँ पाई जाती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी विशिष्टता में एक अद्वितीय अस्तित्व के रूप में उपस्थित होता है। यह तथ्य इस प्रकार है कि इसे समझने के लिए अधिक गहन विचार या विश्लेषण की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि मानव अनुभव और परिपेक्ष्य इस पर निरंतर आधारित होते हैं।

प्रजातीय विविधता पर विचार हमें यह मार्गदर्शन करता है कि प्रजाति का भिन्न होना इस बात का संकेत है कि प्रजाति के रूपरेखाओं में निर्धारित मात्राएँ कार्य कर रही हैं। बकरी की प्रजाति में परमेश्वर ने जो निर्धारित मात्राएँ रखी हैं, जब वे सक्रिय होती हैं तो उसके परिणामस्वरूप बकरी की सृष्टि होती है। ऐसा नहीं होता कि बकरी के पेट से कबूतर उत्पन्न हो जाए। ये निर्धारित मात्राएँ केवल पृथ्वी पर स्थित प्रजातियों में ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की प्रत्येक सृष्टि और प्रत्येक घटक में कार्य करती हैं। इन मात्राओं का मुख्य कार्य यह है कि जब इनका आपस में परस्पर परिवर्तन होता है या इनका एक-दूसरे से आकर्षण होता है, तो ये विभिन्न रंगों को ग्रहण कर लेती हैं, और यही रंग वास्तव में किसी प्रजाति के रूपरेखाओं का निर्माण करते हैं।

क़लंदर बाबा उलिया (रह) ने सृजनात्मक सूत्रों की व्याख्या इस प्रकार की है:

"ब्रह्मांड में स्थित सभी भौतिक वस्तुएं अनगिनत रंगों के संयोजन से बनी होती हैं। ये रंग न्स्मा (आ aura) की विशिष्ट गति से उत्पन्न होते हैं। न्स्मा (आ aura) की निश्चित लंबाई की गति से एक रंग बनता है। दूसरी लंबाई की गति से दूसरा रंग बनता है। इस प्रकार न्स्मा (आ aura) की अनगिनत लंबाईयों से अनगिनत रंग उत्पन्न होते रहते हैं। इन रंगों का संख्यात्मक योग प्रत्येक प्रजाति के लिए विशिष्ट और निर्धारित होता है। यदि गुलाब के लिए रंगों का संख्यात्मक योग "अलिफ" निर्धारित है, तो "अलिफ" संख्यात्मक योग से हमेशा गुलाब ही उत्पन्न होगा। कोई अन्य वस्तु उत्पन्न नहीं होगी। यदि मनुष्य की

www.ksars.org

सृष्टि रंगों की 'जेम' संख्या से होती है, तो इस मात्र से दूसरा प्राणी उत्पन्न नहीं हो सकता, केवल मानव जाति के सदस्य ही उत्पन्न हो सकते हैं।

रंगों की दुनिया में जितनी भी वस्तुएं पाई जाती हैं, वे सभी रंगी हुई रोशनियों के संयोजन से बनी होती हैं। इन्हीं रंगों के संकेंद्रण से वह वस्तु उत्पन्न होती है, जिसे सामान्यतः 'भौतिक पदार्थ' कहा जाता है। जैसा कि माना जाता है कि भौतिक पदार्थ कोई ठोस वस्तु नहीं है, यदि उसे विभाजित कर अत्यधिक मात्राओं में फैलाया जाए तो केवल रंगों की पृथक् किरणें बच जाएंगी। यदि बहुत सारे रंगों को लेकर पानी में घोल दिया जाए, तो एक पृथ्वी मिश्रण बन जाएगा, जिसे हम मिट्टी कहते हैं। घास, पौधों और पेड़ों की जड़ें पानी की सहायता से मिट्टी के कणों की टूट-फूट करके उन रंगों में से अपनी प्रजाति के रंग प्राप्त कर लेती हैं। वे सभी रंग पत्तियों और फूलों में प्रकट हो जाते हैं। सभी सृष्टियाँ और अस्तित्व की प्रकट जीवनयात्रा इसी रासायनिक प्रक्रिया पर आधारित है।

रंगों की संख्या ग्यारह हजार है:

सार एक है, दिशाएँ विभिन्न हैं। रचनाएँ इस प्रकार उत्पन्न होती हैं कि दिशा अपनी सामग्री को अपने अंदर सुरक्षित करके इस प्रकार सक्रिय करती है कि पदार्थ विभिन्न और निश्चित मात्राओं में परिवर्तित हो जाता है। जब ये निश्चित मात्राएँ आपस में अवशोषित होती हैं तो एक रंग उत्पन्न होता है, और जब एक रंग दूसरे रंग में अवशोषित होता है तो तीसरा रंग उत्पन्न होता है। परिणामस्वरूप अनगिनत रंग उत्पन्न होते हैं और ये अनगिनत रंग ही परमेश्वर की काइनात हैं।

मानव के भीतर विद्युत प्रवाह:

कुल मिलाकर, क़ाइनात में जो रंग क़लंदर चेतना द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं, उनकी संख्या लगभग ग्यारह हजार पाई जाती है, जबकि विज्ञान द्वारा अब तक लगभग साठ रंगों की पहचान की गई है। सामान्यत: जब रंगों का उल्लेख किया जाता है, तो उनकी संख्या सात मानी जाती है, लेकिन वास्तव में कितने रंग अस्तित्व में हैं, इसका सम्पूर्ण ज्ञान केवल परमेश्वर के पास ही है। हालांकि, क़लंदर चेतना द्वारा यह अवलोकन किया गया है कि क़ाइनात के समस्त प्राणी रंगों के आधार पर संरचित होते हैं। और जब ये रंग प्रवाह (FLOW) की स्थिति में आते हैं, तो उनमें एक विद्युत प्रवाह (ELECTRICITY) उत्पन्न होता है, जो जीवन का मूल कारण होता है। मानव उस स्थिति में मृत्यु का शिकार हो जाता है, जब वह संखिया का सेवन करता है, क्योंकि संखिया के भीतर विद्युत प्रवाह का वोल्टेज (VOLTAGE) मानव के शारीरिक वोल्टेज से अत्यधिक होता है। यह उस स्थिति के समान है जैसे एक सामान्य 60 वॉट के बल्ब में हजारों वॉट का विद्युत प्रवाह डाला जाए, जिससे वह बल्ब जलकर फ्यूज़ हो जाता है।

जब हम करंट को स्पर्श करते हैं, तो शॉक (SHOCK) लगता है। शॉक से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के शरीर में विद्युत प्रवाह में एक अशांति उत्पन्न हो जाती है, जिसे सम्पूर्ण शरीर (BODY) महसूस करता है। यदि व्यक्ति के शरीर में कार्यरत विद्युत का वोल्टेज कमजोर है या अपेक्षित मात्रा से कम है, तो व्यक्ति

www.ksars.org

गिर सकता है और बेहोश भी हो सकता है। इसके विपरीत, यदि व्यक्ति ऐसा तरीका अपनाता है, जिसमें विद्युत प्रवाह सीधे पृथ्वी (Earth) से संबंधित नहीं होता, तो उसे शॉक या झटका नहीं लगता। इस स्थिति से यह सिद्ध होता है कि काइनाती सृष्टि में सकारात्मक और नकारात्मक (POSITIVE & NEGATIVE) सिद्धांत के तहत ऐसी प्रजातियाँ भी हैं, जो विद्युत प्रवाह को अपने भीतर अवशोषित करने की क्षमता रखती हैं। इस समीकरण (EQUATION) के आधार पर यह उजागर होता है कि कुछ रचनात्मक तत्व ऐसे होते हैं जो विद्युत को संचयित करने की क्षमता रखते हैं।

कुलंदर शौर हमारे मार्गदर्शक होते हैं, जो हमें यह समझाते हैं कि हम काइनाती रचनात्मक सूत्रों के आधार पर अपनी अदृश्य (INVISIBLE) क्षमताओं को अपने इरादे और नियंत्रण से सक्रिय कर सकते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने भीतर उत्पन्न होने वाली विद्युत या न्समा (AURA) के बारे में जानता है, तो वह विद्युत प्रवाह को नियंत्रित कर सकता है और अपने शरीर में उच्चतम वोल्टेज का संचय भी कर सकता है, जिससे वह पारलौकिक (SUPERNATURAL) दुनिया में बिना किसी बाहरी साधन के उड़ान भर सकता है। विद्युत प्रवाह के प्रभाव से व्यक्ति में ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है कि वह अपने इरादे और नियंत्रण से आकाश और पृथ्वी के किनारों से बाहर निकल सकता है। उसकी दृष्टि में उसकी पृथ्वी के समान आकाशगंगाओं में अनगिनत पृथ्वियाँ उभरने लगती हैं। जैसे वह अपनी पृथ्वी पर स्थित सृष्टि को देखता है, वैसे ही वह अनगिनत दुनियाओं का भी अवलोकन कर सकता है।

कुलंदर शौर जब जाग्रत होता है, तब वह यह अवलोकन करता है, समझता है और जानता है कि इस ब्रह्मांड के समान अनगिनत अन्य ब्रह्मांड भी विद्यमान हैं, और प्रत्येक ब्रह्मांड का अपना अस्तित्व हमारे ब्रह्मांड के समान है। जैसे हमारी पृथ्वी पर मनुष्य जीवन यापन कर रहे हैं, वैसे ही उन अन्य ब्रह्मांडों में भी मनुष्य रहते हैं। जहां हमारे ब्रह्मांड में उत्पत्ति और प्रजनन का सिलसिला निरंतर जारी है, वहीं अन्य ब्रह्मांडों में भी वैवाहिक संबंध स्थापित होते हैं और संतति उत्पन्न होती है। संक्षेप में, इस ब्रह्मांड में और उससे परे अनगिनत ब्रह्मांडों में जीवन के सभी पहलू—भोजन, आवास, कृषि, वाणिज्य, और जन्म-मृत्यु का क्रम—यथावत् विद्यमान हैं।

समय का अभाव:

किसी व्यक्ति के भीतर उड़ान की क्षमताओं का आश्रय विद्युत के संचय पर निर्भर करता है। जितना अधिक संचय होता है, उसी अनुपात में व्यक्ति समय और स्थान की नकारात्मकता पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ एक मिनट के अंतराल में व्यक्ति ने बिना किसी भौतिक साधन के कई वर्षों का यात्रा तय किया।

घोस्य अली शाह कुलंदर (रह.) फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ की सेवा में उपस्थित हुआ। उसके वस्त्रों से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह शाही पदाधिकारी है। वह हज़रत (रह.) से कहने लगा, "हज़रत, मेरी कहानी इतनी विचित्र और असंभव है कि कोई विश्वास नहीं करता। इस मामले में मेरी बुद्धि भी काम नहीं करती। मुझे हैरानी हो रही है कि क्या कहूं, क्या करूं और कहाँ जाऊं। आप की सेवा में आया हूं। जो आदेश देंगे, उसे पूर्ण करूंगा।"

www.ksars.org

उस व्यक्ति ने अपनी कथा इस प्रकार बयान की:

"मैं लखनऊ में रहता था। व्यवसाय में था और मेरी स्थिति भी अच्छी थी, किंतु समय ने पलटा खाया। आर्थिक संकट आने लगे और अधिक समय बेरोज़गारी में बीतने लगा। मैंने विचार किया कि हाथ पर हाथ रखे रहने से अच्छा है कि बाहर जाकर जीविका की तलाश की जाए। मैंने थोड़ा सा यात्रा भत्ता लिया और उड़ेपुर की ओर चल पड़ा। मार्ग में रीवाड़ी के स्थान पर रुका। उस समय वह स्थान सुनसान था और वहाँ केवल एक सराय थी, जिसमें कुछ क़स्बियाँ निवास करती थीं। मैं सराय में बैठा हुआ चिंतित था कि क्या किया जाए, क्योंकि मेरे पास अब कोई पैसे नहीं थे। एक क़स्बी आई और कहने लगी, 'साहब! खाना तैयार है, क्या लाऊं?' मैंने कहा, 'अभी यात्रा से थक चुका हूं, थोड़ी देर विश्राम करूंगा, फिर भोजन करूंगा।' यह सुनकर वह चली गई। थोड़ी देर बाद वह फिर आई और वही प्रश्न किया। मैंने वही उत्तर दिया और वह चली गई। तीसरी बार जब वह आई, तो मैंने सब कुछ बता दिया कि मेरे पास कुछ भी नहीं बचा। अब घोड़ा और हथियार बेचने की स्थिति आ गई है।"

वह चुपचाप चली गई। कुछ समय बाद वह दस रुपये लेकर आई और कहा, "यह रुपये मैंने चर्खा चला कर अपने अंतिम संस्कार के लिए जमा किए थे। यह मैं आपको क़र्ज़ के रूप में देती हूं। जब भगवान आपको दे, तो इन्हें वापस कर दीजिएगा।" मैंने रुपये ले लिए और मार्ग में खर्च करते हुए उड़ेपुर पहुँचा। वहाँ परमेश्वर की कृपा से मुझे तुरंत शाही नौकरी मिल गई। आर्थिक स्थिति में शानदार सुधार हुआ और कुछ वर्षों में धन-धान्य की प्रचुरता हो गई। इसी बीच घर से पत्र आया कि मेरा पुत्र युवावस्था में प्रवेश कर चुका है और जहाँ उसकी शादी तय की गई है, वहाँ के लोग शादी के लिए दबाव बना रहे हैं। इसलिए शीघ्रता से आकर इस कर्तव्य को पूर्ण करने की आवश्यकता है।

राजा से अनुमति प्राप्त करके मैं अपने गृहनिवास की ओर प्रस्थान कर गया। रास्ते में रीवाड़ी का स्थान आया, और उसी समय पूर्व की घटनाएँ मेरी स्मृति में ताजगी से आ गईं। मैंने सराय में जाकर क़स्बी के बारे में जानकारी प्राप्त की, तो ज्ञात हुआ कि वह व्यक्ति अत्यंत गंभीर रूप से बीमार है और अब कुछ ही समय का मेहमान है। जब मैं क़स्बी के पास पहुँचा, तो उसने अपनी अंतिम साँसें लीं। देखते ही देखते उसकी आत्मा शरीर को छोड़कर परलोक सिधार गई। मैंने उसकी त्वरित क्रिया के तहत अंतिम संस्कार की प्रक्रिया की और स्वयं ही उसे कब्र में उतारा। इस कार्य से मुक्त होकर मैं सराय में लौट आया और विश्राम के लिए लेट गया। आधी रात को अचानक मेरे मन में धन की याद आई, तो मैंने अपनी जेब में रखे पाँच हजार रुपये की हंड़ी को देखा, लेकिन वह गायब थी। मैंने पुनः खोजबीन की, किंतु वह नहीं मिली। मैंने यह अनुमान लगाया कि शायद वह हंड़ी दफन करते समय कब्र में गिर गई होगी। इसी विचार के साथ मैं कब्रिस्तान पहुँच गया और कब्र को खोला। वहाँ उतरते ही एक असाधारण दृश्य का सामना हुआ। वहाँ न तो मृतक था, न ही वह हंड़ी। एक ओर एक दरवाजा दिखाई दिया, जिससे मैंने साहस करके कदम रखा और एक नए संसार में प्रवेश किया। चारों ओर बाग़-बगिचे और हरे-भरे वृक्ष फैले हुए थे। बाग़ के एक कोने में एक भव्य महल खड़ा था। महल में प्रवेश करते ही मेरी नज़र एक सुंदर महिला पर पड़ी, जो शाही वस्त्रों में सुसज्जित थी और उसके चारों ओर सेवक खड़े थे।

www.ksars.org

उस महिला ने मुझसे कहा, "क्या तुम मुझे पहचानते हो? मैं वही हूं जिसने तुम्हें दस रुपये दिए थे। परमेश्वर को मेरा यह कार्य इतना प्रिय आया कि इसी कारण मुझे यह उच्च स्थान और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। और यह तुम्हारी हंड़ी है, जो कब्र में गिर गई थी, लो इसे ले लो और तुरंत वहाँ से चले जाओ।"

मैंने उससे कहा, "मैं कुछ देर यहाँ रुककर इस स्थान का निरीक्षण करना चाहता हूँ।" महिला ने उत्तर दिया, "तुम क़ियामत तक यहाँ की सैर नहीं कर सकते, तुरंत इस स्थान को छोड़ दो, अन्यथा तुम देखोगे कि इस समय में संसार कहाँ से कहाँ पहुँच चुका होगा। महिला की सलाह के अनुसार मैंने वहाँ से प्रस्थान किया। बाहर निकलते ही एक अजीब स्थिति का सामना हुआ। वहाँ अब न तो सराय थी, न ही वे लोग जो कब्र के अंदर थे। चारों ओर शहरी आबादी फैल चुकी थी। कुछ व्यक्तियों से सराय के बारे में पूछा, किंतु सभी ने अपनी अज्ञानता का व्यक्तित्व किया। जब मैंने अपनी कहानी सुनाई, तो सब ने मुझे पागल समझा। अंततः एक व्यक्ति ने मुझे एक वृद्ध साधू के पास ले जाने की पेशकश की। वह वृद्ध व्यक्ति था, शायद वह इस स्थिति के बारे में कुछ बता सके। उसने वृद्ध साधू को सारी घटनाएँ सुनाई। वृद्ध साधू कुछ समय तक सोचते रहे और फिर बोले, "मुझे कुछ याद आता है। मेरे दादा बताया करते थे कि किसी समय इस स्थान पर एक सराय हुआ करती थी। वहाँ एक अमीर ठहरा था और एक रात रहस्यमय तरीके से गायब हो गया, और फिर उसके बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई।" मैंने उत्तर दिया, "मैं वही अमीर हूं, जो सराय से गायब हो गया था।" यह सुनकर वृद्ध साधू और वहां उपस्थित सभी लोग अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए।

वृद्ध साधू ने फिर कहा, "अब तुम्हें क्या करना चाहिए, कहां जाना चाहिए, यह तो तुम स्वयं तय करो, क्योंकि जो कुछ भी तुमने बताया है, वह अत्यधिक विस्मयकारी है।" हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ ने उस व्यक्ति को हिदायत दी, "तुमने जो कुछ बताया वह सत्य है। इस भौतिक संसार और उस आध्यात्मिक संसार के मापदंड भिन्न होते हैं।

शाह साहिब ने उस व्यक्ति को यह निर्देश प्रदान किया कि अब वह *बैतुल्लाह* प्रस्थान करे और अपने शेष जीवन को स्मरण-ए-इलाही में समर्पित कर दे। तत्पश्चात, उन्होंने उसे आवश्यक ज़ाद-ए-राह प्रदान कर विदा किया।

ऑक्सीजन और शारीरिक तंत्र:

वर्तमान वैज्ञानिक और चिकित्सा अनुसंधान ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि मानव शरीर को कुछ समय के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं होती, तो मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को नियंत्रित करने वाले खरबों कोशिकाओं का क्रियाकलाप रुक जाता है। सम्पूर्ण जीवित शरीर का अस्तित्व ऑक्सीजन पर निर्भर करता है, और श्वसन प्रक्रिया या वायु का प्रवाह निरंतर ऑक्सीजन के अवशोषण में संलग्न रहता है।

वायु नथुने (या मुँह) के माध्यम से शरीर में प्रवेश करती है और स्वरयंत्र (Larynx) से गुजरते हुए श्वासनलिका (Trachea) में जाती है। इसके पश्चात, यह एक सूक्ष्म नलिका तंत्र में प्रवेश करती है, जहाँ जैसे-जैसे वायु का दबाव बढ़ता है, इन नलिकाओं का व्यास क्रमशः घटता जाता है। इस प्रक्रिया के माध्यम

www.ksars.org

से वायु फेफड़ों के गहरे क्षेत्रों में पहुँचती है, जहाँ तीन सौ मिलियन से भी अधिक वायु थैलियाँ स्थित होती हैं। इन थैलियों के माध्यम से ऑक्सीजन रक्तवाहिकाओं में प्रवेश कर जाती है।

जब वायु का दबाव और ऑक्सीजन की मात्रा सही होती है, तो यह आसानी से इन वायु थैलियों और सूक्ष्म रक्तवाहिकाओं से होकर शरीर में फैल जाती है। श्वसन प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य शरीर में उचित मात्रा में ऑक्सीजन का प्रवाह बनाए रखना है, ताकि कोशिकाओं में ऊर्जा उत्पन्न करने की प्रक्रिया निर्बाध रूप से चलती रहे, और साथ ही कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) का उत्सर्जन होता रहे।

जब व्यक्ति विश्राम की स्थिति में होता है, तो वह एक मिनट में औसतन दस से सोलह बार श्वास ग्रहण करता है, और प्रत्येक श्वास में लगभग एक प्वाइंट (point) वायु शरीर में प्रवेश करती है। शारीरिक परिश्रम या ऑक्सीजन की बढ़ी हुई आवश्यकता की स्थिति में, श्वसन की गति में स्वतः वृद्धि हो जाती है। सामान्यत: श्वास की गति और उसकी गहराई को मस्तिष्क स्वतः नियंत्रित करता है, ताकि शरीर की आवश्यकताओं के अनुसार श्वसन प्रक्रिया में समायोजन हो सके।

दो सौ वर्षों की निद्रा

एक बहुरूपिया था, जो निरंतर नए रूप धारण कर बादशाह की सेवा में उपस्थित होता, ताकि उसे भ्रमित कर घोड़ा और जोड़ा इनाम में प्राप्त कर सके। परंतु बादशाह उसकी युक्तियों से प्रभावित नहीं होता था।तब बहुरूपिया एक योगी के पास पहुँचा और उससे *दम-साधना* (श्वास नियंत्रण का अभ्यास) सीखा। इसके उपरांत, वह योगी के वेश में अपने नगर के बाहरी क्षेत्र में निवास करने लगा। उसने एक छोटा गुम्बद निर्मित किया, कुछ शिष्यों को अपने साथ जोड़ा, और दम साधने की अवस्था में गुम्बद के भीतर बैठ गया। उसने गुम्बद का द्वार बंद करा दिया, यह सोचकर कि जब बादशाह को यह ज्ञात होगा कि एक योगी इतने समय से साधना कर रहा है, तो वह स्वयं गुम्बद खुलवाने आएगा। उस समय उसके शिष्य *दम-साधना* के नियमों के अनुसार उसे पुनर्जीवित करेंगे और वह इनाम स्वरूप घोड़ा और जोड़ा प्राप्त करेगा। परमेश्वर की शक्ति से चंद दिनों में व्यापक परिवर्तन आ गया। न तो सम्राट बचा और न ही उसका राज्य, शहर भी विनाश के शिकार हो गए। शिष्य भी समाप्त हो गए, और गुंबद की बंद स्थिति जस की तस बनी रही। दो सौ वर्षों के पश्चात् उस शहर का पुनर्निर्माण हुआ। किसी व्यक्ति ने यह जानने के लिए कि गुंबद के भीतर क्या छिपा है, उसे खोला। भीतर एक व्यक्ति पूर्ण शारीरिक रूप में, बिल्कुल स्वस्थ, ध्यान की स्थिति में बैठा हुआ था। जैसे ही लोग इकट्ठा हुए, उनमें से एक योगी ने उस ध्यानमग्न व्यक्ति को पहचाना। उसने 'हबस-ए-दम' के सिद्धांतों के आधार पर क्रिया की, जिससे उस व्यक्ति की हृदय गति पुनः सक्रिय हुई और उसकी चेतना बहाल हो गई। जैसे ही उसने होश संभाला, वह बोला, "मेरा घोड़ा और जोड़ा लाओ।" यह दृश्य देखकर लोग चकित हो गए और एक-दूसरे को आश्चर्यचकित दृष्टि से

www.ksars.org

देखने लगे। वे सोचने लगे, "यह कौन सा रहस्य है? क्या यह व्यक्ति कोई पागल है, या इसे भ्रम या मानसिक विकार हो गया है?" उस भ्रमित व्यक्ति ने कहा, "मैंने 'हबस-ए-दम' की यह क्रिया किसी विशेष उद्देश्य से, एक सम्राट के काल में, केवल अपने घोड़े और जोड़े को प्राप्त करने के लिए की थी।"

www.ksars.org

श्वास के दो पहलू।:

सृजनात्मक सिद्धांतों का ज्ञान रखने वाले यह जानते हैं कि ब्रह्मांड और ब्रह्मांड के भीतर सभी अभिव्यक्तियों की रचना द्वैत पर आधारित है। इस तथ्य के आलोक में सांस के दो पहलू निश्चित किए गए हैं। एक पहलू यह है कि व्यक्ति भीतर सांस लेता है और दूसरा पहलू यह है कि सांस बाहर निकाली जाती है। गहराई से भीतर सांस लेना आरोही गति है और सांस का बाहर निकलना अवरोही गति है। आरोहण उस गति को कहा जाता है जिसमें सृष्टि का संबंध सीधे अपने स्रष्टा के साथ स्थापित होता है, और अवरोहण उस गति को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति अदृश्य से दूर हो जाता है और समय और स्थान की पकड़ उसके ऊपर हावी हो जाती है।

जब कुछ भी अस्तित्व में नहीं था, केवल परमेश्वर था। परमेश्वर ने चाहा और संपूर्ण ब्रह्मांड रच दिया गया। यह सिद्धांत बना कि सृष्टि की बुनियाद परमेश्वर की इच्छा है। परमेश्वर की इच्छा परमेश्वर का चेतन मन है, अर्थात ब्रह्मांड और हमारा मूल अस्तित्व परमेश्वर के चेतन मन में है। यह नियम है कि किसी भी वस्तु का अपने मूल से संबंध विच्छिन्न न हो तो वह वस्तु अस्थिर नहीं होती। यह संबंध प्रकट रूपों में आरोही गति से स्थापित होता है और आरोही गति भीतर सांस लेने की प्रक्रिया है। इसके विपरीत हमारा स्थूल भौतिक अस्तित्व अवरोही गति पर आधारित होता है।

ऊर्जा और आत्मा :

आत्मा का संबंध ब्रह्मांड के प्रत्येक रूप से जुड़ा हुआ है, जो प्रत्येक क्षण और हर पल एक निरंतर चक्रीय गति में हैं। ब्रह्मांड के प्रत्येक रूप के बीच आपसी संबंध है, जो विचारों के आदान-प्रदान पर आधारित है। विज्ञान के अनुसार, इस आपसी संबंध और आदान-प्रदान को ऊर्जा कहा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, ब्रह्मांड की कोई भी वस्तु, चाहे वह दृष्टिगोचर हो या अदृश्य, पूर्ण रूप से समाप्त नहीं होती। भौतिक वस्तुएं विभिन्न अवस्थाओं में परिवर्तित होकर ऊर्जा में बदल जाती हैं, और यह ऊर्जा विभिन्न रूपों में प्रकट होती रहती है। किसी भी वस्तु का पूर्ण विनाश संभव नहीं होता। आत्मिक दृष्टिकोण में, इस ऊर्जा को आत्मा का नाम दिया गया है। आत्मा को जो ज्ञान प्रदान किया गया है, वही विचारों, धारणाओं और भावनाओं के रूप में व्यक्त होता है। ये विचार और धारणाएँ, लहरों और किरणों के रूप में निरंतर गति करती रहती हैं। यदि हमारा मस्तिष्क इन लहरों को समझने और उन्हें नियंत्रित करने में सक्षम हो जाए, तो हम ब्रह्मांड के विभिन्न आयामों में विचारों के प्रवाह को समझ सकते हैं। परंतु, जब तक हम ब्रह्मांड के गहरे रहस्यों से परिचित नहीं होते, तब तक हम उसके केंद्रीय सत्व तक नहीं पहुँच सकते। ब्रह्मांड और आकाशगंगा में प्रवेश करने के लिए यह आवश्यक है कि हम श्वास के उस प्रवाह पर नियंत्रण प्राप्त करें, जो आरोही गति का प्रतिनिधित्व करता है।

गहरी श्वास लेना अवचेतन की ओर यात्रा है, जबकि श्वास का बाहर आना चेतन की ओर। जब चेतन जीवन में गतिशील होता है, तो अवचेतन जीवन पर्दे के पीछे चला जाता है, और अवचेतन में चेतन क्रियाएँ दब जाती हैं। इस सिद्धांत को समझने के लिए दोनों क्रियाओं—चेतन और अवचेतन—का ज्ञान प्राप्त करना

www.ksars.org

आवश्यक है। मस्तिष्क की रहस्यमयी शक्तियाँ तभी कार्यरत होती हैं, जब मस्तिष्क श्वास की आरोही गति को समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होता है। इस प्रक्रिया के द्वारा हमारे भीतर केंद्रितता और ध्यान की क्षमता सक्रिय हो जाती है।

याद रखें, हमारे अंदर स्थापित एंटीना तभी कार्य करता है जब मस्तिष्क में ध्यान और केंद्रितता की शक्तियाँ प्रचुर मात्रा में मौजूद होती हैं। यह शक्तियाँ तब सक्रिय होती हैं, जब हम अपनी पूरी ध्यान, एकाग्रता और क्षमताओं के साथ आरोही गति में लीन हो जाते हैं।

www.ksars.org

जीवन में श्वास का प्रभाव

आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिए एक सशक्त और सक्षम मस्तिष्क की आवश्यकता होती है। भावना में लचीलापन लाने, मस्तिष्क को सक्रिय रखने और कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए श्वास की साधनाएँ अत्यधिक प्रभावी होती हैं। जब एक क़लंदर चेतना का साधक श्वास की क्रियाओं पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, तो मस्तिष्क में कोशिकाओं और तंतुओं की गति और कार्य में वृद्धि हो जाती है। आंतरिक (INNER) श्वास को रोकने से मस्तिष्क की कोशिकाएँ चार्ज होती हैं, जिससे व्यक्ति की गुप्त क्षमताओं को जागृत करने के अवसर उत्पन्न होते हैं, जो उसके विकास और प्रसार में सहायक होते हैं।

आध्यात्मिक गुरुओं ने शारीरिक और मानसिक लाभ के लिए वैज्ञानिक नियमों और विधियों का निर्माण किया है। यदि इन विधियों का अनुसरण किया जाए, तो व्यक्ति को आध्यात्मिक और शारीरिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। यह तथ्य स्पष्ट है कि जीवन की संरचना श्वास पर आधारित है। मानव जीवन में विचार, धारणाएँ, अनुभव और संवेदनाएँ तब तक बनी रहती हैं, जब तक श्वास का प्रवाह जारी रहता है। श्वास के माध्यम से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा और स्वास्थ्य के संकेत प्रवाहित होते हैं। साथ ही, श्वास के द्वारा व्यक्ति वातावरण में उपस्थित अशुद्धियों, जैसे धुआं, धूल, और कचरे से प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति शुद्ध और ताजगी से भरी हवा में बैठकर श्वास लेने के दौरान यह मानसिक धारा बनाता है कि वह शुद्धता और ऊर्जा के स्रोत से अपने शरीर में शक्ति को अवशोषित कर रहा है, तो परिणामस्वरूप यह निश्चित रूप से होता है। श्वास की विशेष साधनाएँ रक्त प्रवाह को सुधारती हैं, मस्तिष्क की मानसिक क्षमताओं को उजागर करती हैं, और उत्तेजक भावनाओं को शांत करती हैं। साथ ही, यह शरीर के भीतर रक्त के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में सहायक होती हैं।

यदि श्वास की क्रियाएँ समयानुसार और नियमित रूप से की जाएं, तो यह व्यक्ति की अधिकांश शारीरिक और मानसिक समस्याओं को हल कर सकती हैं। जैसे कि भूलने की बीमारी, पाचन तंत्र के विकार, अमाशय और आंतों के अल्सर, कब्ज, पथरी, जुकाम, सिरदर्द, मिर्गी, मानसिक भ्रम और दृष्टि संबंधी समस्याएँ। श्वास की क्रियाएँ रक्त परिसंचरण को प्रभावी बनाती हैं, मानसिक जागरूकता और भावनात्मक स्थिरता को बढ़ावा देती हैं। इसके अतिरिक्त, यह शरीर के अंगों को शुद्ध करने में मदद करती हैं। जिन व्यक्तियों ने श्वास की क्रियाओं को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित किया है, वे मानसिक और शारीरिक रूप से युवा और सक्रिय बने रहते हैं। वृद्धावस्था में भी उनका शरीर और मन उतनी ही ताजगी से भरा रहता है। श्वास की क्रियाएँ व्यक्ति के जीवनकाल को प्रभावित करती हैं और उसकी दीर्घायु में योगदान करती हैं।

वास्तव में, श्वास की साधनाओं को यदि सही तरीके से और समय पर किया जाए, तो व्यक्ति को मानसिक रूप से परिपूर्ण और शारीरिक रूप से शक्तिशाली बनाने में यह अत्यंत सहायक होती है। यह न केवल शरीर के अंदर की गंदगी को बाहर करती हैं, बल्कि मानसिक विकारों और शारीरिक तकलीफों को भी दूर करती हैं।

www.ksars.org

विकास से तैयार किए हुए खाने

एक दिन जब मैंने सूरज के उगने से पहले, पूर्व की दिशा में मुँह करके सांस की साधना की, तो मेरे मस्तिष्क में एक दरवाजा खुला और उस दरवाजे के भीतर यह विचार आया कि वातावरण में वह विकास और तत्व, जिनसे चने उत्पन्न होते हैं, मेरे भीतर प्रवेश कर रहे हैं। मैंने अपने शरीर के आदर्श रूप (AURA) से देखा और मेरे सामने बहुत उत्तम प्रकार के चने रखे हुए थे, जिन्हें मेरा आदर्श रूप खा रहा था। अगले दिन, मेरे मन में सेब खाने की इच्छा जागी। फिर मस्तिष्क में एक और दरवाजा खुला और वातावरण में फैली हुई वे विकास की शक्तियाँ, जो सेब को निर्मित करती हैं, एकत्रित होकर सेब का रूप ले चुकीं और मैंने उसे खा लिया। यह प्रक्रिया सतत रूप से सत्रह दिनों तक चलती रही। इन सत्रह दिनों में मेरा मस्तिष्क किसी भी खाद्य या पेय की ओर आकर्षित नहीं हुआ। जिस वस्तु की मेरे शरीर को आवश्यकता होती या जिसे मेरी ऊर्जा के संचय की आवश्यकता होती, मैंने उसे सांस के माध्यम से अपने भीतर अवशोषित कर लिया। इस तरीके से, वातावरण में फैली इन विकास की शक्तियों के भोजन और पेय के इस कार्य ने मेरे भीतर संतुलित और जागृत चेतना को इस प्रकार सशक्त बना दिया कि पत्थर और ईंट की दीवारें भी कागज की तरह पतली दिखाई देतीं। दूर-दराज की आवाजें स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगीं। जो व्यक्ति सामने आता, उसके विचार मेरे मस्तिष्क की स्क्रीन पर प्रक्षिप्त हो जाते थे। इस अवधि में कई अजीब अनुभव हुए। जो व्यक्ति बाह्य रूप से संयमी और तपस्वी था, उसके विचारों की घनत्व से मस्तिष्क मलीन हो जाता था, जबकि जो व्यक्ति रूप-रंग से संयमी और धार्मिक नहीं था, उसके विचार हलके, शुद्ध और सुगंधित महसूस होते थे। यह एक अद्भुत और रहस्यमय दुनिया थी जो मेरे सामने प्रकट हो गई थी।

विकास के गोदाम

सांस साधना के माध्यम से चेतना और शारीरिक प्रणाली में शक्ति का संचार होता है, ठीक उसी प्रकार आरोही सांस के माध्यम से मानव की आत्मा में ऐसे दिव्य ऊर्जा के भंडार संचित होते हैं, जो व्यक्ति को मात्र कल्पना (FICTION) और संदेहात्मक इंद्रियों से बाहर निकालकर वास्तविक और अदृश्य संसार (ग़ैब की दुनिया) में प्रवेश कराते हैं। सांस साधना के द्वारा व्यक्ति के भीतर इन छह विशिष्ट भंडारों का संचित होना प्रारंभ होता है, जो ऊर्जा, प्रकाश और शक्ति से परिपूर्ण होते हैं। ये भंडार आत्मा के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित होते हैं, और इनमें एकत्रित प्रकाश के रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं।

प्रथम भंडार में पीले रंग का प्रकाश, दूसरे में लाल रंग, तीसरे में सफेद रंग, चौथे में हरा रंग, पांचवे में नीला रंग, और छठे में बैंगनी रंग का प्रकाश संचित होता है। इन रंगों के संयोजन से अनेक अन्य रंग उत्पन्न होते हैं। ये रंग वास्तव में जीवन में कार्यात्मक भावनाओं के प्रतीक होते हैं, जो व्यक्तित्व की आंतरिक संरचना और उसकी सक्रियता को व्यक्त करते हैं।

रंगीन किरणों

जब दृष्टि की सीमा से पृथ्वी की ओर निगाह डालते हैं, तो हमें आकाश में नीले रंग की अनगिनत रंगीन रोशनियाँ दिखाई देती हैं। यह दृश्य, जिसमें रंगों की एक भिन्नता उत्पन्न होती है, रोशनी, ऑक्सीजन

www.ksars.org

गैस, नाइट्रोजन गैस, और कुछ अन्य गेसों के मिश्रण से उत्पन्न होता है। इन गैसों के साथ-साथ वातावरण में उपस्थित कुछ छायाएँ भी इस रंग-भेद में योगदान देती हैं। इन गैसों और तत्वों का संयोजन आकाशीय रंग को प्रभावित करता है, जिससे फिजिकल वातावरण का एक विशिष्ट रंग अनुभव होता है।

यह स्वीकार करना आवश्यक है कि आकाश में रंगों का परिलक्षित होना केवल दृश्य संवेग नहीं है, बल्कि यह एक विस्तृत कणिकीय प्रक्रिया का परिणाम है। यह प्रक्रिया आकाशीय कणों के आपसी परस्पर क्रिया से उत्पन्न होती है, जहाँ प्रत्येक कण अपने विशेष गुणधर्म के आधार पर रंगों का प्रसार करता है। इस संदर्भ में, हमारे दृष्टिकोण में रोशनी और रंगों का परिप्रेक्ष्य समझने के लिए भौतिक विज्ञान के सिद्धांत आवश्यक होते हैं, जो प्राकृतिक कणों, जैसे कि फोटॉन, के गुणधर्मों पर आधारित हैं।

इस प्रक्रिया में, सबसे महत्वपूर्ण कण "फोटॉन" है, जो सूर्य से पृथ्वी तक पहुँचने वाली किरणों का आधार है। एक फोटॉन के पास स्थान नहीं होता, इसलिए वह न केवल अन्य फोटॉनों से टकराता नहीं है, बल्कि वह प्रत्येक कण के साथ स्वतंत्र रूप से व्याप्त होता है। इसका मतलब यह है कि इन कणों की यात्रा में एक प्रकार की भौतिक निर्बाधता रहती है, जो इनकी गति को निरंतर बनाए रखती है।

फोटॉनों की यह प्रक्रिया तब और अधिक जटिल हो जाती है जब ये वायुमंडल के अन्य तत्वों से टकराती हैं। जब फोटॉन का किसी तत्व से टकराव होता है, तो वह स्थान ग्रहण करता है और उससे उत्पन्न होने वाला रंग भी उस तत्व की प्रकृति के अनुरूप होता है। यह रंगों का विविधीकरण वायुमंडल में एक प्रकार की उपस्थिति उत्पन्न करता है, जो जीवों की मानसिक और शारीरिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव डालता है।

यहाँ तक कि यह विचार करना भी महत्वपूर्ण है कि जब हम "रंगों के वितरण" की बात करते हैं, तो यह केवल फोटॉनों के आपसी संवाद का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उन धारा-मण्डलों का परिणाम है, जो स्वयं फोटॉनों से बनते हैं। जब फोटॉनों का इन धारा-मण्डलों से टकराव होता है, तो स्थान, रंग और अन्य दृश्य तत्व उत्पन्न होते हैं, जो ब्रह्मांडीय दृश्यता को प्रभावित करते हैं। यह संपूर्ण प्रक्रिया एक सुसंगत भौतिक प्रणाली के रूप में कार्य करती है, जो आकाशीय रंगों की विविधता को संभव बनाती है।

किरणों में वलय:

यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि किरणों में ये वलय कैसे निर्मित होते हैं। ज्ञात है कि हमारे आकाशगंगाई तंत्र में अनेक तारे, अर्थात् सूर्य, विभिन्न स्थानों से प्रकाश का संचार करते हैं। इन तारों के मध्यवर्ती दूरी कम से कम पाँच प्रकाशवर्ष होती है। जब इन तारों की रोशनियाँ आपस में टकराती हैं, तो यह टक्कर प्रकाश के वलय निर्माण का कारण बनती है, जैसा कि हमारे पृथ्वी या अन्य ग्रहों में होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि सूर्य या अन्य तारे, जिनकी संख्या हमारे आकाशगंगाई तंत्र में दो खरब के आसपास मानी जाती है, उनके द्वारा उत्सर्जित किरणों का मिलाजुला प्रभाव संख्याओं के रूप में होता है। जब इन रोशनियों का आपसी टकराव होता है, तब एक वलय का निर्माण होता है, जिसे ग्रह कहा जाता है।

www.ksars.org

इलेक्ट्रिक करंट कैमरा:

मस्तिष्क में खरबों कक्ष होते हैं जिनमें से विद्युत धारा निरंतर प्रवाहित होती रहती है। इस विद्युत धारा के माध्यम से विचार, चेतना, अवचेतना और सूक्ष्म चेतना से गुजरते रहते हैं। मस्तिष्क का एक कक्ष ऐसा है जिसमें विद्युत धारा निरंतर चित्रण करती रहती है और इन्हें वितरित करती रहती है। और यह चित्रण अत्यंत अंधकारमय या अत्यधिक उज्जवल हो सकता है।

एक अन्य कक्ष है जिसमें कुछ महत्वपूर्ण बातें संग्रहीत होती हैं, लेकिन वे इतनी महत्वपूर्ण नहीं होतीं कि वर्षों बाद भी याद आ जाएं। एक तीसरा कक्ष उन बातों को संजो लेता है जो अधिक महत्वपूर्ण होती हैं, और समय के साथ कभी-कभी याद आ जाती हैं। एक चौथा कक्ष सामान्य क्रियाएँ करने का है, जिसमें व्यक्ति क्रियाएँ करता है, किंतु उसमें कोई विशेष इच्छाशक्ति नहीं होती। पांचवां कक्ष वह है जिसमें बीती हुई घटनाएँ अचानक याद आ जाती हैं, जिनका जीवन के तंतु से कोई संबंध नहीं होता। एक छठा कक्ष है, जहां कोई विचार अचानक आता है, और यदि वह आता है, तो त्वरित रूप से उसके साथ क्रिया होती है। इसका उदाहरण यह है कि किसी पक्षी का विचार आया, और जैसे ही विचार आया, पक्षी सामने उपस्थित हो गया। सातवाँ कक्ष है जिसे सामान्यत: स्मृति (MEMORY) कहा जाता है।

मस्तिष्क में मिश्रित आकाशीय रंगों के आने और आपस में जुड़ने से विचार, मानसिक अवस्थाएँ, और अनुभूतियाँ निरंतर बदलती रहती हैं। धीरे-धीरे व्यक्ति इन विचारों को समायोजित करना सीखता है। जिन विचारों को वह पूरी तरह से हटा देता है, वे नष्ट हो जाते हैं, और जो वह आत्मसात करता है, वे क्रिया में परिणत हो जाते हैं। इन रंगों की छायाएँ हल्की, भारी, और विविध प्रकार की होती हैं, जो अपना प्रभाव उत्पन्न करती हैं और शीघ्र ही अपनी जगह छोड़ देती हैं ताकि अन्य छायाएँ उनकी जगह ले सकें। कई छायाएँ, जिन्होंने अपनी जगह छोड़ी है, अंततः अनुभूतियाँ बन जाती हैं, क्योंकि वे गहरी होती हैं।

तंत्रिका तंत्र

हमारी सभी आंतरिक और बाहरी गतियाँ तंत्रिका तंत्र द्वारा नियंत्रित की जाती हैं और उनमें सामंजस्य उत्पन्न किया जाता है। तंत्रिका तंत्र में मस्तिष्क और हड्डी के मस्तिष्क के अतिरिक्त हमारे शरीर में तंतुओं का एक जाल बिछा होता है। तंतुओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इनकी सहायता से शरीर के विभिन्न संदेश मस्तिष्क और हड्डी के मस्तिष्क तक पहुँचते हैं, और हम यह जान पाते हैं कि हम क्या देख रहे हैं, क्या सुन रहे हैं और क्या महसूस कर रहे हैं।

तंत्रिका तंत्र का केंद्रीय कार्य मस्तिष्क द्वारा किया जाता है, जो खोपड़ी के भीतर स्थित है। मस्तिष्क के तीन प्रमुख भाग होते हैं। मस्तिष्क का सबसे बड़ा भाग लगभग पाँच सेंटीमीटर गहरे केंद्रीय खांचे द्वारा दो हिस्सों में विभाजित होता है। इन हिस्सों को दायाँ मस्तिष्क और बायाँ मस्तिष्क कहा जाता है। दायाँ मस्तिष्क शरीर के बाएँ हिस्से को नियंत्रित करता है और बायाँ मस्तिष्क शरीर के दाएँ हिस्से को नियंत्रित करता है।

www.ksars.org

मस्तिष्क की ऊपरी सतह पर एक हल्के धूसर रंग की पदार्थ की परत होती है और इसके नीचे एक सफेद रंग का घना भाग होता है। सफेद मस्तिष्क सोच, विचार और चिंतन को नियंत्रित करता है। हल्के धूसर रंग का मस्तिष्क वह स्थान है जहाँ शरीर से संदेश आते हैं और यहीं से विभिन्न संदेश शरीर को पुनः भेजे जाते हैं। यह शरीर के अंगों को नियंत्रित करता है। इसके अलावा, आँख, कान और नाक की इंद्रियों के केंद्र भी इस मस्तिष्क में स्थित होते हैं।

मस्तिष्क का पिछला भाग (मेडुला ऑब्लोंगाटा) हृदय की धड़कन को नियंत्रित करता है। योग की प्राणायाम क्रियाओं के माध्यम से यह नियंत्रित किया जा सकता है कि मेडुला में ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा संचित कर दी जाए, जिससे व्यक्ति लंबे समय तक बिना सांस के जीवित रह सके। वे कई वर्षों तक मृत रहने के बाद पुनः जीवित हो सकते हैं। हड्डी का मस्तिष्क तंत्रिका ऊतक का समूह होता है, जो रीढ़ की हड्डी के मार्ग में स्थित होता है। यह मस्तिष्क और शरीर के बीच संपर्क बनाए रखता है और शरीर को सभी संदेश हड्डी के मस्तिष्क के माध्यम से वितरित करता है।

हृदय की धड़कन और संकुचन की प्रक्रिया विद्युत प्रवाह पर आधारित होती है। विद्युत लहरें हृदय को फैलाती और संकुचित करती हैं, ठीक उसी तरह जैसे किसी मशीन को चलाने के लिए विद्युत प्रवाह कार्य करता है।

इस प्रकार, हमारा संपूर्ण शारीरिक तंत्र विद्युत प्रवाह या प्रकाश पर आधारित होता है, और यह समग्र तंत्र प्रकाश से संचालित होता रहता है।

मुराक्बा:

मुराक्बा का परिभाषा करते हुए कलंदर बाबा औलिया (रह.) ने बताया कि *मुराक्बा* एक मानसिक एवं आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें मानव संसारिक परिस्थितियों, भौतिक घटनाओं, इच्छाओं और समय-स्थान की सीमाओं से मुक्त होकर एक गहरी ध्यानावस्था में स्थित होता है। ग़ैब (अदृश्य) की दुनिया में प्रवेश, तब तक संभव नहीं है जब तक व्यक्ति समय और स्थान की भौतिक जड़ताओं से मुक्त न हो, अर्थात जब तक वह शारीरिक रूप से मानसिक संयम और एकाग्रता में स्थापित न हो, वह ग़ैब की वास्तविकता को अनुभव नहीं कर सकता। शारीरिक आवश्यकताओं से मुक्ति का तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति मृत्यु के समक्ष हो, बल्कि इसका अर्थ यह है कि वह शारीरिक आवश्यकताओं को गौण कर देता है और उस स्रोत पर ध्यान केन्द्रित करता है, जहां से ये आवश्यकताएँ रूपांतरित होकर ऊर्जा या प्रकाश के रूप में व्यक्त होती हैं।

मुराक्बा:

मुराक्बा का सरलतम रूप यह है कि व्यक्ति एक शांत और उपयुक्त तापमान वाले स्थान पर, जहाँ अत्यधिक ठंडक या गर्मी न हो, शारीरिक आराम के साथ बैठ जाए। वह अपने शरीर के सभी अंगों और तंत्रिका तंतुओं को ढीला छोड़कर एक ऐसी मानसिक अवस्था का सृजन करे, जिसमें

www.ksars.org

शरीर की उपस्थिति से मन का ध्यान पूरी तरह हट जाए। गहरी साँसें ली जाएं, क्योंकि गहरी श्वास लेने से श्वास की गति में संतुलन स्थापित होता है। आँखें बंद कर ली जाएं और बंद आँखों से अपनी अंतरात्मा में झांकने का प्रयास किया जाए। विचार और क्रियाएँ पूर्णतः पवित्र और शुद्ध होनी चाहिए। मानसिक शुद्धता का आशय यह है कि किसी अन्य व्यक्ति के प्रति द्वेष, घृणा या ईर्ष्या न हो। यदि किसी से कोई उपेक्षा या अन्याय हुआ हो, तो प्रतिशोध की भावना न रखें और उसे माफ कर दिया जाए। जीवन की आवश्यकताओं और भौतिक संसाधनों के लिए अंगों का कार्य संपूर्णता से किया जाए, परंतु अंततः परिणाम को परमेश्वर के अधीन छोड़ा जाए। यदि यह आभास हो कि किसी से कष्ट हुआ है या कोई गलती हुई है, तो बिना भेदभाव के, चाहे वह व्यक्ति कमजोर, गरीब, छोटा या बड़ा हो, उससे क्षमा मांगी जाए। व्यक्ति जिसे अपने लिए पसंद करता है, वही दूसरों के लिए भी पसंद करे। मानसिकता में भौतिक संपत्ति और सांसारिक आवश्यकताओं का महत्त्व न हो। परमेश्वर द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद और संसाधनों का उपयोग प्रसन्नता और संतोष के साथ किया जाए, परंतु उन्हें जीवन का अंतिम उद्देश्य न माना जाए। संभव हो तो, समर्पण, बल, वाणी और धन से परमेश्वर की सृष्टि की सेवा की जाए।

जिस व्यक्ति के भीतर पवित्र विचार और गुण होते हैं, मुराक्बे की प्रक्रिया से उसका **चक्र** शीघ्र प्रकाशित हो जाता है। चक्र के प्रकाशित होने से चेतना में आंतरिक ज्योति का संचार होता है और चेतना का दर्पण शुद्ध और पारदर्शी हो जाता है।

मुराक्बा एक ऐसी साधना है, जिसमें आध्यात्मिक गुरु या मर्शिद (रूहानी मार्गदर्शक) के निर्देशों का पालन अनिवार्य होता है। यदि **शिष्य** के भीतर कोई विरोधाभास या असहमति है और वह गुरु के आदेशों का पालन नहीं करता, तो मुराक्बे की प्रक्रिया अधूरी रहती है। मुराक्बे में सफलता के लिए आत्मसमर्पण और पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है।

मुराक्बा के माध्यम से व्यक्ति बाह्य संसार की तरह ही आंतरिक या ग़ैब (अदृश्य) की दुनिया से भी परिचित होता है। जब **शिष्य** ग़ैब की दुनिया में प्रवेश करता है, तो जैसे वह नासूत (भौतिक जगत) में जीवन के सभी पहलुओं से अवगत होता है और अपने कर्तव्यों का पालन करता है, वैसे ही वह ग़ैब की दुनिया में भी आकाशगंगा और अनगिनत आकाशीय मंडलियों को देखता है। वह फरिश्तों से परिचित होता है और उनसे संवाद स्थापित करता है। उसके समक्ष वह सभी अदृश्य सत्य प्रकट हो जाते हैं, जिनके आधार पर यह ब्रह्मांड रचनात्मक रूप से अस्तित्व में आया है। वह यह भी देखता है कि ब्रह्मांड की संरचना में कौन-कौन सी ऊर्जा और रोशनियाँ कार्यरत हैं। इन रोशनियों का स्रोत क्या है, ये कैसे उत्पन्न हो रही हैं, और इनकी मात्रा में परिवर्तन से ब्रह्मांड की संरचना पर कैसे प्रभाव पड़ रहा है। **शिष्य** की आँखें यह भी देखती हैं कि इन रोशनियों का मूल स्रोत "अनवार" (उज्ज्वल प्रकाश) है। इसके पश्चात, वह उस दिव्य जलाल की उद्घाटन का अनुभव करता है, जो इन रोशनियों को नियंत्रित करता है।

संस्थापक क़लंदर चेतनाकलंदर बाबा औलिया (रह.) ने मुराक्बा का एक संगठित और संरचित प्रणाली विकसित की है। जिस प्रकार किसी भी विद्याओं को आत्मसात करने हेतु शिष्य गुरु के मार्गदर्शन

www.ksars.org

में "अलिफ, बे, पे, ते" का अभ्यास करता है, वाक्य निर्माण में दक्षता प्राप्त करता है और तत्पश्चात ग्रंथों का अध्ययन उसकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन जाता है, उसी प्रकार पारलौकिक ज्ञान की प्राप्ति हेतु भी आध्यात्मिक गुरु का मार्गदर्शन अत्यंत आवश्यक है।

www.ksars.org